बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)

जायसीतर सूफी काव्य में प्रयुक्त सांस्कृतिक शब्दावली का वर्णनात्मक अनुशीलन
(चन्दायन, मृगावती, मधुमालती और चित्रावली के विशेष सन्दर्भ में)

हिन्दी साहित्य में वाचस्पति उपाधि पी-एच.डी. हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध
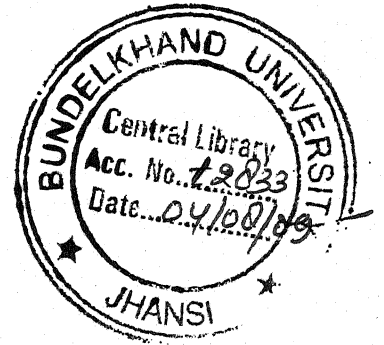
शोध निर्देशक :

डॉ. विनोद कुमार खरे
रीडर हिन्दी विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय
झाँसी

अनुसंधित्सु :

कु० अन्जुलता श्रीवास्तव

शोध केन्द्र : बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय,
झाँसी

जायसीतर सूफी काव्य में प्रयुक्त सांस्कृतिक शब्दावली का वर्णनात्मक अनुशीलन

(चन्दायन, मृगावती, मधुमालती और चित्रावली के विशेष सन्दर्भ में)

हिन्दी साहित्य विषय में वाचस्पति उपाधि पी–एच0डी0
हेतु प्रस्तुत
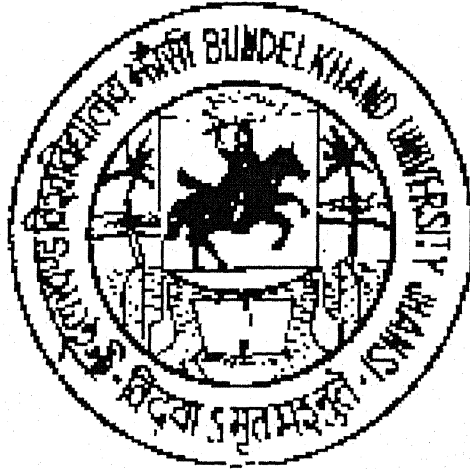
शोध निर्देशक

(डॉ0 विनोद कुमार खरे)
रीडर, हिन्दी विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय
झाँसी

शोधार्थिनी
Anju Lata Srivastava
कु0 अन्जुलता श्रीवास्तव

शोध केन्द्र–बुन्देलखण्ड महाविद्यालय झाँसी

अनुक्रमणिका

समर्पण

संसार सागर से सदा के लिए

विदा हो गये

परम आदरणीय (बाबा)

स्व0 श्री अशर्फी लाल श्रीवास्तव

एवं

परम आदरणीया (दादी)

स्व0 श्री मती राम कुँवर देवी श्रीवास्तव के

अदृश्य वपु को सश्रद्धा सादर सस्नेह समर्पित।

कु0 अन्जुलता श्रीवास्तव

प्राक्कथन

काव्य या साहित्य किसी देश–काल की संस्कृति का अंग और उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम होता है। भाषा और काव्य का विकास सामाजिकोत्थान या जातीय प्रगति का द्योतक होता है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्य के दो रूप प्रचलित हैं प्रथम गद्य और द्वितीय पद्य। कतिपय विद्वान गद्य, पद्य मिश्रित कृति को भी साहित्य का एक तीसरा रूप मानते हैं। और उसे 'चम्पू' के अभिधानं से स्वीकार करते है। वस्तुत' विधा कोई हो इसमें कोई सन्देह नहीं कि लिखित गद्यात्मक अथवा पद्यात्मक सामग्री 'साहित्य' के नाम से अभिहित की जाती है।

कवि अथवा साहित्यकार समाज में रहता है। जैसा समाज और तत्कालीन परिस्थितियाँ हुआ करती हैं उन सबका उसके ऊपर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। जबकि कोई विशिष्ट व्यक्तित्व का धनी साहित्कार पूरे युग और समाज के परिवेश को भी परिवर्तित करने में पूर्णरूपेण सक्षम होता है। इसीलिये लोक में प्रचलित है कि "जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि"। काव्य या कला में प्रतिबिम्बित समाज यथार्थ और आदर्श का अपूर्व मिश्रण होता है। काल्पनिक वस्तु भी निराधार नहीं होती। कवि या साहित्यकार की कल्पना–शक्ति गोचर जगत् अथवा अपने परिवेश से ही अपनी खाद्य–सामग्री ग्रहण करती है। काव्य प्रतिभा की वल्लरी पार्थिव व्यक्तियों और पदार्थों से रस ग्रहण कर सामाजिक भूमि या युगीन परिस्थितियों की भूमि पर पुष्पित–पल्लवित होती है। किसी देश, युग और जाति का काव्य (साहित्य) उसके विचारों, भावों, आचारों तथा जीवन–स्तरों का सूचक होता है। काव्य माध्यम से युगीन ऊर्जा का सहजोच्छलन होता है। किसी युग एवं देश के सांस्कृतिक विकास के इतिहास का निर्माण सम्बन्धित काव्य से सरलता से किया जा सकता है। कवि का जन्म शून्य में नहीं होता। साहित्यकार, कलाकार तथा दार्शनिकादि

संस्कृत समाज में ही उत्पन्न होते हैं, किसी अरण्य या अशिष्ट समुदाय में नहीं। तथागत कवि या साहित्यकार कहा भी है कि "वियोगी होगा पहला कवि आह से निकला होगा गान घुमड़ कर आँखों से फिर कविता बही होगी अन्जान"।

कवि, साहित्यकार, चिन्तक देश काल में प्राप्त विचारों, सम्वेदनाओं एवं संस्कारों को अपनी प्रतिभा या कल्पना से समृद्ध कर संस्कृति की सरिता को, ज्ञान की धारा को, भाव के स्रोत को आगे बढ़ाते रहते हैं। वे समाज से जो कुछ लेते हैं, उसे ब्याज सहित लौटा देते हैं। बड़े से बडा प्रतिभाशाली कवि भी बिना आदान के कुछ प्रदान नहीं कर सकता। उसके योगदान में सम्बन्धित सांस्कृतिक सम्पदा झलकती रहती है। भरत का भ्रातृत्व, सीता का सतीत्व, कर्ण का त्याग तथा युधिष्ठिर का सत्याग्रहादि नितान्त काल्पनिक नहीं कहा जा सकता। सीता या सावित्री के सतीत्व की कथा तब गढ़ी जा सकती है, जब समाज में कहीं न कहीं कुछ– कुछ वैसा ही उदाहरण दिखायी दे जाये। कल्पना का औदात्य भी उस युग के समाज के मानसिक विकास का सूचक जिस बिन्दु तक भारत के कवियों की दृष्टि पहुँची है, उस स्थान तक किसी देश के साहित्यकारों की कल्पना नहीं की जा सकी है।

साहित्य से धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा नैतिक विचारों एवं भावों, पारिवारिक सम्बन्धों तथा देशी–विदेशी संस्थाओं का इतिहास सहजता से प्राप्त हो जाता है। कवि–मानस पर समाज के विचारों और भावों आदि के जो संस्कार अंकित हो जाते हैं, वे उसकी कृति में किसी न किसी रूप में उतर ही आते हैं। कहीं चेतन भाव से, कहीं अचेतन भाव से, कहीं प्रत्यक्षतः और कहीं परोक्षतः। सर्जनात्मिका प्रतिभा की वीणा से सांस्कृतिक स्वर सहजतः फूट पड़ते हैं। संस्कृति को गंध और सभ्यता को पुष्प कहा जाता है। एक है आत्मा और दूसरी है शरीर। व्यक्ति परिवार, समुदाय, समाज तथा देश

की संस्कृति का पता प्रायः सभ्यता से लगता है। रहन–सहन, बोल–चाल, खान–पान, आचार–व्यवहार में संस्कृति झलकती रहती है। काव्य में इन सभी का वर्णन होता है, अतएव वह सांस्कृतिकोत्थान का द्योतक सहजतः हो जाता है। काव्य का माध्यम शब्द (भाषा) होता है। कवि संप्रेष्य भाव, विचार, अनुभव, संवेदन एवं संस्कार के अनुरूप शब्दों का अनुसंधान या चयन करता है। जिस समाज या जाति में जिन विचारों, भावों, व्यवहारों, संस्थाओं तथा पदार्थों का अस्तित्व नहीं होता, उस समाज की भाषा में उनसे सम्बद्ध शब्दावली का अभाव होता है। श्राद्ध, पिण्ड–दान तथा तर्पणादि कृत्यों के लिये अंग्रेजी भाषा में शब्द नहीं मिलते, क्योंकि अंग्रेजी समाज में ये कर्म अज्ञात है। भाषा संस्कृति और साहित्य का वाहन हैं। शब्द का भावाभाव सम्बन्धित प्रवृत्ति, संस्कार, विचार, भाव अनुभव एवं वस्तु आदि के भाव–अभाव, अस्तित्व–अनस्तित्व का सूचक होता है। उपयुक्त का अभीष्ट शब्दावली (भाषा) के अभाव में चिन्तन एवं भावानुभूति की प्रक्रिया की अकल्पनीय प्रतीत हो उठती है। अपने कथ्य के संप्रेषणार्थ कवि के पास शब्दों का ही आश्रय होता है– "कविहि अरथ आखर बलु साँचा।" किसी कवि की शब्दावली से संस्कृति के विविध स्तरों तथा उसके अनेक रूपों या अंगो का प्रामाणिक एवं स्पष्ट परिचय प्राप्त होता है।

किसी कवि या कृति की शब्दावली या सांस्कृतिक दृष्टि से किया गया अध्ययन अनेक पक्षों को उद्घाटित कर देता है। इस प्रकार के अनुशीलन के कथ्य की अधिकाधिक रेखाएँ, भंगिमाएँ एवं छायाएँ सहजतः विवेचित हो जाती है। और कला पक्ष के भी कतिपय बिन्दुओं पर यथेष्ट प्रकाश पड़ जाता है। इस तरह के अध्ययन से कवि की भाषा–शक्ति का भी आभास मिल जाता है। सम्बन्धित कवि और उसके समाज के मानसिक स्तर की भी झलक प्राप्त हो जाती है। आधुनिक भाषाशास्त्र भाषा के सामाजिक–सांस्कृतिक पक्ष (सामाजिक भाषा विज्ञान) पर विशेष बल दे रहा है। शब्दावली के सांस्कृतिक विवेचन–विश्लेषण से

संस्कृति की अनेक गुत्थियाँ सुलझ जाती है। ऐसा अध्ययन सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, दार्शनिक, आर्थिक तथा राजनीतिक इतिहास के अनेक अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर खोज लेता है। इससे सांस्कृतिक इतिहास की विलुप्त कड़ियाँ प्रकाशित हो उठती हैं और अनेक विवाद स्वतः शान्त या निर्णीत प्रतीत होने लगते हैं। इसी उद्देश्य एवं महत्व से प्रेरित होकर प्रस्तावित विषय का चयन किया गया है। अभी तक चन्दवरदायी, तुलसीदास, सूरदास तथा जायसी की शब्दावली की महत्वपूर्ण गवेषणा हुयी है। रीतिकाल के बिहारी और पद्माकरादि कवियों की शब्दावली पर भी कुछ कार्य हुआ है। इस प्रकार अनुसंधान की व्यापकता को दृष्टिगोचर करते हुये यह प्रतीत होता है कि अभी बहुत कुछ करना शेष है। सूफी काव्य सांस्कृतिक दृष्टि से अति समृद्ध कहा जा सकता है। जायसीतर सभी सूफी कवियों की शब्दावली इस दृष्टि से विशेष विवेच्य है।

प्रस्तावित अनुसंधान से सूफी काव्य के अनेक अनुद्घाटित पक्षों के उद्घाटित होने की संभावना है। इससे सूफी काव्य के अर्थ–ग्रहण में भी यथेष्ठ सहायता प्राप्त होगी। शोध–समीक्षा के आयामों में विस्तार हो सकता है। अज्ञात क्षितिजों के ज्ञात होने से सूफी काव्य की नयी दृष्टि से समीक्षा करने की प्रेरणा सर्जकों, आलोचकों, अध्येताओं तथा अनुसंधायकों को एक साथ प्राप्त हो सकती है। सुविधा की दृष्टि से मैंने शोध ग्रन्थ को ग्यारह अध्यायों में विभक्त किया जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है– अध्याय 1– विषय प्रवेश – काव्य और संस्कृति का सम्बन्ध, काव्य का माध्यम, आलोच्य काव्य का संक्षिप्त परिचय, अध्याय 2– वस्त्रालंकारिक शब्दावली– नारी–परिधान, पुरुष–परिधान, बाल–परिधान, नारियों के अलंकार, पुरुषों के आभूषण, बालकों के आभूषण, शय्यादि से सम्बन्धित वस्त्र, अध्याय 3– खाद्य तथा पेय पदार्थों से सम्बद्ध शब्दावली– अनाज और तेलादि, फल, मेवा तथा तरकारी, मिष्ठान एवं पकवान, चर्व्य पदार्थ, पेय पदार्थ, मसाले

आदि अध्याय 4– पात्रादि–वाचक शब्द– भोजन बनाने और करने के पात्र, अन्य क्रियाओं से सम्बद्ध पात्र, पात्रों के विविधोपादान, अध्याय 5– व्यावसायिक शब्दावली– कृषि–सम्बन्धी शब्द, वाणिज्य से सम्बन्धित शब्द, औद्योगिक शब्दावली, मुद्रा तथा नगादि, अन्य व्यवसाय– शिक्षण एवं पौरोहित्यादि, अध्याय 6–धार्मिक तथा दार्शनिक शब्द– विविध समुदायों तथा साधनाओं से सम्बद्ध शब्दावली, विविध संस्कारों एवं कृत्यों आदि से सम्बद्ध शब्दावली, विविध दर्शनों से सम्बन्धित शब्दावली, विविध पर्वों तथा त्योहारों से सम्बद्ध शब्द, अध्याय 7– आरण्यक तथा औपवनिक शब्द– वृक्ष एवं वीरुध, पुष्प, फलादि, अध्याय 8– कलात्मक शब्दावली– साहित्यिक शब्द, संगीतात्मक शब्द, चित्र एवं शिल्प से सम्बद्ध शब्द,वास्तुकला से सम्बन्धित शब्द, अध्याय 9– सामाजिक शब्दावली–पारिवारिक सम्बन्धों को व्यक्त करने वाली शब्दावली, वर्ण तथा जाति से सम्बद्ध शब्द, लौकिक रीतियों तथा अन्ध विश्वासों से सम्बद्ध शब्द, मनोविनोदों से सम्बद्ध शब्द, अध्याय 10– राजनीतिक तथा प्रशासनिक शब्दावली– राज–दरबार तथा प्रसादादि, शासन–व्यवस्था, संग्राम–शस्त्रास्त्र, परिधान एवं वाहनादि तथा अन्तिम अध्याय 11– उपसंहार– परिशिष्ट–सन्दर्भ ग्रन्थ सूची आदि सम्मलित है।

आभार

सर्वप्रथम परमब्रह्म परमात्मा के प्रति आन्तरिक समर्पण निवेदित करती हूँ जो अनादि, अनन्त, सर्वशक्तिमान तथा करुणामय है। मैं अपने शोध निर्देशक डॉ0 विनोद कुमार खरे के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने मन्त्रदृष्टा ऋषि के रूप में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष ज्ञान के विविधि सोपानों को इस शोध–प्रबन्ध के साथ–साथ मेरी अन्तश्चेतना में भी सुप्रतिष्ठित कर दिया और यह उनका सूर्यकिरणोज्ज्वल आशीष ही है कि मैं यह अनुसंधान कार्य सम्पन्न कर सकी। मैं अपने भाईयों–भाभियों– श्री अशोक कुमार – श्री मती प्रतिभा दम्पति, श्री विनोद कुमार – श्री मती संगीता दम्पति, श्री राकेश कुमार – श्री मती रश्मि दम्पति, श्री उमेश कुमार श्रीवास्वत के प्रति आभार प्रदर्शित करना इसलिए आवश्यक समझती हूँ कि अनुसंधान सामग्री के संयोजन में इन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। मैं विख्यात, अल्पख्यात तथा अख्यात् विद्वानों के प्रति भी ह्रदय से आभारी हूँ जिनकी रचनाओं के सहयोग से मैं यह शोधकार्य सम्पन्न कर सकी। मैं आभारी हूँ अपनी बहिनों श्रीमती आशा – श्री पंकज स्वरूप दम्पति (जे. ई. जल निगम, श्री मती मधुलता –श्री धर्मावतार दम्पति पी0 ए0 सेशन जज, श्री मती मन्जुलता – श्री मनोज श्रीवातस्तव दम्पति पी0 ए0 जिला जज का जिन्होंने समय–समय पर अपना सानिध्य प्रदान किया। सृष्टि की महिमामय सत्ता अपनी जननी माता श्री मती लक्ष्मी देवी श्रीवास्तव के प्रति भावातिरेक में अश्रुविगलित कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अत्याधिक गरिमा की अनुभूति कर रहीं हूँ। उनकी वात्सल्य की छाया में मैंने जन्म से लेकर इस शोध प्रबन्ध की परिपूर्णि तक पूर्ण आस्वति की अनुभूति की है। मैं अपने पिता श्री बृज बिहारी लाल श्रीवास्तव की भी ह्रदय से

आभारी हूँ जिन्होंने कंटकों में चलते रहने क़ा दृढविश्वास भरा और अपना अमूल्य समय देकर इस शोध ग्रन्थ को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान किया। अन्त मे मैं डॉ० श्री दुर्गा प्रसाद श्रीवास्वत उरई, डॉ० श्री मनुजी श्रीवास्तव रीडर बुन्देलखण्ड महाविद्यालय झाँसी तथा श्री प्रवीण कुमार सक्सेना 'उजाला' (एम. ए. एम. फिल्) कवि एवं साहित्यकार, उरई की आभारी हूँ जिन्होंने इस शोध ग्रन्थ में पूर्ण रूप से एक निष्ठ होकर सहयोग प्रदान किया । मैं इनकी सदैव ऋणी रहूँगी।

अनुसंधित्सु
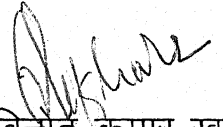
AnjuLata Srivastava

कु0 अन्जुलता श्रीवास्तव

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कु0 अन्जुलता श्रीवास्वत ने शोध प्रबन्ध "जायसीतर सूफी काव्य में प्रयुक्त सांस्कृतिक शब्दावली का वर्णनात्मक अनुशीलन" (चन्द्रायन, मृगावती, मधुमालती और चित्रावली के विशेष सन्दर्भ में) मेरे निर्देशन में सम्पन्न किया है। अन्जुलता जी का यह कार्य सर्वथा मौलिक है। यह कार्य 200 दिन तक मेरे निर्देशन में रह कर किया।

निर्देशक

(डॉ0 विनोद कुमार खरे)
रीडर, हिन्दी विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय झाँसी

दिनांक 15.10.7

स्थान : झाँसी

घोषणा पत्र

मैं कु0 अन्जुलता श्रीवास्वत शपथ पूर्वक यह घोषणा करती हूँ कि मेरे द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ''जायसीतर सूफी काव्य में प्रयुक्त सांस्कृतिक शब्दावली का वर्णनात्मक अनुशीलन'' (चन्दायन, मृगावती, मधुमालती और चित्रावली के विशेष सन्दर्भ में) मेरा मौलिक कार्य है।

प्रस्तुतकर्ता

कु0 अन्जुलता श्रीवास्तव

अध्याय 1

विषय प्रवेश

(क) काव्य और संस्कृति का सम्बन्ध

(ख) काव्य का माध्यम

(ग) आलोच्य काव्य का संक्षिप्त परिचय

अध्याय 1

विषय प्रवेश– देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया। उसके सामने ही उसके देवमन्दिर गिराये जाते थे, देव मूर्तियों को तोड़ा जाता था और पूज्य पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ नहीं कर सकते थें। ऐसी दशा में अपनी वीरता के गीत न तो वे गा ही सकते थे और न बिना लज्जित हुए सुन ही सकते थे। कुछ समय पश्चात मुस्लिम साम्राज्य दूर तक स्थापित हो गया तब परस्पर लड़ने वाले स्वतंत्र राज्य भी नहीं रह गये। अब हिन्दू जनसमुदाय पर बहुत दिनों तक उदासी सी छायी रही। अपने पौरुष से हताश निराश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त अन्य कोई दूसरा मार्ग न था। रामानुजाचार्य (संवत् 1073) ने शास्त्रीय पद्धति से जिस सगुण भक्ति का निरूपण किया था उसकी ओर जनता आकर्षित होती चली आ रही थी। गुजरात में स्वामी मध्वाचार्य जी (संवत् 1254–1333) ने अपना द्वैतवादी वैष्णव संप्रदाय चलाया जिसकी ओर बहुत से लोग झुके। देश के पूर्वी भाग में जयदेव जी के कृष्ण–प्रेम–संगीत की गूँज चली आ रही थी जिसके सुर में मिथिला के कोकिल (विद्यापति) ने अपना सुर मिलाया। ब्रह्म के 'सत्' और 'आनंद' स्वरूप का साक्षात्कार राम और कृष्ण के रूप में बाह्य जगत के व्यक्त क्षेत्र में कियां।

एक ओर तो प्राचीन सगुणोपासना का यह काव्य क्षेत्र तैयार हुआ, दूसरी ओर मुसलमानों के बस जाने से देश में जो नयी परिस्थिति उत्पन्न हुयी उसकी दृष्टि से इस काल में दो धाराएँ प्रस्फुटित हुयी। इस प्रकार देश में सगुण और निर्गुण

के नाम से भक्तिकाव्य की दो धाराएँ विक्रम की पंद्रहवी शताब्दी के अन्तिम भाग से लेकर सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक समानान्तर चलती रहीं। पहली शाखा भारतीय ब्रह्मज्ञान और योग साधना को लेकर तथा उसमें सूफियों के प्रेमतत्त्व को मिलाकर उपासना के क्षेत्र में अग्रसर हुयी। दूसरी शाखा शुद्ध प्रेममार्गी सूफी कवियों की है जिनकी प्रेम गाथाएँ वास्तव में साहित्य कोटि के भीतर आती है।

सूफी शब्द की व्युत्पत्ति– सूफी शब्द की व्यत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक मत प्रकट किये जाते हैं। एक मत के अनुसार "पैगम्बर हज़रत मुहम्मद के द्वारा निर्मित करायी गयी मदीना की मस्जिउ के सामने एक चबूतरा था जिसे 'सुफ्फा' कहते थे। इस पर आकर बैठने वाले कुछ पवित्र जीवन वाले तथा खुदा की इबादत में लीन रहने वाले मुहम्मद कें समयायिक व्यक्तियों के अह्ल–अल–सुफ्फाह' कहा जाता था। इसी 'सुफ्फा' या सुफ्फाह शब्द से सूफी शब्द बना।"[1]

अनेक विद्वानों ने सूफी शब्द के अर्थ करते हुए अनेक अर्थ प्रस्तुत किये हैं। उनके मतों के निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि 'सूफी' शब्द का सम्बन्ध अरबी शब्द सूफ और ग्रीक भाषा के शब्द सोफिया **SOphia** दोनों के साथ है। इस प्रकार सूफी वे ज्ञानी हैं जो ऊन का लबादा ओढ़े हुये दरवेश बने हुए खुदा की राह पर चले जाते थे। इस सन्दर्भ में डॉ0 विमल कुमार जैन का यह कथन दृष्टव्य है कि "सोफिया, सूफी और स्वभास (संस्कृत) शब्दों में पर्याप्त सामंजस्य भी हैं। सूफी अन्तर्दृष्टि से हृदय में ईश्वरीय प्रकाश का अभेद रूप से साक्षात्तकार करते है।"[2] सूफी शब्द की व्याख्या करते हुए आचार्य प0 रामचन्द्र शुक्ल ने यह महत्वपूर्ण कथन दिया है कि "ज्यों–ज्यों ये साधना के मानसिक पक्ष की ओर अधिक प्रवृत्त होते गये त्यों–त्यों इस्लाम के वाह्य विधानों से उदासीन होते गये।"[3]

इस्लामी शासन का दूसरा बड़ा प्रभाव साहित्य में प्रेम काव्य के रूप में विद्यमान है। उसमें सूफी सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण हिन्दू पात्रों के जीवन में किया गया है। "हम इतना अवश्य कह सकते है कि धर्म के वातावरण से दूर न रहते हुये भी प्रेम–काव्य ने हमें सम्पूर्ण रूप से लौकिक कहानियाँ दी हैं, संसार के प्रेम का इतना सजीव वर्णन हमें पहली बार प्रेम–काव्य में मिलता है, इस दिशा में फारसी साहित्य की मसनवियों ने हमारे हिन्दी साहित्य के प्रेम–काव्य को बहुत प्रभावित किया है।"[4]

सूफी दर्शन– सूफी चिन्तकों की रहस्य भावना उन्हें ईश्वर और जगत के सम्बन्ध में ऐसे सादृश्य सम्बन्धों का आभास दिया जिसे जगत ने नानात्व में उसी एक परमेश्वर की छबि झलकती हुई दीख पड़ी। सम्पूर्ण सृष्टि उसी अल्लाह का जलवा प्रतीत होने लगा। सर्वात्मवाद की इस भावना को सूफी चिन्तकों ने प्रतिबिम्बवाद तथा अशांशी भाव से अभिव्यक्त किया है।"[5]

भारत में सूफीमत का प्रादुर्भाव– "विक्रम की सातवीं शताब्दी में इस्लाम धर्म का प्रादुर्भाव हुआ और उसके अन्तिम चरण से इसका प्रचार बड़े वेग से होने लगा। तदनुसार व्यापारियों के साथ साथ अरब तथा उसके पड़ोस के लोग धर्मोपदेशन के लिए भारत आने लगे और मालाबार के समुद्र तट एवं मैलापुर (मद्रास) तथा पेशावर की ओर उनके धर्मोपदेशन का कुछ न कुछ आरम्भ होने लगा और सं0 769 के अन्तर्गत सिंध प्रदेश पर मुहम्मद कासिम का आक्रमण भी हो गया। उस आक्रमण के समय उमैया वंश के खलीफा इस्लाम धर्म के प्रचार में लगे हुए थे और सूफीमत का तभी प्रथम युग चल रहा था। उसके द्वितीय युग के समय तब बाबा रतन और बाबा खाकी जैसे धर्मान्तरित पीरों का समय व्यतीत हो गया और उसके तीसरे युग में गाजी मियाँ हिन्दुओं के विरुध धर्म के लिए लड़ते लड़ते बहराइच के निकट सं0

1090 में मार डाले गये और उनकी मजार पर उस घटना के उपलक्ष्य में आज भी उर्स मनाया जाता है तथा उसके नाम पर गा—गाकर प्रचार करने वाले डफाली सर्वत्र धूमा करते हैं।"[6]

सूफी सम्प्रदाय की शाखाएँ— सूफी मत की प्रमुख चार शाखाएँ हैं। " 1— ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, 2— सुहर्वदिया, 3— कादिरिया, 4— नक्श बंदिया। इसके अतिरिक्त 12 अन्य सम्प्रदाय भी हैं।"[7] जिनका उल्लेख कम ही प्राप्त है।

सूफी सम्प्रदाय की भक्ति की स्थतियाँ— "सूफियों के अनुसार मुरीद पहले अपने शेख के प्रति आत्म समर्पण करता है। फिर शेख उसे पीर के सिपुर्द कर देता है और पीर के द्वारा वह क्रमशः रसूल अर्थात् हजरत मुहम्मद के प्रभाव से आगे बढ़ा हुआ स्वयं परमेश्वर के समक्ष तक पहुँच जाता है। पीरों के अतिरिक्त साधक प्रसिद्ध औलिया (वली वा फकीर लोगों) की भी उपासना करता है और उनके मजारों (समाधियों) की जियारत (तीर्थयात्रा) करता तथा उन पर पुष्पादि चढ़ाकर उनसे दान पाने की अभिलाषा प्रकट करता है। सूफियों की एक विशेषता यह है कि वे ख्वाजा खिज्र नामक एक प्राचीन पौराणिक फकीर के अस्तित्व में विश्वास करते हैं और उसके पथ प्रदर्शलन की याचना करते हैं। प्रसिद्ध है कि इस खिज्र ने एवं इलियास नामक एक अन्य फकीर ने भी उल्लाह से अपने लिए अमरत्व का वरदान प्राप्त कर लिया है।"[8]

मध्ययुगीन सूफी प्रेमाख्यान भारतीय एवं इस्लामी, इन दो परस्पर विरोधी संस्कृतियों के सम्मिलित रूप हैं। भारतीय समाज में प्रचलित कथाओं के अन्तर्गत सूफी सिद्धान्तों एवं सूफी साधना का समावेश सूफी काव्यों में विशेष सफलता एवं विलक्षण विशेषता कही जा सकती है।

भाव पक्ष– सूफी लोग परमतत्त्व को निराकार एवं निर्गुण ब्रह्म की भाँति मानते हैं। प्रेम काव्य सूफीमत पर ही आश्रित है अतः सूफीमत के समस्त सिद्धान्त प्रेम–काव्य में प्रस्फुटित हुए हैं। सूफीमत में ईश्वर एक है, जिसका नाम 'हक' है उसमें और आत्मा में कोई अन्तर नहीं है, आत्मा 'बन्दे' के रूप में अपने को प्रस्तुत करती है और बन्दा इश्क (प्रेम) के सूत्र से 'हक' तक पहुँचने की चेष्टा करता है, जिस प्रकार से एक पथिक अपने निर्दिष्ट (चुने हुये) स्थान तक पहुँचने के लिये अनेक 'मंजिलों' को पार करता है, उसी प्रकार बन्दे की खुदा तक पहुँचने में चार दशाएँ पार करनी पड़ती है। "वे दशाएँ हैं, शरीयत, तरीकत, हकीकत और मारिफत। यथा– "शरीयत– "धर्म ग्रन्थों के विधि निषेध का सम्यक् पालन। इसे कर्मकाण्ड कह सकते है। तरीकत– "बाहरी क्रिया कलाप से परे होकर केवल हृदय की शुद्धि द्वारा परमात्मा (परम सत्ता) का ध्यान। इसे उपासना कह सकते है। हकीकत– 'सत्य का सम्यक् बोध जिससे साधक तत्त्व दृष्टिसम्पन्न हो जाता है। इसे ज्ञानकाण्ड कह सकते है। मारिफत– 'इसे सिद्धावस्था कहते हैं। इसमें साधक की आत्मा को परमात्मा में विलीन होने की क्षमता प्राप्त होती हैं। और वह परमात्मा की सुन्दर प्रेममयी प्रकृति (जमाल) का अनुसरण करता हुआ प्रेममय हो जाता है।"[9] "मारिफत में जाकर आत्मा और परमात्मा का सम्मिलन होता है, वहाँ आत्मा स्वयं 'फना' होकर 'बका' के लिये प्रस्तुत होती है, इस प्रकार आत्मा स्वयं 'फना' होकर 'बका' के लिये प्रस्तुत होती है, इस प्रकार आत्मा में परमात्मा का अनुभव होने लगता है और अनलहक सार्थक हो जाता है, प्रेम में चूर होकर आत्मा यह आध्यात्मिक यात्रा पारकर ईश्वर में मिलती है और तब दोनों शराब पानी की तरह मिल जाते है।"[10]

प्रेम– सूफी लोग इश्के–हकीकी के लिए इश्के मजाजी को आवश्यक मानते

है और लौकिक प्रेम (इश्के मजाजी) को क्रमशः परिष्कृत करते जाते हैं और उसका उन्नयन करके अलौकिक प्रेम में उसका पर्यवसान दिखाते है। सूफीमत में प्रेम का अंश बहुत महत्त्पूर्ण है, प्रेम ही कर्म है, और प्रेम ही धर्म है, इसी प्रेम से हिन्दी का प्रेम–काव्य पोषित पल्लवित हुआ है प्रत्येक कहानी में प्रेम का ही निरूपण है उसका बीज और अन्त उसी की विजय है।

सूफीमत मानों स्थान–स्थान पर प्रेम के आवरण में ढका हुआ है उस सूफीमत की प्रेम फुहारे सदा सींचते रहते हैं निस्वार्थ प्रेम ही सूफीमत का प्राण है, फारसी के जितने सूफी कवि हैं वे कविता में प्रेम के अतिरिक्त कुछ जानते ही नहीं है, प्रमाण स्वरूप जायसी ने भी पद्मावत में लिखा है– "विक्रम धँसा प्रेम के बारा। सपनावति कहँ गयउ पतारा।"[11]

प्रेम के साथ–साथ उस सूफीमत में प्रेम का नशा भी प्रधान है, उसमें नशे के खुमार का और भी महत्त्वपूर्ण अंश है, उसे नशे के खुमार बदौलत ईश्वर की अनुभूति का अवसर मिलता है फिर संसार की कोई स्मृति नहीं रहती, शरीर का कुछ ध्यान ही नहीं रहता केवल परमात्मा की 'लौ' ही सब कुछ होती है। एक बात और है सूफीमत में ईश्वर की भावना स्त्री रूप में मानी गयी है वहाँ भक्त पुरुष बनकर उस स्त्री की प्रसन्नता के लिये सौ जान से निसार होता है, उसके द्वार पर जाकर प्रेम की भीख माँगता है।

ईश्वर एक देवी स्त्री के रूप में उसके सामने उपस्थित होती हैं उदाहरणार्थ–

प्रियतमा के प्रति प्रेमी की पुकार– "मेरे विचारों के संघर्ष से मेरी कमर टूट गयी है ओ प्रियंतमे आओ और करुणा से मेरे सिर का स्पर्श करो।"[12] इस तरह सूफीमत में ईश्वर स्त्री और भक्त पुरुष है। पुरुष ही स्त्री से मिलने की चेष्टा

करता है, जिस प्रकार जायसी के पद्मावत में रत्नसेन (साधक) सिंहलद्वीप जाकर पद्मावती (ईश्वर) से मिलने की चेष्टा करता है।

शैतान और पीर– सूफीकाव्य में माया का कोइ स्थान नहीं हैं किन्तु शैतान अवश्य देखने को मिलते है। जो साधक को उसके पथ से विचलित कर देता है, पद्मावत में रत्नसेन को विचलित करने वाला राघवचेतन है, जो कवि के द्वारा शैतान के रूप में चित्रित किया गया है। इस शैतान से बचने के लिये गुरु की आवश्यकता होती है गुरु ही साधक को शैतान से बचा सकता है, इसलिये सूफीमत के इन व्यापक सिद्धान्तों को लेकर ही प्रेम काव्य चला उन्हीं सिद्धान्तों के अनुरूप ही कथा की सृष्टि हुयी है, एक राजकुमार एक राजकुमारी से प्रेम करने लगता है, पर मार्ग में बहुत सी बाधाएँ आती है, प्रेमी प्रेमिका से मिल नहीं पाते अनेक प्रयत्न विफल होते है। यही परिस्थिति खुदा और उसके बन्दे में है। साधक ईश्वर की विभूति–उसका सौन्दर्य–देखकर उस पर मंत्र मुग्ध हो जाता है पर दोनों में मिलाप नहीं होता। संसार में अनेक परिस्थितियाँ है माया, मोह, प्रेम– वियोग, आदि। अन्त में गुरु की सहायता प्राप्त कर दोनों मिल जाते है इस प्रकार पार्थिव प्रेम में अपार्थिव प्रेम की ओर संकेत है। भौतिकता के पीछे रहस्यवाद की छाया है, कभी–कभी कथा में इसका स्पष्टीकरण हो जाता है जैसा जायसी के पद्मावत में है, प्रत्येक प्रेम काव्य के लेखक का कथानक थोड़े बहुत अन्तर से यही रहता है कोई भी कहानी दुखान्त नही है क्योंकि मिलन ही सूफीमत की एक मात्र चरम स्थिति है।

कला पक्ष– प्रेम काव्य में सबसे विचित्र बात यह है कि इसमें कथानक सम्पूर्ण रूप से भारतीय है, इसमें पात्रों के आदर्श भी एकान्त रूप से हिन्दू धर्म के पोषित है। आश्चर्य की बात यह है कि हिन्दू वातावरण में रहते हुये भी निष्कर्ष मुसलमानी

सिद्धान्तों से पूर्ण हैं, भारतीय काव्य शैली से पूर्ण रहते हुये भी ये प्रेम काव्य मसनवी के अनुसार विषय निरूपण है, सूफी काव्य में दोहा, चौपाई, छन्द में समस्त कथा कही गयी है। भाषा भी अवधी है, कथानक के अन्तर्गत हिन्दू देवी–देवताओं के भी विवरण हैं। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि "प्रेम–काव्य के कवियों ने हिन्दू शरीर में मुसलमानी प्राण डाल दिये हैं।"[13]

(क) काव्य और संस्कृति का सम्बन्ध– काव्य क्या है? इसके सर्वमान्य लक्षण कौन है? इस विषय में विद्वानों के दो वर्ग है (1) भारतीय आचार्य वर्ग (2) पाश्चात्र्य आचार्य वर्ग।

(1) काव्य की व्युत्पत्ति– संस्कृत के काव्य शास्त्र में सामान्यतः 'कवि कर्म' को ही काव्य कहा गया है, इस प्रकार यह मानकर चलना चाहिये कि 'काव्य' शब्द की उत्पत्ति 'कवि' शब्द से ही हुयी है, कवि शब्द की व्युत्पत्ति 'कु' धातु के साथ 'इच्' प्रत्यय लगाकर की गयी है। 'कु' धातु के कलरव करना, बोलना, शब्द करना आदि कई अर्थ लिये गये हैं, कुल मिलाकर कहेंगे कि 'शब्द रचना करने वाला, कलरव करने वाला और आकाश के समान व्यापक वह कवि है।

(2) काव्य की परिभाषा– वेदों में – "कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भुः माना है अर्थात् भगवान ही कवि एवं वेद वाक्य है।"[14] **अग्नि पुराण के अनुसार–** "संक्षिप्त वाक्य, इष्ट अर्थ के संपन्न पदावली सुन्दर अलंकार से समन्वित गुणयुक्त तथा दोष रहित वाक्य ही काव्य कहते है।"[15] **आचार्य भरत मुनि के अनुसार** – "शुभ काव्य की सात बातें होती हैं– मृदुललित पदावलि, गूढ़ शब्दार्थ हीनता, सर्व सुगमता, युक्तिमत्ता, नृत्य में उपयोग किये जाने की योग्यता, इसके अनेक स्रोतो को बहाने का गुण और संधियुक्तता।"[16] **आचार्य रुद्रट के अनुसार–** "शब्द और अर्थ दोनों

ही काव्य है।"[17] **डॉ0 राम कुमार वर्मा के अनुसार–** " कविता साहित्य की आदि शक्ति है। आत्मा की गूढ़ और छिपी हुयी सौन्दर्य–राशि का भावना के आलोक से प्रकाशित हो उठना ही कविता है।"[18]

काव्य प्रकाश के कर्त्ता **मम्मटाचार्य** ने उस रचना को जो दोष रहित और गुण वाली हो तथा जिसमें कहीं–कहीं अलंकार न भी हो काव्य कहा है– "तददोषौ शब्दार्थों सगुणवनलंकृति पुन' क्वापि।"[19] कवि **विश्वनाथ** ने रस को आत्मा मानते हुये रसयुक्त वाक्य को काव्य कहा है– "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।"[20]

काव्य की परिभाषा पाश्चात्य विद्वानों की निम्नवत है। महान् कवि एवं विचारक **अरस्तू–** "काव्य वह कला है जिसका आधारभूत सिद्धान्त भाषा के माध्यम से किया हुआ अनुकरण है।"[21] **नाटककार एवं कवि .शेक्सपियर–** "कवि की लेखनी कल्पना की सहायता से अज्ञात पदार्थों एवं वायवी अनस्तित्वों को मूर्तरूप करके जो नाम एवं ग्राम प्रदान करती है उसी कल्पना की अभिव्यक्ति को काव्य कहते है।"[22] महाकवि **मिल्टन** के अनुसार– "कविता को सुगम–सुबोध, प्रत्यक्षमूलक एवं रागात्मक होना चाहिये।"[23]

(3) काव्य का स्वरूप– युग परिवर्तन के साथ युग की मान्यताएँ भी बदलती है, नयी परिभाषाएँ बनती हैं और नये आदर्श प्रस्तुत किये जाते हैं। जन–जीवन का बाह्य और अन्तर दशाओं में, उसके जीवन दर्शन में, कार्य–प्रणाली में तथा परिणाम में भी परिवर्तन हो जाता है। यह परिवर्तन एक प्रकार का निखार है, गति का चिह्न है, प्रगति का पग है। अतः जब परिवर्तन प्रस्तुत होता है, तब विकासशील शक्तियाँ उसका स्वागत करती हैं और रूढ़िवादी शक्तियाँ जो विकास को (अपना) विनाश मानती हैं, उसका विरोध करती हैं। इस प्रकार का संघर्ष युग परिवर्तन के समय

उपस्थित होता है और फिर विकासशील शक्तियों के प्रभाव से दब जाता है। आधुनिक युग परिवर्तन का है क्योंकि नयी मान्यताएँ स्थापित हो रही हैं, नयी परिभाषाएँ बन रही हैं और नये आदर्श को लेंकर समाज चल रहा है। अतः इस परिवर्तन काल में यह आवश्यक है कि हम अपने अतीत के आदर्शों तथा मान्याताओं को दृष्टि से देखें कि उनमें कितना ग्राह्य है और कितना अग्राह्य और साथ ही प्राचीन मान्यताओं का नवीन रूप क्या होना चाहिए। इस प्रकार हम अपने अतीत के उन तत्त्वों को ले सकेंगे जो जीवन के लिए आवश्यक है और उनका त्याग कर सकेंगे जो विकास और प्रगति के मार्ग में काँटे के समान हैं। ऐसी परिस्थिति में काव्य के स्वरूप पर प्रकार डालना आवश्यक है।

'काव्य प्रकाश' के रचयिता आचार्य मम्मट का मत है कि "जो शब्दार्थ (रचना) दोष रहित, गुण सहित और अलंकार से प्रायः युक्त हो वह काव्य है।"[24]

(तददोषौ शब्दार्थौं सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि—काव्य प्रकाश)

काव्य की यह परिभाषा जिस काल में लिखी गयी थी उसकी सामाजिक दशा, और दोष–गुण की कल्पना कैसी थी? यदि हम इस प्रश्न का उचित उत्तर दे सकें तो इस निष्कर्ष पर पहुँचना सरल होगा कि कि आचार्य मम्मट ने काव्य का स्वरूप निश्चित करते समय सामाजिक दोष और गुण की कल्पना भी की थी। इस प्रकार मम्मट के अनुसार रचना में दोष अथवा गुण की व्याख्या सामाजिक आधार पर करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, इस परिभाषा को आधुनिक आलोचना की दृष्टि से स्वीकार करते समय हमें दोष और गुण की व्याख्या सामाजिक विकास के आधार पर करनी होगी। अतः नवीन दृष्टिकोण से काव्य में दोष उसे कहेंगे जो समाज में शोषण और उत्पीड़न के प्रति निष्क्रिय रहता है और गुण से हमारा तात्पर्य होगा उस भावना

और विचार से जो एकता, समता, विकास, प्रगति, शांति, सौहार्द, सहयोग और लोकतंत्र के पोषक है। इस प्रकार आचार्य मम्मट ने काव्य का जो स्वरूप निश्चित किया उसे स्वीकार करते समय हमें ऐसी व्याख्या करनी पड़ेगी जो भारतीय समाज में समता और लोकतंत्र की भावना के अनुकूल हो। लेकिन कुछ रूढ़िवादी आलोचक मम्मंट के दोष और गुण के उल्लेख को व्यक्तिगत, शब्दगत और रुढ़िगत दृष्टि से न कि सार्वभौम सामाजिक दृष्टि से देखते हैं। यही कारण है कि वे काव्य के स्वरूप के सामाजिक महत्त्व की उपेक्षा करते हैं और काव्य अथवा साहित्य को सामाजिक प्रगति का एक शक्तिशाली साधन नहीं मानते।

"आचार्य मम्मट के मतानुसार काव्य एक उद्देश्य की पूर्ति करता है, और वह उद्देश्य है क्या– गुण की बुद्धि। अतः 'कला कला के लिए' अथवा साहित्य और समाज के सम्बन्ध को अस्वीकार करने वाले आलोचकों के लिए साहित्य का उद्देश्य गुण बुद्धि–सामाजिक संतुलन, तथा समता और सहयोग का प्रसार, स्वीकार करना कठिन हो जाता है। सम्भवतः उनकी यह कठिनायी सांस्कारिक अथवा श्रेणीगत है। समाज के सम्पन्न (शोषक) वर्ग से कलावादी आलोचक सांस्कारिक सम्बन्ध रखते हैं। इसलिए उनका वर्ग स्वार्थ परोक्ष रूप में उन्हें बाध्य करता है कि वे साहित्य का उद्देश्य 'जाति तथा वर्गविहीन समाज का संगठन' अस्वीकार करें। इस प्रकार 'कलावादी' प्रतिक्रियावादी' का रूप धारण कर लेता है और प्राचीन शास्त्रों की ऐसी व्याख्या करता है जो आधुनिक युग की भावना का विरोध करते हैं।"[25] इसलिए काव्य की पुरानी परिभाषा के नवीन अर्थ की आवश्यकता है और फिर इसी के आधार पर काव्य का उद्देश्य भी समझना आवश्यक है।

"भारतीय साहित्य शास्त्र के अनुसार जब काव्य के सम्बन्ध में यह विचार व्यक्त

किया जाता है कि काव्य का रूप भावों के ऐसे विधान में है जो रस मग्न कर दे और मनोवृत्तियों का परिशोधन कर दे, तब हम आधुनिक युग में समाज के हित के लिए सामाजिक व्यवस्था को शोषण मुक्त करने के लिए काव्य के रूप में भावों के विधान और मनोवृत्तियों के परिशोधन को इस प्रकार स्वीकार करते हैं कि उसके द्वारा जन सामान्य की भावनाओं को आदर करने वाली व्यवस्था स्थापित हो। इस प्रकार प्राचीन और नवीन काव्य के स्वरूप में मौलिक अंतर नहीं है। अंतर है श्रेणी स्वार्थ से प्रभावित व्याख्या में। प्राचीन साहित्य–शास्त्रियों ने काव्य अथवा साहित्य के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किये हैं उनकी व्याख्या आज इस प्रकार होनी चाहिए कि उनमें श्रेणी स्वार्थ की गंध न हो। इसलिए काव्य के स्वरूप का स्पष्टीकरण प्राचीन सिद्धान्तों के आधार पर करते हुए हम निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि काव्य का स्वरूप वही सत्य, शिव और सुन्दर है जो व्यक्ति में समाज के लिए ऐसी भावनाएँ उत्पन्न करता है कि वह समाज के सुख–दुख समझता है और वर्ग विहीन, जाति–भेद सु मुक्त सामाजिक व्यवस्था, समता, सौहार्द, समान अवसर और अधिकार के आधार पर स्थापित करना चाहता है।''[26] और अच्छे, सभ्य, सुसंस्कृत साहित्य अथवा काव्य का यही उद्देश्य होना चाहिए।

कविता को अभूतपूर्व महत्त्व का प्रकाशन करते हुये आचार्य शुक्ल ने उसके व्यापक और गम्भीर स्वरूप को ध्यान में रखा है– उनकी स्थापना है– जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान–दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की इस मुक्ति साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आयी है, उसे कविता कहते हैं और आगे बढ़कर आचार्य प्रवर ने 'भावयोग' मानकर उसे 'कर्मयोग' तथा 'ज्ञानयोग' के समकक्ष माना है।

(4) काव्य के भेद– काव्य के भेद तीन दृष्टियों से किये जा सकते है। (अ) गुण, (ब) शैली, (स) प्रयोजन।

(अ) गुण– गुण की दृष्टि से काव्य के 3 भेद किये जा सकते हैं: (च) उत्तम, (छ) मध्यम (ज) अधम काव्य।

(च) उत्तम काव्य– "प्रत्येक शब्द या पद का अपना एक अर्थ होता है जो काव्यार्थ कहलाता है, लेकिन कभी–कभी उसी शब्द या पद से एक दूसरा अर्थ भी निकलता है जिसकी ओर वे संकेत करते हैं। जिसे व्यंग्यार्थ कहते हैं। उत्तम काव्य में व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ से अधिक चमत्कारी होता है।"[27] जैसे –

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।

आँचल में है दूध, और आँख में पानी।।

मैथिलीशरण गुप्त ने उक्त पंक्तियाँ यशोधरा की वियोगावस्था नारी की विवशता की ओर संकेत करते हुये लिखा है कि नारी जीवन में दो बातें मुख्य होती हैं– आँचल में दूध और आँखों में आँसू। व्यंग्यार्थ है वात्सल्य और करुणा या वेदना। तो यशोधरा जहाँ एक ओर पुत्र राहुल के लिए वात्सल्य उँडेल रही है, वही दूसरी ओर सिद्धार्थ के लिये विरह वेदना के कारण आँखों में आँसू भी लिये है। इस प्रकार यहाँ व्यंग्यार्थ में चमत्कार है।

(छ) मध्यम काव्य– "जहाँ व्यंग्यार्थ गौण हो जाता हो अथवा व्यंग्यार्थ और वाच्यार्थ समान कोटि के हों। व्यंग्यार्थ रहने के कारण इसे गुणीभूत व्यंग्य भी कहते हैं।"[28] जैसे–

"रघुवर बिरहानल तपे, सह्य शैल के अन्त।

सुख सों सोये शिशिर में, कपि कोपे हनुमन्त।।

अर्थात् वाच्यार्थ की दृष्टि से "जाड़े के मौसम में राम की विराहग्नि से तपे हुये सह्य नामक पर्वत पर सुख से सोये हुये वानर हनुमान पर क्रोधित हुये। व्यंग्यार्थ की दृष्टि से "हनुमान के द्वारा सीता का कुशल समाचार सुनकर राम की विरह ज्वाला शान्त हो गयी, फलस्वरूप सह्य पर्वत पर शीत की अधिकता का अनुभव कर वानरगण हनुमान पर कुपित हुये।" यहाँ व्यंग्यार्थ से स्पष्ट होने पर ही हनुमान पर वानरों का कोप संगत सिद्ध हुआ, अतः वाच्य साधक होने के कारण व्यंग्यार्थ गौण हो गया।

(ज) अधम काव्य– "जब काव्य में केवल वाच्यार्थ में ही चमत्कार पाया जाता है और व्यंग्यार्थ का नितान्त अभाव रहता है, तब अधम या चित्र काव्य कहलाता है।"[29] जैसे–

"अंगद कूदि गये जहाँ, आसनगत लंकेश।

मन भधुक करहाट पर, शोभित श्यामल वेश।।

उपयुक्त पद में अन्तिम पंक्ति में केवल अर्थ चमत्कार है, व्यंग्यार्थ अभाव है।

(ब) शैली– शैली की दृष्टि से काव्य के तीन भेद किये गये है। (1) गद्य, (2) पद्य, और (3) चम्पू।

(1) गद्य– "गद्य वह शैली है जिससे व्याकरण के नियमों का पूर्णतः पालन करते हुये वाक्यों का विन्यास किया जाता है। गद्य में रागात्मिका वृत्तियों को ही नहीं, बोधात्मक वृत्तियों को भी प्रश्रय मिलता है। इस शैली में हृगत बातों को विस्तृत रूप से प्रकट करने का क्षेत्र विशद् है। इसके अन्तर्गत, निबन्ध, उपन्यास कहानी आदि आते है।"[30]

(2) पद्य– "पिंगलशास्त्र के नियमों से आबद्ध रचना को पद्य कहते हैं। इस साधारण तुकबन्दी से लेकर गम्भीर और सरस रचनाओं तक का समावेश होता है साथ ही छन्दों का विधान होता है इसमें रचयिता अर्थात् कवि को यह छूट दे दी जाती है कि वह भाषा और व्याकरण के सामान्य स्वीकृत नियमों का उल्लंघन कर सकता है तथा अपनी सुविधानुसार तोड़मरोड़ सकता है।"[31]

(3) चम्पू– " गद्य पद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते" अर्थात् ऐसी रचनायें जिनमें गद्य और पद्य दोनों शैलियों का मिश्रित या सम्मिलित रूप हो जैसे संस्कृति में 'देशराज चरति' और हिन्दी में प्रसाद के चित्राधार में संग्रहीत उर्वशी और वभ्रुवाहन, अनूप का 'फेरि मिलिके' आदि। संस्कृत में अनेक चम्पू काव्य मिलते है किन्तु हिन्दी में यह परम्परा प्रचार न पा सकी।"[32]

(स) प्रयोजन– प्रयोजन या स्वरूप की दृष्टि के काव्य के दो भेद है (अ) श्रव्य–काव्य, (ब) दृश्य–काव्य।

(अ) श्रव्य काव्य की रसानुभूति श्रवण या पठन से होती है। इस काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य, खण्डकाव्य और मुक्तक काव्य आते है।

(1) महाकाव्य– किसी महापुरुष या आदर्श पुरुष के समस्त जीवन–वृत्त के आधार पर की गयी रचना को महाकाव्य कहते हैं। नायक धीरोदत्त श्रेणी का होना चाहिये एवं उसका लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पदार्थों में किसी एक की प्राप्ति होना चाहिये। कम से कम आठ सर्ग होना अनिवार्य है।

(2) खण्डकाव्य– जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं को लेकर खण्डकाव्य की रचना की जाती है जो कि अपने में स्वयं पूर्ण होती है। इसमें प्रायः जीवन की

एक महत्वपूर्ण घटना या दृश्य का मार्मिक वर्णन होता है। और अन्य प्रसंग संक्षेप में सम्मिलित रहते है।

(3) मुक्तक काव्य– जिसके अन्तर्गत रचना के विभिन्न छन्दों के किसी प्रकार की किसी विचार या कथा की धारा या श्रृंखला न पायी जावे और प्रत्येक छन्द स्वयं में पूर्ण और निरपेक्ष हो। इसके प्रत्येक छन्द स्वछन्द होते है।''

(ब) दृश्य काव्य– इस काव्य की सहानुभूति अभियादि के देखने से होती है। इसका रसास्वादन पठित और अपठित दोनों वर्ग कर सकते है। इसके अन्तर्गत रूपक और उपरूपक आते हैं।

रूपक के 10 भेद होते है– 1– नाटक, 2–प्रकरण, 3–भाण, 4–प्रहसन, 5–डिम, 6–व्यायोग, 7– समवकार, 8–बीथी, 9–ईहामृग, 10–अंक।

उपरूपक के 18 भेद होतें हैं– 1–नाटिका, 2–चोटक, 3–गोष्ठी, 4–सदृश, 5–नाट्यरासक 6–प्रस्थानक, 7– उल्लाप्य, 8– काव्य, 9– रासक, 10– प्रेक्षण, 11–संलापक, 12–श्रीगदित, 13–शिल्पक, 14– विलासिका, 15–दर्मल्लिका, 16–प्रकरिणका, 17–हल्लीश, 18 भाणिका।

संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति– मनुष्य चेतना– संपन्न प्राणी हैं वह अपने चारों ओर की सृष्टि का अनुभव प्राप्त करता है, वह उसे देखता, सुनता है और उसकी छाप उस के मानस पर एक छाप छोड जाती है। वासना रूप से उसमें भिन्न भिन्न वस्तुओं के छाया चित्र अंकित होते रहते हैं और तदनन्तर तदनुकूल ही उसके संस्कार बनते रहते हैं। मानस सभ्यता का जैसे–जैसे विकास होता है, वैसे ही वैसे सृष्टि प्रसार मनुष्य को अधिकाधिक व्यापक रूप से प्रभावित करता है।

आदि काल में मनुष्य की आवयश्यकताएँ थोड़ी थी, और उसका अनुभव भी साधारण था, वह अपने आस–पास जंगल–झाड़, पशु–पक्षी आदि को ही देखता था और इने–गिने पदार्थों से ही अपना काम चलाता था, उसके क्रिया–कलाप एक सीमित क्षेत्र में ही होते थे इसीलिये उसके अनुभवों की संख्या थोड़ी थी और उनका विस्तार भी स्वल्प था। सभ्यता के विकास के साथ–साथ मनुष्य की आवश्यकतायें बढ़ी और क्रमशः अधिकाधिक जीव–जगत उसके सम्पर्क तथा साक्षात्कार में आया। इस संपर्क और साक्षात्कार के विस्तार के साथ मनुष्य के अनुभवों की भी वृद्धि हुयी और उसकी चेतना अधिकाधिक विस्तृत तथा परिमार्जित होती गयी। धीरे–धीरे उसमें स्मृति, इच्छा, कल्पना आदि शक्तियों का आविर्भाव हुआ और सद्विवेक बुद्धि का विकास हुआ। आरम्भ में तो मनुष्य अपने आस–पास के दृश्यों से ही परिचित था और उसकी इच्छा शक्ति भी उन्हीं तक परिमित थी, क्रमशः वह अदृश्य तथा अश्रुत वस्तुओं की भी कल्पना करने लगा। उसकी इच्छाओं और अभिलाषाओं का क्षेत्र भी बढ़ा और साथ ही उसमें सुन्दर–असुन्दर, सत्–असत्, उचित–अनुचित की धारणा प्रबल होती गयी। प्रारम्भ में ये धारणायें बहुत कुछ अविकसित अवस्था में रही होगी। आवश्यकता और उपयोगिता के अनुसार मनुष्य के प्रयोग क्षेत्र में जो वस्तुयें आयीं, उन पर उसने भले–बुरे का भाव आरोपित करना प्रारम्भ कर दिया।

समय पाकर उसके संस्कार दृढ़ होते गये, उसकी चेतना का विकास होता गया और उसकी बोधवृत्ति भी क्रम–क्रम से सुव्यवस्थित तथा परिपुष्टि होती गयी। आगे चलकर ये ही संस्कार और वृत्तियाँ इतनी विकसित हुयी और मनुष्य समाज से इनका इतना धनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हुआ कि ये ही मनुष्य की सभ्यता का मानदण्ड जाना जाने लगा। जिस व्यक्ति की अथवा जिस समाज की ये वृत्तियाँ जितनी अधिक व्यापक

और समन्वयपूर्ण है, वह व्यक्ति अथवा वह समाज उतना ही समुन्नत समझा जाता है।

संस्कृति के प्रकार और अर्थ– समाज शास्त्रीयों ने संस्कृति के अनेक भेद माने है। जिनमें भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति का प्रमुख स्थान है। किन्तु इनके अतिरिक्त अन्य और भी संस्कृतियाँ है या यो कहें की प्रत्येक जाति धर्म की अपनी एक संस्कृति होती है। भारतीय संस्कृतियों में ''द्रविड़, आर्य, ग्रीक, शक, युइशि, कुशाण, हूण अफगान, मुगल''[33] आदि संस्कृतियों के अनेक प्रकार मिलते है।

संस्कृति के तत्व– संस्कृति किसी एक व्यक्ति के माध्यम से स्थापित नहीं होती है। अनेक क्रिया कलापों के माध्यम से इसका विकास होता है। जिसमें ''भारतीय संस्कृति के 16 संस्कार आदि तथा प्रार्थना करना वस्त्र पहनना, रहन सहन तथा आचार व्यवहार, आदि सम्मलित है।[34]

(ख) काव्य का माध्यम– काव्य के माध्यम के अन्तर्गत हम पाते है कि काव्य के सृजन के लिए निम्न माध्यमों की आवश्यकता होती है। (1) भाषा, (2) शब्द–शक्ति, (3) रीति, (4) गुण (5) छन्द आदि।

(1) भाषा– बिना भाषा के अभिव्यक्ति नहीं हो सकती मनुष्य के लिए वाणी ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ वरदान है। कवि इसी के माध्यम से अपने मनोगत भावों को व्यक्त करके सरस पाठाकों के मन को आन्दोलित एवं प्रभावित करता है।

काव्य में भाषा का असाधारण एवं चमत्कारपूर्ण प्रयोग होता है। यह वैशिष्ट्य किसी अंश में विचारों और भावों के आकर्षण से उद्‌भूत होता है। किन्तु उसका रहस्य बहुत कुछ शब्दों के कौशलपूर्ण प्रयोग में मिलता है। सफल कवि शब्दों को परखने वाला होता है और उनकी विभिन्न शक्तियों से स्वभावतः परिचित होता है।

वह उनके साधारण अर्थबोध के अतिरिक्त उनके उच्चतर कार्यों की सम्भावना का ज्ञान रखता है और आवश्यकतानुसार उनका प्रयोग करता है। वाच्यार्थ के अतिरिक्त लक्ष्यार्थ, तात्पर्यार्थ आदि को पहचानता तथा व्यंग्यार्थ को ग्रहण करता है। आधुनिक शब्दावली में हम यह कहेंगे कि 'काव्यात्मक भाषा की विशेषता यह है कि "उसमें लय, रूपक, बिम्ब, प्रतीक आदि की समुचित नियोजना होती है और उसमें सम्बन्ध और प्रकरण के असामान्य अर्थ की प्रतीति होती है। अतः काव्य में शब्द और उसकी विभिन्न शक्तियों का व्यवहार अत्यन्त दक्षतापूर्ण रीति से किया जाता है।"[35]

शब्द– " 'शब्द' भाषा की अन्विति है। वैसे तो वर्णों के संयोग से भाषा बनती है, किन्तु जब वर्ण शब्दों के रूप में नियोजित हो जाते है, तभी उनमें अर्थोत्पादन की क्षमता आती है। ओष्ठ, दन्त, तालु कण्ठ आदि स्वर–संस्थानों की सम्यक् क्रिया से शब्द उच्चरित होते है। शब्दों के ऊपर अधिकार मनुष्य ने विकास क्रम में बहुत पहले ही प्राप्त कर लिया था और अबतक वह मानव–जाति का भेदक गुण बना हुआ है।"[36] "शब्द का प्रारम्भिक रूप मौखिक था, अर्थात् एक साथ उच्चरित होने वाले सार्थक ध्वन्यंश शब्द कहलाते थे। आगे चलकर शब्द का लिखित रूप प्रकट हुआ, जो चिह्नों द्वारा मौखिक शब्द की अभिव्यक्ति करता था। अब मौखिक और लिखित शब्दों के दोनों रूप लोक प्रचलित है।"[37] इसी प्रकार पाश्चात्य विद्वानों ने शब्दों को दो प्रमुख कोटियों में बाँटा है– "ऐसे शब्द, जिनका प्रधान प्रयोजन किसी वस्तु अथवा तथ्य का ज्ञान कराना होता है और ऐसे शब्द, जिनसे मुख्यतः भावनात्मक प्रतिक्रिया का पता चलता है।"[38]

अर्थ– शब्द में अर्थ अनिवार्य रूप से निहित रहता है। "प्रत्येक शब्द अथवा पद का एक निश्चित अर्थ होता है, जिसे सुबोध श्रोता अथवा पाठक जानता है।

अतः शब्द के पढने अथवा सुनने पर अर्थ तत्क्षण उसके मन में उभर आता है। पाठक की सुरुचि और ज्ञान के अतिरिक्त स्वयं शब्दों में ऐसी शक्ति होती है, जिससे अर्थ उद्घाटित होता है''[39]

(2) शब्द–शक्ति– ''शब्द विहीन अर्थ एवं अर्थविहीन शब्द की कल्पना साहित्य के काव्य प्रदीप के अन्तर्गत की ही नहीं जा सकती। व्यंग्यार्थ और वाच्यार्थ को समझने के लिए शब्द शक्ति का ज्ञान होना आवश्यक है। वर्णों के समूह को शब्द कहते हैं, अतएव, जिसके द्वारा शब्द के अर्थ की प्रतीति या बोध हो उसे शब्द–शक्ति कहते है। इसके काव्य में तीन भेद प्राप्त होते है। (क) अभिधा, (ख) लक्षणा तथा (ग) व्यंजना।''[40]

(3) रीति– विशिष्ट पद रचना को रीति कहते हैं। आचार्य वामन ने रीतिरात्मा काव्य कहकर रीति को काव्य की आत्मा माना है। इसके तीन भेद है– (क) वैदर्भी, (ख) गौड़ी, (ग) पांचाली।''[41]

(4) गुण– ''रस को उत्कृष्ट बताने का श्रेय गुण, रीति और अलंकार को होता है। जिस प्रकार शूरता–साहसिकता, कठोरता, उद्ण्डता, नम्रता और माधुर्य आदि गुण मनुष्य की चेतन आत्मा के उत्कर्षक है उसी प्रकार काव्य की आत्मा रस को अभिवृद्धि देने में गुण सहायक होते हैं। अतएव जो रस के धर्म हैं और जिनकी स्थिति रस के साथ अचल है वे गुण कहलाते है। गुण तीन प्रकार के होते है। **क**–माधुर्य, **ख**–ओज और **ग**– प्रसाद।''[42]

(5) छन्द– ''छन्द का अर्थ है 'बन्धन' और बिना बन्धन के रचना गद्य की सीमा में आ जायेगी। पद्य बनाये रखने के लिए यति, गति, लय मात्रा, तथा तुकान्त

के नियमों का पालन करना आवश्यक है। लय के अधिक लचीले तथा विशिष्ट रूप को छन्द कहते हैं। अथवा जिस रचना में वर्ण, मात्रा, लय, गति, यति, और चरण सम्बन्धी नियमों का पालन और वर्णन हो उसे छन्द कहते हैं।"[43] छन्द शास्त्रियों ने छन्द के तीन भेद माने हैं। 1– मात्रिक, 2–वर्णिक, 3– लयात्मक।

(ग) आलोच्य काव्य का संक्षिप्त परिचय– उक्त शीर्षक के अन्तर्गत हम चन्दायन, मृगावती, मधुमालती और चित्रावली की कथावस्तु का अध्ययन करेगें।

1– चन्दायन– "यह प्रेमाख्यान परम्परा का दूसरा काव्य है।"[44] इसकी कथा निम्न वत् है।

गोवर में महर सहदेव के घर पद्मिनी जाति की सुन्दर कन्या के रूप में चांद का जन्म हुआ। वह बारह मास की हुयी तभी से उसके सौन्दर्य की ख्याति सर्वत्र फैल गयी। जब वह चार वर्ष की हुयी, जहत नाम के सजातीय ने अपने पुत्र बावन के साथ उसका विवाह करने के लिये कहलाया। महर ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। धूम–धाम से बारात आयी और विवाह हुआ। विवाह के बारह वर्षों के बाद जब सोलह वर्ष की हुयी, उसको अपने पति सिउहर के सम्बन्ध में दुख होने लगा। वह कद में छोटा (बावन) तथा एक आँख से काना था। वह गन्दगी से रहता था एवं चांदा से दाम्पत्य सम्बन्ध न रखता था। चांदा सन्देश भेजकर अपने मायके चली गयी।

बाजुर नाम का एक भिक्षुक गोवर आया। वह गा–बजाकर पेट भरने के लिये भिक्षा माँगता फिरता था। एक दिन वह चांदा को देखते ही मूर्च्छित हो गया। वह दण्ड–भय से वहाँ से भाग निकला। एक मास बाद वह रूपचन्द्र के नगर राजपुर में पहुँचा। बाजुर ने राजा रूपचन्द्र से चांदा के रूप की प्रशंसा की। इस पर राजा रूपचन्द ने गोवर पर आक्रमण करने का आदेश दिया। उसने गोवर को जा घेरा।

महर ने राव रूपचन्द्र के पास बसीठ भेजे। उनके पूछने पर राव रूपचन्द्र ने बताया कि चांदा का विवाह उसके साथ कर दिया जाये, वह इसलिए आया था। महर कुँबरू और धँवरू के विचारानुसार युद्ध के लिए प्रस्तुत हुआ। महर की तरफ के कुँबरू आगे बढ़ा, रूपचन्द की ओर से वीरबांठा आया। बांठा के आक्रमण के कुँबरू धराशायी हुआ। अब घँवरू आगे आया, वह भी बांठा के प्रहार से धराशायी हुआ। इन दोनों के गिरने से महर के योद्धा भयभीत हो गये। यह देखकर महर ने लोरिक के पास सन्देश भेजा। लोरिक युद्ध में भाग लेने के लिये तैयार हो गया। लोरिक को माता तथा स्त्री मैना ने रोका, किन्तु फिर उन्होंने उसे प्रसन्नतापूर्वक विदा दी। इसके बाद लोरिक अपने गुरु अजई के पास गया। लोरिक उससे शस्त्रास्त्र–संचालन की युक्ति लेकर विदा हुआ। लोरिक महर की सेवा में उपस्थित हुआ। लोरिक के युद्ध में उतरते ही महर की सेना लौट पड़ी और वहाँ डंटकर स्थित हो गयी। अब रूपचन्द्र की इच्छानुसार एक–एक से एक–एक का युद्ध होने लगा। जब बांठा युद्ध मैदान में आया तो महर ने लोरिकं से उसका सामना करने का अनुरोध किया। लोरक के सामने बांठा टिक न सका। वह भाग खड़ा हुआ। लोरिक के सामने रूपचन्द्र की सेना नहीं टिक पायी। रूपचन्द्र सेना सहित भाग गया। इस विजय का महर ने उत्सव मनाया। उसने लोरिक को एक हाथी पर चढ़ाकर नगर भर में घुमाया। चांदा ने अपने धवल गृह पर से उसका दर्शन किया। उसे देखते ही वह लोरिक से स्नेह से अभिभूत हो गयी। उसकी धाय बृहस्पति ने इस प्रकार रोमांच में आने का कारण पूछा, तो चांदा ने बताया और उससे पुनः लोरिक को दिखाने का अनुरोध ा किया। इसके लियें बृहस्पति ने उस विजयोत्सव के सन्दर्भ में पिता से एक वृहद ज्यौनार आयोजित कराने का सुझाव दिया जिसमें लोरिक को आमंत्रित किया गया।

चांदा के अनुरोध पर महर ने एक बड़े ज्यौनार का आयोजन किया। लोरिक एवं नगर निवासी इस भोज मे सम्मिलित हुए। शृंगार करके धवल गृह पर खड़ी चांदा पर लोरिक की दृष्टि पड़ी वह चांदा के सौन्दर्य से अभिभूत होकर सुधि–बुधि खो बैठा। उसे किसी तरह उसके घर पहुँचाया गया। लोरिक अपने घर में बीमार पड़ा रहा। वैद्यों ने बताया कि वह काम–विद्ध था। संयोगवश बृहस्पति उसके घर गयी। उसने बृहस्पति से पूरी बात बतायी तथा चांदा से मिलाने का अनुरोध किया। बृहस्पति ने यह युक्ति बतायी कि वह तपस्वी के रूप में मन्दिर में रहे तो देवदर्शन के बहाने उस मन्दिर में चांदा को लाकर उससे मिला देगी। चांदा ने जैसे ही मन्दिर के पास जाकर तपस्वी अचेत हो गया और चांदा वापस चली गयी। घर जाकर चांदा अनमनी हो रही थी। बृहस्पति ने उससे तपस्वी को उबारने की बात कही। चांदा ने उससे कहा कि वह तो उसी दिन लोरिक की हो चुकी थी जिस दिन से उसने उसे देखा था। बृहस्पति ने चांदा के कथानुसार जाकर लोरिक को सांत्वना दिया। लोरिक उसके पैरों पर गिरकर चांदा से मिलाने का अनुरोध करने लगा। अब लोरिक इधर–उध र भटकता रहता था, घर में नहीं आता था। चांदा ने लोरिक से मिलाने के लिये बृहस्पति से कहा। बृहस्पति वन–खण्ड में जाकर लोरिक से मिली, और उसने चांदा के धवल गृह पर किसी युक्ति से चढ़कर उससे मिलने की राय दी। लोरिक ने रात में जाकर चांदा के धवल गृह पर बरहा फेंका। वह बरहे के सहारे धवल गृह पर चढ़ गया। दोनों के बीच प्रेमालाप हुआ। दिन हुआ तो चांदा ने उसे शैय्या के नीचे छिपा दिया। दूसरी रात को कुछ बातचीत होने के बाद दोनों शैय्या में मिले और कामतृप्ति का लाभ कर अपूर्व हो गये। दूसरे दिन भी चांदा ने लोरिक को शैय्या के नीचे छिपा रखा। जब पुनः रात्रि हुयी तो चांदा ने अमृत छिड़ककर उसको

जीवित किया। लोरिक वहाँ से भाग निकला। चांदा ने धवलगृह पर चढ़कर देखा कि लोरिक अपने घर पहुँच गया था। फिर उसने ग्रह—नक्षत्रों की स्थिति को देखकर समझ लिया कि दोनों गंगा को पारकर जब हरदी जायेंगे तभी वे मिल सकेंगे।

चांदा—लोरिक का वह प्रेम—प्रसंग गोपित न रह सका। मैना ने सुना तो लोरिक से सांकेतिक रूप में उसने अपनी व्यथा कही। खोलिन ने बुरा—भला कहकर लोरिक मैना में मेल कराया। आषाढ़ आने पर चांदा गोवर की अन्य स्त्रियों के समान मनोकामना पूर्ति के अभिप्राय से सोमनाथ की पूजा के लिये अपनी सखियों के साथ मन्दिर में गयी। अपनी सखियों की टोली लेकर मैना भी वहाँ पहुँच गयी। जब चांदा और मैना मिलीं, उनमें विवाद छिड़ गया। उनमें हाथपायी की नौबत आ गयी। मैना ने चांदा की चीर पकड़कर खींचा तो वह विवस्त्रा हो गयी। तब तक लोरिक आ पहुँचा। उसने दोनों को समझा—बुझाकर शान्त किया और दोनों को अंकवारों में भरा। चांदा इस प्रसंग से दुखित होकर घर गयी। अब उसके मुख पर ऐसा कालिख लग गया जो धोया नहीं जा सकता था। मैना हँसती हुयी घर आयी, क्योंकि उसने चांदा का पानी उतार दिया था। चांदा ने समझ लिया कि इस अपवाद के बाद उसका गोवर में रहना ठीक नहीं है। उसने बृहस्पति से लोरिक को कहलाया कि वह रातों रात उसको लेकर निकल भागे, नहीं तो सबेरा होते ही वह विष खाकर प्राण त्याग देगी। चांदा के मानने पर लोरिक ने पण्डित से दूसरे दिन का मुहूर्त लेकर प्रस्तान करने का वचन दिया। सबेरा होते ही लोरिक ने पण्डित से मुहूर्त लिया। रात होने पर लोरिक बरहे की सहायता से धवल गृह पर चढ़ गया, चांदा पहले से तैयार बैठी थी। दोनों अपनी यात्रा पर निकल पड़े। दस कोस चलकर लोरिक भाई कुँबरू ने कहा—लोरिक तुमने यह अच्छा न किया। कार्तिक मास की ऋतु का उत्सव मनाकर

हम लौट आयेंगे। हम हरदीं के मार्ग पर हैं विदा दो। सन्ध्या होने पर वे गंगा के तट पर पहुँच कर वृक्ष के नीचे सो रहे। नाव द्वारा दोनों गंगा पार कर गये। पीछा करता हुआ बावन नदी तट पर आ पहुँचा। बावन लोरिक को उस पार देखकर नदी में कूद पड़ा। जब उसने नदी पार की, चांदा लोरिक चार कोस आगे जा चुके थे। बावन दौड़कर दस कोस पर उन्हें पकड़ लेता है। बावन ने क्रमशः तीन बाण छोड़े किन्तु लोरिक सुरक्षित रहा। उसने धनुष फेंक दिया और दोनों को श्राप दिया। बावन ने कहा कि लोरिक तुम यमपुर में राज्य करोगे और चांदा को सांप डंसेगा। वे दोनों आगे बढ़े। जब वे कलिंग के राज्य में पहुँचे, उन्हें वोदई नाम का एक कर वसूलने वाला मिला, जो कर के रूप में चांदा को माँगने लगा। लोरिक अर्थ कर देने लगा, लेकिन उसने उसे स्वीकार न किया। लोरिक और चांदा युद्ध के लिये तैयार हो गये। उन्होंने विपक्ष के सभी लोगों को मार गिराया। वोदई ने लोरिक को पहचानकर जीवन दान माँगा। वोदई राज के पास पहुँचा एवं उसने सारी घटना सुनायी। राजा ने सयानों की बात मानकर लोरिक–चांदा को आदरपूर्वक बुलाया राजा ने उन्हें घोड़े पर बिठाकर विदा किया। लोरिक और चांदा कलिंग देश में ही एक ब्राह्मण के घर ठहरे। वे फूलों की शैय्या बिछाकर सोये। खा पीकर जब वे सो गये, तो रात्रि के अन्तिम प्रहर में एक विषधर आ निकला और उसने चांदा को डस लिया। एक गुणी ने जाकर मंत्र का उच्चारण करके जैसे ही पानी छिड़का, चांदा चेत में आ गयी। लोरिक ने चांदा के और अपने आभरण एवं बहुमूल्य पदार्थ गुणी को दे दिये। चौदह कोस आगे बढ़ने पर वे हरदीपाटन पहुँचे। वहाँ के राज छेदम ने उनके रहने की व्यवस्था कर दी। एक वर्ष माह तक दोनों ने वहाँ सुखपूर्वक निवास किया। इधर मैना लगातार रोती और लोरिक का इन्तजार करती रहती। वह उन पथिकों का

मार्ग देखती रहती जिनसे उसे लोरिक का कुशल समाचार मिल सकता। एक दिन उसने एक टांडे (सार्थ) के आने की बात सुनी। खोलिन ने उसके नायक को बुलाकर पूछा कि वह कहाँ का निवासी है और कहाँ जा रहा है। उसने बताया कि वह गोवर का है, सुरजन उसका नाम है और वह हरदीपाटन जा रहा है। मैना ने उससे बताया कि उसका स्वामी एक वर्ष से एक अन्य स्त्री चांदा के साथ हरदीपाटन में रह रहा है। उसी के पास वह सन्देश भेजना चाहती है। उसने उससे सावन मास से लेकर आषाढ़ के बरस–दिन के कष्टों का वर्णन किया। चार मास तक चलने पर टांडा हरदीपाटन पहुँचा। सुरजन ने लोरिक से कहा, 'तेरा भाई कुबरूँ, तेरी माता, तेरे कुटुम्बी एवं तेरी पत्नी मैना सभी तेरी बाट देख रहे हैं, मैना तो तेरी विरह ज्वाला में सबसे अधिक जल गयी है। मैना का सन्ताप सुनकर लोरिक रोने लगा, और दूसरे दिन उसके साथ स्वदेश के लिये प्रस्थान करने को तैयार हो गया। चांदा ने गोवर जाने से उसे बहुत रोका किन्तु लोरिक ने उसकी एक न सुनी। पचास कोस चलकर गोवर के निकट देवहाँ में लोरिक–चांदा उतरे। प्रातः काल लोरिक ने एक माली को बुलाया तथा उसे कुछ फूलदेकर गोवर में भेजा। वह घर–घर में फूल देता फिरा किन्तु जब वह मैना के पास पहुँचा तो उसने यह कहकर फूल स्वीकार नहीं किया कि उसका पति परदेश गया हुआ है। फिर भी हठपूर्वक माली ने उसके गले में एक पुष्प की माला डाल दिया। उसने मैंना को कुछ वैसी गन्ध मिली जैसी उसे केवल लोरिक के हाथों में लाये हुए फूलों में मिलती थी। वह रोते हुए उससे पूछने लगी कि उसका परदेशी प्रिय कहाँ पर आया हुआ है। माली ने कहा कि विभिन्न स्थानों से आये हुए परदेशी वहाँ ठहरे हुए थे। सम्भव था कि उनसे उसके प्रिय परदेशी को कोई समाचार मिल जाता, यदि वह सबेरे ही दूध

बेचती हुयी वहाँ आ जाती। लोरिक ने माली द्वारा उसे वहाँ आने के लिए प्रेरित कर ग्वालिनों से दूध दही लेने का प्रबन्ध किया। जो ग्वालिनें आयी उनके सिर में सिन्दूर डलवा कर और उनसे दूध–दही लेकर उन सभी को दूध–दही का दस गुना दाम देने के लिये कहा। लेकिन मैना सिन्दूर कराने के लिये तैयार नहीं हुयी। उसने कहा, उसका पति हरदी गया हुआ था और उसके न होने से उसे इस प्रकार की साध नहीं होती। चांदा उसे अपने साथ पलंग पर बिठाने लगी, लेकिन मैना दूसरे दिन आने का वचन देकर चली गयी। दूसरे दिन वह पुनः और महरियों के साथ आयी। चांदा से बात–चीत करते हुए वह उसे पहचान गयी और आपस में झगड़ने लगीं। लोरिक ने दोनों को शान्त किया। मैना रात वहीं रुक गयी। रात्रि में लोरिक ने उसके पास जाकर उसकी मनुहार की। गोवर में यह अपयश की बात फैल गयी कि मैंना पिछली रात को किसी परदेशी के साथ रह गयी थी। खोलिन यह समाचार अजयी के पास लेकर गयी, तो उसके आघात से ज्यों ही लोरिक का टाटर–टूटा, अजई लोरिक को पहचान गया। उसने लोरिक को अंको में भरा और घर चलने के लिये कहा। लोरिक घोड़े पर चढ़कर घर गया। वह माता के चरणों में पड़ा और उससे क्षमा याचना की। खोलिन दोनों बहुओ को घर के भीतर ले गयी। गीत गाये गये और बधावे हुए। खोलिन ने लोरिक की अनुपस्थिति में मांकर के अत्याचारों का वर्णन किया। उसने मांकर द्वारा कुंबरू के मारे जाने का समाचार लोरिक को बताया।

इसके आगे की रचना का अंश अनुपलब्ध है। लोकगाथा रूप के अनुसार– "यह समाचार सुनकर लोरिक मांकर के घर जाता है। उसे युद्ध के लिए ललकारता है। युद्ध में मांकर मारा जाता है। इसके बाद मांकर के बेटे देवसिया से उसका युद्ध

होता जिसमें एक क्षेत्रीय रूप में लोरिक मारा जाता है। एक दूसरे क्षेत्रीय रूप के अनुसार लोरिक विजय प्राप्त करता है। किसी अन्य कारण से वह काशी जाकर अपने चारों ओर उपले जलाकर (करसी–सीझकर) जल मरता है।''[45]

2– मृगावती– कवि मृगावती की रचना करने से पहले सृष्टिकर्त्ता के रूप में परमेश्वर की स्तुति करता है, जिसने हजरत मुहम्मद के नूर की रचना करके उसके प्रीत्यर्थ शिव और शक्ति (पुरुष तथा नारी तत्वों) के रूप में सृष्टि का विकास किया है, उसका विश्वास है कि उसके नाम–स्मरण से ही मोक्ष मिलता है, शव–दाह (आदि) से नहीं। तदनन्तर वह चार मित्रों–खलीफाओं, अबूबक्र, उमर, उसमान और अली– का स्मरण करता है। वह अपने पीर शेख बुढन की प्रशंसा करता है, जो सुहरावर्दी सूफी थे, और जिनसे कवि को धर्म–पक्ष का ज्ञान हुआ था। तदनन्तर वह अपने आश्रयदाता हुसैन शाह की प्रशंसा करता है। कवि का कहना है कि इन्हीं हुसैन शाह के राज्य और राज्य काल 909 हि0 में अपना काव्य प्रारम्भ किया, उस दिन मुहर्रम मास की चौथी तारीख थी, इस रचना में उसने गाथा, दोहा, अरिल्ल आर्या, सोरठा, चौपाई, आदि का प्रयोग किया है, और इस रचना को पूरा करने में उसे दो मास और दस दिन लगे थे। इस भूमिका के अनंतर उसने कथा आरम्भ की है।''[38]

एक बड़ा राजा था, जिसे एक पुत्र की कामना थी। उसने बहुत दान–पुण्य किया, तो उसे ईश्वर की कृपा से एक पुत्र–रत्न प्राप्त हुआ। वह शिशु बहुत होनहार था, पंडितों ने राशि आदि की गणना करके बताया कि उसके जीवन में और सब बातें तो अच्छी थीं, केवल कीाी स्त्री का किंचित् वियोग–दुख उसे अवश्य लिखा था। धायों ने उसका पालन–पोषण किया और पाँच वर्ष की अवस्था में उसने पढ़ना प्रारम्भ

किया। दस वर्षों में वह पंडित हो गया और चौगान तथा लक्ष्यवेध में पटु हो गया। एक दिन वह भृत्यों और रावतों को लेकर आखेट के लिए निकला। वह साथियों से अलग हो गया, और उसने सात रंगों की एक मृगी देखी, जिसको उसने पकड़ना चाहा। उसका पीछा करते–करते वह सात योजन तक गया, किन्तु वह हाथ न आयी। दोनों एक सरोवर के तट पर जा पहुँचे। मृगी उस सरोवर में घुस कर लुप्त हो गयी। राजकुमार सरोवर में घुस कर उसे ढूँढने लगा, किन्तु वह न मिली। तदनन्तर उसने उसकी प्रतीक्षा में उसी सरोवर के किनारे रहने का संकल्प कर लिया और उसे न पाकर आँसू गिराने लगा। उसे ढूँढ़ते–ढूँढ़ते उसके साथ के लोग वहाँ पहुँच गए और उन्होंने उससे इस रुदन का कारण पूछा। कुमार ने कारण बताया। साथियों ने उससे घर चलने के लिए बहुतेरा आग्रह किया किन्तु वह न गया। राजा के पास समाचार भेजा गया। वह आया। राजकुमार ने उसे सारा वृत्तान्त बताया। राजा के कहने पर भी उसने घर जाना स्वीकार न किया। कुमार के अनुरोध पर राजा ने वहाँ एक सुन्दर मन्दिर बनवा दिया, जिसमें अनेक चित्रों के साथ उस मृगी का भी चित्र अंकित किया गया। कुमार निरंतर उसी का स्मरण करता रहता। उस चित्र को देख–देख कर वह रोता रहता वर्षा, शीत और ग्रीष्म के चातुर्मास्य आए और गए किन्तु वह वहीं बना रहा।

वर्ष भर बाद एक दिन सात अप्सराएं आकर उस सरोवर में क्रीड़ा करने लगीं। स्नान करने के अनन्तर ये वस्त्र धारण कर उड़ गयीं, इसमें एक पर जो सबसे अधिक सुन्दर थी, कुमार मुग्ध हो गया और उसे लगा कि जिसके प्रेम में वह जीवन धारण कर रहा था, वही उसे इस वेष में दर्शन दे गयी थी। वह अत्यधिक दुखित हुआ। वहाँ पर उसकी एक धाय थी, उसने उसकी इस नयी वेदना का कारण पूछा तो

उसने विस्तारपूर्वक उससे उस अप्सरा के रूप का वर्णन किया, और बताया कि किस प्रकार वह आकर स्नान करने के अनंतर उड़ कर चली गयी थी। धाय ने बताया कि उसने उड़ने का रहस्य उसके वस्त्रों में निहित था, अगली बार जब वह निर्जला एकादशी के पर्व पर स्नान करने के लिए पुनः आती और उसका वस्त्र वह छिपा देता तो वह फिर उड़ कर न भाग सकती और उसकी हो जाती। मृगावती भी कुँवर पर अनुरक्त हो गयी थी, इसलिए वह आने वाली निर्जला एकादशी की प्रतीक्षा करने लगी थी और वह इस पर्व पर अपनी उस सखियों को लेकर पुनः उस सरोवर में स्नान करने आयी। जिस समय वह सरोवर में स्नान कर रहीं थी, कुमार ने उसका चीर हटा कर छिपा दिया। मृगावती ने कुमार को सरोवर के तीर पर खड़ा देखा, तो उसने जान लिया कि उसी ने चीर को छिपाया है। उसने कुमार से अपने चीर के लिए बहुतेरा अनुरोध किया किन्तु वह चीर कुमार ने उसे न देकर अपना लाया हुआ एक चीर दिया जिसको धारण कर वह कुमार के साथ उसके मंदिर में प्रविष्ट हुयी। यहाँ कुमार ने उसका आलिंगन करना चाहा, तो उसने कहा कि उसकी सहेलियाँ जब तक नहीं आ जातीं, वह शारीरिक संबंध करने को प्रस्तुत नहीं थी, सहेलियों से पूछ कर ही वह उसके साथ शारीरिक संबंध कर सकती थी। राजकुमार ने इसे स्वीकार कर लिया और अपने पिता को मृगावती के प्राप्त करने की सूचना भेजी। राजा ने वहाँ आकर बहुतेरी बधाईयाँ दी। उसने जाने के बाद दोनों ही हर्षित होकर रहने लगे।

एक दिन कुमार धाय को मृगावती का चीर संभाल कर रखने का आदेश देकर पिता के बुलाने पर राजधानी को चला गया। अवसर पाकर मृगावती ने धाय को किसी कार्य से बाहर भेज दिया और अपने चीर को पहिन कर वह उड़ चली। ६

ााय ने लौटकर देखा, तो वह मंदिर के ऊपर बैठी हुयी चीख पड़ी। जाते समय उसने कुमार से कहने के लिए धाय से कहा कि कंचन नगर उसका स्थान था और उसके पिता का नाम रूप मुरारी था कुमार वहाँ पर आ सकता था और तभी वह उसको मिल सकती थी। कुमार लौट कर आया और उसने मृगावती का यह सन्देश सुना तो वह अत्यधिक दुखित हुआ और योगी बन कर मृगावती की खोज में निकल पड़ा। उसके माता–पिता ने जब यह समाचार सुना तो रोते–रोते उन्होंने नेत्रों की ज्योति गंवा दी। कुमार चलते–चलते एक नगर में पहुँचा। वहाँ उसे एक जंगम मिला जों कंचन नगर का मार्ग जानता था। उसके साथ वह एक समुद्र के तट पर पहुँच गया, जिसको पार करने के लिए वह एक बोहित्थ पर सवार हुआ। जंगम अपने घर लौट गया। बोहित्य पर एक मास तक संतरण करते–करते वह एक पर्वतीय टीले पर जा पहुँचा। इस टीले पर उसे कुछ और मनुष्य मिले, जिन्होंने उसे बताया कि वे बोहित्य के टूट जाने पर बहते हुए वहाँ पहुँच गये थे, किन्तु एक सर्प से त्रस्त थे जो प्रतिदिन उनमें से एक को ले जाता और खा जाता था। कुमार ने उस सर्प को आता देखा, उसने ईश्वर का स्मरण किया, तब तक एक अन्य सर्प भी वहाँ आ पहुँचा और वे दोनों आपस में लड़ते हुए पानी मे गिर गए। वहाँ से आगे जाने पर उसने एक अमराई में निर्मित सुंदर प्रासाद देखा। उसके भीतर उसे एक रमणी मिली, जिसे एक राक्षस ले आया था। उसको मारकर कुमार ने उस रमणी का उद्धार किया रमणी के पूछने पर उसने अपनी यात्रा का उद्देश्य बताया। वह रमणी सुबुध्या की राजकन्या थी। वहाँ से राजा को जब यह ज्ञात हुआ कि कुमार ने उसका उद्धार किया है, वह उसको राजधानी ले गया, और वहाँ उसका बहुत सत्कार किया। राजा ने उसके साथ अपनी कन्या का विवाह कर देने का

आग्रह किया। कुमार इसे नहीं स्वीकार कर रहा था, तो उसने कुमार को बन्दीगृह में डालने का संकेत किया। कुमार उस राजकन्या–रूपमिनी के साथ हो गया। मिलन की रातें कुमार ने मधुर बातें करके ही बिता दीं– किसी प्रकार शारीरिक संबंध उसने रूपमिनी से किया। उसने तदनन्तर राजा से कह कर एक धर्मशाला बनवायी और उसमें वह योगियों, सन्यासियों का सत्कार करते हुए कंचन नगर की जानकारी प्राप्त करने लगा। रूपमिनी को अपने मधुर वचनों से इस बीच बराबर फुसलाता रहा। एक दिन उसने छिपे–छिपे एक योगी से उसके वस्त्रादि ले लिए और वह आखेट के बहाने निकल पड़ा। कुछ दूर पर जाकर उसने घोड़े को बांध दिया और योगी बन कर वह भाग निकला। राजा ने बहुतेरी खोज करायी, किन्तु वह न मिला।

जाते–जाते जब वह एक वन के किनारे पहुँचा, उसे एक गड़रिया मिला, जो उसे आतिथ्य के बहाने अपने सांथ ले गया। वहाँ उसे एक गुहा में डालकर उसने गुहा द्वार बन्द कर दिया। उस गुहा में उसे और भी अनेक मनुष्य मिले जो मोटे हो रहे थे और चल फिर न सकते थे। उन्होंने बताया कि एक जड़ी खिलाकर उस गड़रिये ने उन्हें मोटा कर रक्खा था और प्रतिदिन उनमें से एक–एक को मार कर खाया करता था। यह जानकर वह बहुत दुखित हुआ और परमेश्वर का स्मरण करने लगा। उन लोगों की बतायी हुयी युक्ति के अनुसार कुमार ने गड़रिए की आँखें फोड़ डालीं और एक दिन जब गड़रिया अपनी भेड़ों को चराने के लिए बाहर निकल रहा था, यह एक भेड़ की खाल धारण कर निकल भागा। कुछ दूर जाने पर उसने एक सुन्दर भवन देखा जिसमें चार पारावट प्रविष्ट हुए, जो स्त्री–पुरुष का रूप धारण कर आलिंगनादि करने लगे। तदनन्तर एक धावन ने आकर उन्हें गड़रियें के अंधे किए जाने की सूचना दी। राजकुमार को यहाँ ठहरने में अपने प्राणों का भय हुआ,

इसलिए वह यहाँ से भी भाग निकला। मृगावती ने घर पहुँच कर सहेलियों से कुमार के द्वारा अपहृत होने और वहाँ से निकल भागने की सारी वार्ता बतायी और उनसे अपने विरह दुख को दूर करने का निवेदन करने लगी। इसी बीच उसके पिता का देहावसान हो गया औरवह रानी हो गयी। उसने एक धर्मशाला बनवायी जिसमें वह योगियों–यात्रियों का इस उद्देश्य से सत्कार करने लगी कि उनके द्वारा उसे कुमार का कुशल–समाचार मिल जाता। कुमार को यह सूचना दो पक्षियों से प्राप्त हुयी, जो आपस में एक वृक्ष के ऊपर बैठे हुए बातें कर रहे थे। वह अत्यधिक प्रसन्न हुआ कि वह कंचन नगर के निकट पहुँच गया था। एक सुन्दर वाटिका में से होता हुआ वह नगर पर पहुँचा। पूछने पर उसे ज्ञात हुआ कि नगर का नाम कंचनपुर था और इसकी रानी मृगावती थी। नगर में प्रविष्ट होकर कुँअर राजद्वार पर पहुँचा। मृगावती के पास जब इस योगी के आगमन की सूचना पहुँची, उसने इसे बुलाया। उसे देखते की कुमार मूर्च्छित हो गया। मृगावती ने पहचान लिया कि यह उसका प्रेमी राजकुमार ही था। प्रेम की परीक्षा लेकर मृगावती ने उसका सत्कार किया और चेरियों को आदेश किया कि वे उसे नहला–धुलाकर अच्छे वस्त्र धारण कराएँ। धवलगृह संवारा गया और दोनों मिले। दोनों ने अपने विरह–कालीन दुखों का विवरण सुनाया। तदनन्तर शैय्या में दोनों का मिलन हुआ। सवेरा होने पर राज–सभा आमन्त्रित की गयी तथा कुमार को सिंहासनासीन किया गया। उस अवसर पर गीत–नृत्यादि का आयोजन हुआ तथा सामंतो–भृत्यों आदि को पसाव (उपहार) दिए गए। उधर मृगावती के पास उसकी सहेलियाँ बधावा लेकर आयी और मृगावती ने उनका सत्कार किया।

इसी प्रकार उसकी एक सहेली ने अपने घर के एक उत्सव में चलने के लिए

मृगावती से अनुरोध किया। मृगावती कुमार से आदेश प्राप्त कर उस सहेली के घर गयी। जाते समय उसने कुमार से कहा कि वह एक ओबरी (कोठरी) को जो बंद थी न खोलता। उसके चले जाने पर उत्सुकतावश कुमार ने उसे ओबरी को खोल दिया, तो उसमें से एक भयानक दानव निकला, जिसने बताया कि वह मृगावती का प्रेमी था और उसे (कुमार को) मारे बिना नहीं छोड़ सकता था। उसने कुमार को उड़ा ले जाकर समुद्र की एक खाड़ी में छोड़ दिया। इधर मृगावती को जब यह सूचना मिली कि कुमार को वह दानव उड़ा ले गया था, वह उसकी खोज कराने लगी। खोज कर लोग उस दानव को खींच लाए। उससे लोगों ने कुमार के बारे में जानने का बहुतेरा यत्न किया, किन्तु कोई सफलता उन्हें न मिली, इसलिए उसे भली–भाँति जकड़ कर उन्होंने पुनः एक कोठरी में मूंद दिया। मृगावती ने निराश होकर पवन से कुमार का पता लगाने का अनुरोध किया, तो उसने जाकर कुमार को मृगावती का दुख–दशा सुनायी और कुमार का सन्देश लेकर वह मृगावती के पास आया। पवन ने मृगावती को ले जाकर कुमार से मिला दिया और वे पुनः राजधानी को आ गए। तदनन्तर दोनों प्रेम–पूर्वक शैय्या में मिले। उधर कुमार के विरह में रूपमिनी अत्यधिक क्षीण हो गयी थी। उसको दुखों ने आ घेरा था। इसी समय उसे समाचार मिला कि एक बनजारा (सार्थ) नगर में आया हुआ था जो कंचनपुर जा रहा था। उसने उसके नायक को बुलाकर उसके द्वारा कुमार के पास अपना विरह–सन्देश भेजना चाहा। इस प्रसंग में उसने अपने बारह मास के दुखों का निवेदन किया। उसके सन्देशों को लेकर वह बनजारा कंचन नगर को चल पड़ा। मार्ग में उसे वह गड़रिया मिला जिसे राजकुमार ने अंधा कर दिया था। उससे मार्ग की जानकारी प्राप्त कर वह आगे बढ़ा और कंचन नगर पहुँच गया। कंचन नगर

के व्यापारी जब उसके पास पहुँचे और उसके टांडे के वस्तुएँ क्रय करने के लिए कहने लगे, उसने बताया कि वह अपना टांडा राजा के क्रयार्थ लाया था। जब यह समाचार राजा के पास पहुँचा, उसने नायक को बुलाया। नायक ने उसे आशीर्वाद देकर उसके पिता का सन्देश सुनाया तदनन्तर उसकी माता का, और अंत में उसकी विवाहिता पत्नी रूपमिनी का सन्देश सुनाया। कुमार चंद्रागिरि लौटने के लिए तैयार हो गया। उसने मृगावती को बताया कि उसके माता–पिता ने उसे बुला भेजा है, इसलिए अब वह घर के लिए प्रस्थान करना चाहता है। मृगावती ने गद्दी पर रायभान अपने ज्येष्ठ पुत्र को बिठा कर उसके साथ जाने की इच्छा व्यक्त की। रायभान को गद्दी पर बिठाकर राज्य की व्यवस्था करके अपने कनिष्ठ पुत्र कर्णराय को साथ लेकर वे चल पड़े। मार्ग में राजकुमार ने गड़रियें की उस गुहा को ध्वस्त कराया जिसमें उसने उसे पहले बंदी कर रक्खा था। अब वह सुबुध्या गढ़ पहुँच गया। वहाँ यह जानकर खलबली मच गयी कि किसी ने गढ़ पर चढायी की है। तब तक उस नायक ने जाकर वहाँ के राजा को सूचित किया कि कुमार उसकी राजधानी में पधार रहा है। यह सुनकर राजा उसे सत्कार पूर्वक राजधानी में ले आया। रूपमिनी से मिलकर कुमार ने उसे सुखी किया और मृगावती की भी मनुहार की जब वह सपत्नी भाव से इस कारण रुष्ट हुयी। वहाँ से विदा होकर वह अपनी राजधानी चंद्रागिरि पहुँचा। नायक को कुमार ने भेज कर पिता के पास अपने आने का सन्देश पहुँचाया और तदनन्तर वह चंद्रागिरि पहुँच गया। समस्त परिवार तथा प्रजावर्ग हर्षित हुआ और कुमार सुखपूर्वक रहने लगा। एक दिन जब कुमार आखेट के लिए गया हुआ था, मृगावती की ननद ने दोनों भाभियों से कहा–सुनी करा दी। सास ने किसी प्रकार समझा–बुझा कर शान्त किया, किन्तु वे अपने–अपने मंदिरों में मुँह फुलाए बैठी

रहीं। कुमार जब लौटा, तो वह माता को साथ लेकर दोनों से मिला और उन्हें एक–दूसरे से मिलाया। कुमार आखेट का व्यसन था। एक दिन उसे ज्ञात हुआ कि वन में शार्दूल आया हुआ था। उसका आखेट करने को वह निकल पड़ा। जब वह वन में पहुँचा, शार्दूल सो रहा था। कुमार ने उसको जगाकर बाण चलाया, तो वह तड़प कर कुमार पर आ धमका और उसने कुमार का प्राणान्त कर दिया। वृद्ध राजा ने जब यह सुना, वह दौड़ पड़ा। किन्तु रास्ते में वह अटक कर गिर पड़ा और चल बसा। कर्णराय दौडा हुआ आया। वह अत्यधिक दुखित हुआ लोगों ने उसे समझा–बुझाकर शान्त किया। लोग कुमार के शव को सुखासन पर रख कर ले गए। मृगावती और रूपमिनी ने उसके साथ चितारोहण किया। अनेकानेक भृत्यों ने भी चिता में जलकर शरीर छोड़ा।

उपसंहार के रूप में कवि ने बताया कि यह कथा पहले 'हिन्दुई' में थी, फिर उसे किसी ने तुर्की में भी किया था, उसने उसी का आशय अपने शब्दों में स्पष्ट करने का प्रयास किया है। सं0 1560 में उसने इस चौपई–बंध काव्य की रचना की। भाद्रपद के बहिले (बहिर्गत) पक्ष की चतुर्दशी और सिंह राशि उस दिन थी (जब रचना पूरी हुयी)। इसमें (उसके अनुसार) षड्भाषा काव्य (भी) है और किसी पंडित की सहायता के बिना उसका अर्थ समझना कठिन होगा। रचना के अन्तिम छन्द में कवि ने ईश्वर का स्मरण करने का उपदेश किया है।"[46]

मधुमालती– कवि मंझन कृत मधुमालती की मूल कथा का आरम्भ छन्द 44 से होता है और उसके पूर्व के छन्द इस काव्य ग्रन्थ की प्रस्तावना के रूप में समझे जा सकते हैं। प्राचीन काल में कनैगिरि गढ़ नामक एक सुन्दर नगर था और वहाँ का राजा सूरजभान था। उसकी पत्नी का नाम कमला था किन्तु दुर्भाग्य से इस

राजा के यहाँ कोई सन्तान नहीं हुयी थी। निःसन्तान होने के कारण राजा और रानी प्रायः चिन्तित रहते थे। तभी उनके नगर में एक महान तपस्वी आया और कनैगिरि के राजा सूरजभान ने बारह वर्षों तक उसकी सेवा की। राजा की इस सेवा से प्रसन्न होकर उस तपस्वी ने ज्यौनार करके एक पिण्ड राजा को दिया। राजा ने वह पिण्ड अपनी पत्नी कमला को दिया जिसके फलस्वरूप रानी कमला ने दसवें महीने में एक सुन्दर बालक को जन्म दिया। इस बालक का नाम मनोहर रखा गया। राजा ने ज्योतिषियों से उस बालक के भविष्य के सम्बन्ध में पूछा। ज्योतिषियों ने यह भविष्य वाणी की कि चौदह वर्ष और ग्यारह मास की आयु में बालक मनोहर को वियोग होगा और वह एक वर्ष तक योगी के रूप में भटकता रहेगा। राजा ने पाँचवे वर्ष में मनोहर को विद्याध्ययन के लिये भेज दिया और बारह वर्ष की आयु तक पहुँचते–पहुँचते मनोहर सारी विद्याओं में निष्णात हो गया। जब राजकुमार मनोहर चौदह वर्ष ग्यारह मास का हुआ, ज्योतिषियों की भविष्यवाणी अपना फल लायी और उस दिन उस नगर में कुछ नर्तक आये तथा मनोहर आधी रात तक उनका नृत्य देखता रहा। बाद में जब वह सोया तो अप्सराओं ने उसकी शैय्या सहित उसे वहाँ से उठाया और महारस नगर के राजा विक्रमराज की कन्या मधुमालती की शैय्या के पास सुला दिया। अप्सरायें बाटिका विहार के लिए चली गयी। प्रातः होने पर जब मनोहर की निद्रा टूटी तो उसने अपने पास वाली शैय्या पर एक अपूर्व सुन्दरी सोती हुयी पायी। इस सुन्दरी को देखकर मनोहर के हृदय में पूर्व जन्म का प्रेम अंकुरित हो गया। मनोहर उस सुन्दरी के अंग–प्रत्यंग के सौन्दर्य को निहारने लगा और मन में सोचने लगा कि वह व्यक्ति धन्य होगा जिसका विवाह इस सुन्दर कन्या से होगा। तभी वह सुन्दरी भी जाग गयी और जब उसने पास वाली शैय्या पर

एक सुन्दर राजकुमार को सोते हुऐ देखा तो वह स्तम्भित रह गयी तथापि उसने धैर्य बनाए रखा और राजकुमार से परिचय पूछा। राजकुमार ने अपना परिचय दिया और सुन्दरी का परिचय पूछा। इस प्रकार दोनों का एक दूसरे से परिचय हो गया। राजकुमार उस सुन्दरी के प्रेम में इतना लिप्त हो गया कि वह अचेत होकर सुन्दरी के चरणों में गिर पड़ा। राजकुमारी ने उसे सचेत किया और साथ ही उससे अचेत होने का कारण पूछा। राजकुमार मनोहर ने अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि वह सृष्टि के आरम्भ से ही तथा पूर्व जन्मों में भी उसका अर्थात् सुन्दरी के प्रेम में डूबा रहा है। तभी राजकुमार को भी अपने पूर्वजन्म के प्रेम–संस्कारों का स्मरण हो आया और फिर दोनों ने आजीवन प्रेमपाश में बंधे रहने की शपथ खायी। दोनों पुनः निद्रामग्न हो गए और फिर उन अप्सराओं ने मनोहर को पुनः उसके मूल स्थान पर लाकर सुला दिया।

जब राजकुमारी की निद्रा टूटी तो उसने देखा कि राजकुमार वहाँ नहीं था। वह दुःखी हो गयी और जब सखियों ने उसके दुख का कारण पूछा तो उसने सारा वृतान्त कह सुनाया। सखियों ने उसे धैर्य बंधाया। दूसरी ओर जब मनोहर जागा तो वह भी मधुमालती के वियोग में व्याकुल हो उठा। राजकुमार की धाय सहजा ने उसकी व्याकुलता का कारण पूछा तो राजकुमार ने रात की सारी बात कह सुनायी। सहजा ने राजा और रानी को सारी स्थिति से अवगत करा दिया। फलतः वैद्यों को बुलाया गया किन्तु कोई भी वैद्य मनोरह की व्याधि दूर नहीं कर सका। अन्ततः राजा का महामात्य आया और उसने राजकुमार को प्रेम से विमुख करने का पूरा प्रयत्न किया किन्तु उसे सफलता नहीं मिली। फिर महामात्य ने राजा के समक्ष अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। मनोहर ने अपनी प्रिया को ढूँढ़ने के लिए आज्ञा माँगी।

मनोहर के इस दृढ़ निश्चय को सुनकर सारे लोग दुःखी हो उठे किन्तु मनोहर अपने निश्चय पर अडिग था। अन्ततः राजा ने मनोहर को अनुमति दे दी किन्तु उसकी रक्षा के लिए अनेक सैनिक, घोड़े और हाथी आदि साथ भेज दिये। मनोहर ने एक योगी का वेश धारण कर लिया। इस प्रकार यह विशाल दल मनोहर के साथ मधुमालती की खोज में निकल पड़ा। एक दिन ये सभी लोग एक विशाल समुद्र के किनारे पर पहुँच गए और फिर उन्होंने जहाजों पर अपनी यात्रा आरम्भ की। चार महीने तक ये लोग समुद्र में यात्रा करते रहे। एक दिन समुद्र में भयकर तूफान आ गया और जहाज के नाविक आदि को दिशा का ज्ञान नहीं रहा। फलतः वह जहाह एक गहरे भंवर में फँस गया और टूट कर समुद्र में डूब गया। राजकुमार मनोहर किसी तरह एक लकड़ी के तख्ते के सहारे अपने प्राणों की रक्षा कर पाया। तैरते–तैरते राजकुमार समुद्र के दूसरे किनारे तक पहुँच गया जहाँ उसे एक वन दिखायी दिया। उसने पुनः वन में यात्रा आरम्भ कर दी। वन में चलते–चलते उसे एक स्थान पर एक चौखण्डी दिखायी दी और जब राजकुमार ने उस चौखण्डी में प्रवेश किया तो वहाँ उसे एक अत्यन्त सुन्दर युवती सोती हुयी मिली। इस सुन्दर युवती को देखते ही मनोहर के मन में प्रेम–भाव जागृत हो गया। जब वह युवती जागी तो उसने अपने निकट राजकुमार को देखा और वह आश्चर्य में पड़ गयी। उस युवती से पूछने पर राजकुमार को यह पता चला कि वह चित्त–विश्राम नगर के राजा की एक मात्र सन्तान है और जब वह एक दिन लक्षाराम (एक लाख वृक्षों वाला बाग) में भ्रमण कर रही थी तभी एक क्रूर राक्षस उसे बलपूर्वक यहाँ ले आया और वह पिछले एक वर्ष से घोर यातना सहन कर रही है। उसने अपना नाम प्रेमा बताया। इस सुन्दर युवती की दुखभरी कथा सुनकर राजकुमार मनोहर दुखी हो गया।

राजकुमारी प्रेमा ने भी मनोहर से अपनी सारी कथा सुनाने का आग्रह किया। जब मनोहर ने अपनी सारी कथा राजकुमारी को सुनायी तो उसने कहा– "हे राजकुमार, अब आप अपने लक्ष्य के बहुत निकट पहुँच गये हैं क्यों कि मधुमालती के साथ मेरा बहन का सम्बन्ध है और वह प्रति माह चार बार हमारे घर आती है।" प्रेमा के कहने पर मनोहर ने उस राक्षस का वध करने का निश्चय किया जिसने प्रेमा को अपने यहाँ बन्दी बना रक्खा था। घोर युद्ध हुआ तथा मनोहर उस राक्षस को मारने में सफल हुआ। राक्षस को मारने के पश्चात प्रेमा राजकुमार मनोहर को अपने साथ चित्र–विश्राम निगर में ले गयी। प्रेमा को देखकर उसके माता–पिता और राज्य के सभी लोग बहुत प्रसन्न हुए। सारे राज्य में हर्ष की लहर दौड़ गयी और जब वहाँ के राजा को यह पता लगा कि मनोहर ने ही राक्षस का वध करके प्रेमा को मुक्त कराया है तो मनोहर को बहुत सम्मान दिया गया और उसके रहने–सहने की बहुत अच्छी व्यवस्था की गयी। प्रेमा के पिता ने तो यहाँ तक सोचा कि मनोहर के साथ प्रेमा का विवाह कर दिया जाये किन्तु मनोहर ने स्पष्टतः यह बता दिया कि प्रेमा को तो वह अपनी बहिन समझता है अतः उसके साथ विवाह का प्रश्न ही नहीं उठता।

राजकुमार मनोहर का मन पुनः मधुमालती के विरह में व्याकुल हो उठा तो प्रेमा ने उसे धैर्य बँधाते हुए कहा– "धैर्य रखो, द्वितीया को मधुमालती यहीं आयेगी और तब तुम उसके दर्शन कर सकोगे।" द्वितीया को मधुमालती प्रेमा के यहाँ आयी। प्रेमा ने उसे राक्षस से अपनी मुक्ति की सारी कथा सुनायी और साथ ही मनोहर की विरह–व्यथा का भी वर्णन किया। मधुमालती ने आरम्भ में तो अपने प्रेम–सम्बन्ध को छिपाने का यत्न किया किन्तु जब प्रेमा ने मधुमालती द्वारा मनोहर को दी हुयी मुद्रिका

दी तो उसे अपने प्रणय–सम्बन्ध को स्वीकार करना पड़ा। प्रेमा से यह सारा वर्णन सुनकर मधुमालती के अन्तर्मन में दबी हुयी प्रेम–भावना बलवती हो गयी और वह मनोहर से मिलने के लिए व्याकुल हो उठी। प्रेमा उसे निकट ही चित्रसारी में ले गयी और इस प्रकार मनोहर और मधुमालती का मिलन सम्भव हो गया। दोनों ही प्रेमपाश में ऐसे बँध गये कि उन्हें किसी भी तरह की सुधि नहीं रही। तब प्रेमा ने वहाँ एक रेशमी परदा डाल दिया और स्वयं प्रहरी की तरह खड़ी हो गयी। जब मधुमालती बहुत देर तक वापिस नहीं आयी तो उसकी माता रूप मंजरी व्याकुल हो उठी और उसे ढूँढ़ती हुयी वह स्वयं वाटिका में आ पहुँची। जव रूपमंजरी चित्रसारी में पहुँची और उसने एक ही शैय्या पर उपस्थित मधुमालती और मनोहर को देखा तो वह क्रोध से पागल हो उठी और उसने प्रेमा को अत्यन्त कटु वचन कहे। प्रेमा ने मधुमालती और मनोहर की प्रेम–कथा का वर्णन किया किन्तु रूपमंजरी का क्रोध शान्त नहीं हुआ। रूपमंजरी ने क्रुद्ध होकर राजकुमार को उसके देश वापिस भिजवा दिया। जब राजकुमार की निद्रा टूटी तो उसने मधुमालती को वहाँ नहीं पाया। वह अत्यन्त दुखी हो गया और पुनः मधुमालती की खोज में निकल पड़ा। उधर मधुमालती की भी ऐसी ही स्थिति थी। वह मनोहर के वियोग में घुलती रही। जब रूपमंजरी के बहुत कहने–सुनने पर भी मधुमालती नहीं मानी तो रूपमंजरी ने श्राप देकर उसे चिड़िया बना दिया। चिड़िया के रूप में मधुमालती अपने प्रियतम मनोहर की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाती रही किन्तु दुर्भाग्य से उसे प्रियतम के दर्शन कहीं नहीं हो सके। एक दिन जब चिड़िया रूपी मधुमालती मानबढ़ में पद्मनगरी में पहुँची तो उसने मनोहर जैसी मुखाकृति का एक अन्य राजकुमार देखा। इस राजकुमार का नाम ताराचन्द था। राजकुमार भी इस सुन्दर पक्षी को देखकर मुग्ध

हो गया और उसने उसे बन्दी बनाकर एक सोने के पिंजरे में रख लिया। इस पक्षी ने तीन दिन तक अन्न अथवा जल ग्रहण नहीं किया। तब राजकुमार ताराचन्द ने इस पक्षी से अन्न अथवा जल ग्रहण न करने का कारण पूछा और फिर उस चिड़िया रूपी मधुमालती ने अपनी सारी विरह कथा ताराचन्द को सुना दी। चिड़िया के रूप में मधुमालती की सारी कथा सुनकर ताराचन्द का हृदय द्रवित हो उठा और उसने मन ही मन यह निश्चय कर लिया कि जब तक वह मधुमालती को उसके प्रियतम मनोहर से नहीं मिला देगा तब तक वह शान्ति के साथ नहीं बैठेगा। फलतः ताराचन्द कुछ संगी साथियों को लेकर महारस नगर की ओर चल पड़ा। महारस नगर पहुँच कर ताराचन्द को वहाँ बहुत सम्मान मिला और जब वहाँ की रानी ने, अपनी पुत्री मधुमालती की यह दशा देखी तो उसने मन्त्र पढ़कर उसे चिड़िया को सुन्दर युवती का रूप दे दिया। महारस नगर के राजा–रानी मधुमालती का विवाह ताराचन्द से करने के लिये तैयार हो गये। ताराचन्द ने स्पष्टतः कह दिया कि मधुमालती तो उसकी बहिन की तरह है अतः उसके साथ विवाह का प्रश्न ही नहीं उठता।

माता रूपमंजरी अपनी पुत्री मधुमालती की इस विरह वेदना से द्रवित हो उठी और अन्ततः उसने भी मनोहर का पता लगाने का निश्चय किया। मधुमालती के माता–पिता ने मनोहर की खोज आरम्भ की और प्रेमा को भी इसी आशय का एक पत्र लिखा। प्रेमा इस पत्र को पाकर और मधुमालती की विरह–व्यथा को जानकर बहुत दुखी हो उठी। उसे इस बात का पूरा ज्ञान नहीं था कि राजकुमार मनोहर जीवित है अथवा नहीं। फिर भी उसका दृढ़ विश्वास था कि यदि राजकुमार जीवित है तो एक न एक दिन वह अवश्य ही उससे अर्थात् प्रेमा से मिलने आयेगा। तभी प्रेमा की एक सखी ने एक योगी के आगमन की सूचना दी। वह योगी और कोई

नहीं स्वयं राजकुमार मनोहर था, जिसे पहचान कर प्रेमा दौड़ पड़ी और उससे गले मिली। प्रेमा ने रूपमंजरी और मधुमालती को मनोहर की कुशलता का समाचार भेज दिया और इस प्रकार महारस नगर में एक बार फिर हर्ष का वातावरण छा गया। सभी ओर से प्रसन्नता छा गयी और मधुमालती के माता–पिता ने शीघ्रातिशीघ्र राजकुमार मनोहर को महारस नगर लिवा ले जाने का निश्चय किया। महारस नगर के राजा–रानी अपने दल–बल सहित दस दिन की यात्रा तय करके चित्त–विश्राम नगर पहुँच गए। वहाँ के राजा चित्रसेन ने स्वयं महारस नगर के राजा रानी आदि का स्वागत किया। तदुपरान्त मनोहर और मधुमालती के विवाह का शुभ मुहूर्त निकाला गया और फिर निश्चित तिथि को राजा चित्रसेन बारात लेकर महारस नगर पहुँचे। निश्चित तिथि को मधुमालती और मनोहर का विवाह अत्यन्त धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। मनोहर और मधुमालती दोनों ताराचन्द के प्रति बहुत कृतज्ञ थे क्योंकि उसी के प्रयासों के कारण इन दोनों का मिलन सम्भव हो पाया था। इस प्रकार ताराचन्द भी मनोहर और मधुमालती के साथ ही रहने लगा। एक दिन मनोहर और उसका मित्र ताराचन्द आखेट के लिये वन को चल पड़े। जब वे वापिस लौटे तो घर में मधुमालती और प्रेमा में से कोई नहीं थी फलतः मनोहर और ताराचन्द मधुमालती और प्रेमा को खोजते–खोजते चित्रसारी में पहुँचे। उस समय प्रेमा झूले में बैठी हुई पैंगे बढ़ा रही थी जिसे देखकर ताराचन्द मूर्छित हो गया। तब मधुमालती ने ताराचन्द के उपचार के लिए राज्य के वैद्यों को बुलाया जिन्होंने तत्काल यह बता दिया कि ताराचन्द को केवल प्रेम का ही रोग है। जब ताराचन्द की चेतना लौटी तो उसने मधुमालती को यह बता दिया कि जिस युवती के प्रेम में वह मूर्छित हो गया था, उसका नाम उसे पता नहीं है। तथापि उसने मधुमालती को अपनी प्रियतमा के

नखशिख आदि का विवरण बताया जिससे मधुमालती को यह समझने में तनिक भी कठिनायी नहीं हुयी कि ताराचन्द्र वस्तुतः प्रेमा के सौन्दर्य पर आसक्त हो गया है। मधुमालती ने मनोहर को सारी घटना बता दी। मनोहर ने इस विषय में प्रेमा के पिता राजा चित्रसेन से चर्चा की जिन्होंने तत्काल इस विवाह–प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार ताराचन्द और प्रेमा का भी विवाह बहुत धूमधाम के साथ सम्पन्न हो गया। विवाहोपरान्त ताराचन्द और प्रेमा ने रात्रि को सुख शैय्या का पूरा लाभ उठाया। ये दोनों मित्र अपनी पत्नियों सहित वर्षा ऋतु तक इकट्ठे रहे और वर्षा ऋतु के पश्चात् दोनों ने अपने–अपने देशों को जाने का निश्चय किया। राजा चित्रसेन ने भी सहर्ष अपनी स्वीकृति दे दी और उधर मधुमालती के पिता राजा विक्रमराज को भी सूचना भिजवा दी गयी। राजा विक्रमराज ने अपनी पुत्री और दामाद को अथाह दहेज आदि दिया। इसी प्रकार राजा चित्रसेन ने भी अपनी पुत्री प्रेमा को विदा करने की व्यवस्था की। अन्ततः इन दोनों नव–दम्पत्तियों की विदाई का समय आ पहुँचा। दोनों राजा और रानियों ने अपनी अपनी पुत्रियों को सहर्ष विदा किया।

दोनों राजकुमारों ने चार पड़ावों तक एक साथ यात्रा की और इसके पश्चात् वे दोनों अपने–अपने देश जाने के लिए विदा हो गये। इसी प्रकार उन की पत्नियों ने भी एक दूसरे से विदायी ली और दोनों दम्पतियाँ अपने–अपने देश के लिए चल पड़े। ताराचन्द तो मानगढ़ पहुँचा और मनोहर लगभग दो वर्ष बाद कनैगिरि पहुँचा। मार्ग में मनोहर को ज्ञात हुआ कि उसके पिता की दशा चिन्ताजनक है। मनोहर को देखकर उसके माता–पिता अत्यन्त प्रसन्न हुए क्योंकि उन्हें अपने एकमात्र पुत्र के दर्शन बहुत दीर्घकाल के पश्चात् हुए थे। सभी और से बधाइयों के सन्देश आने

लगे और सारे राज्य मे हर्षोत्सव मनाये गये। सभी ओर प्रसन्नता और हर्ष का वातावरण छा गया। इस प्रकार अन्ततः राजा–रानी अपने पुत्र मनोहर और पुत्रवधु मधुमालती के साथ प्रसन्नतापूर्वक रहने लगे। सारे राज्य में हर्ष का वातावरण छा गया।

इस प्रेम कथा का उपसंहार करते हुए कवि मंझन प्रेम–तत्त्व के प्रित अपनी गहन आस्था व्यक्त करते हुए कहता है कि प्रेम ही वह तत्त्व है जो मनुष्य की आत्मा के समस्त मालुष्य को धोकर उसे उज्ज्वल और निर्मल रूप प्रदान करता है। कवि की यह दृढ़ धारणा है कि इस संसार में वही अमरत्त्व को प्राप्त होता है जो प्रेम के मार्ग पर चलकर अपने सर्वस्व को न्यौछावर कर देता है। अमरत्व प्राप्त करने का एक मात्र मार्ग प्रेम का मार्ग है। जो भी व्यक्ति प्रेम की अग्नि का ताप एक बार सहन कर लेता है, उसके लिए मृत्यु का भय नहीं रहता। कवि का दृढत्र विश्वास है कि प्रेम की शरण में जाकर ही मनुष्य काल पर विजय पा सकता है और कदाचित् इसलिए कवि मंझन प्रेम को अमृतमय मानते है। जिसका पान करके मनुष्य को किसी भी प्रकार का भय नहीं रह जाता। कवि मनुष्य को सम्बोधित करते हुए कहता है कि "हे जीव, यदि तुझे मृत्यु का भय लगता है तो प्रेम–तत्त्व की शरण में चला जा। वहाँ जाकर तुझे किसी प्रकार का भय नहीं रह जायेगा।"[47]

चित्रावली– नैपाल के राजा धरणीधर निसंतान होने के कारण अत्यन्त खिन्न रहा करते थे। उनके मन में राज्य एवं जीवन के प्रति प्रबल वैराग्य का भाव उत्पन्न हो गया था और वह अपने मन्त्रियों से परामर्श करके अपनी सम्पत्ति दान करते रहते थे, यहाँ तक कि इन्होंने अपना राजपाट मन्त्रियों को सोंपकर संयास लेने का निश्चय कर लिया, परन्तु मन्त्रियों ने इन्हें ऐसा नहीं करने दिया। पुत्र प्राप्ति के लिए

इन्होंने शिव–पार्वती की आराधना की जिनकी कृपा से उन्हें सुजान नामक एक पुत्र प्राप्त हुआ। शंकर भगवान ने राजा धरणीधर को पुत्र–प्राप्ति का वरदान देते समय यह भी आशीर्वाद दिया था कि तेरा पुत्र आगे चलकर यशस्वी, प्रतापी, गुणवान एवं सुयोग्य शासक बनेगा। परन्तु वह किसी युवती के अगाध प्रेम में निबद्ध होकर अनेक कष्टों और विरह–पीड़ा को सहता हुआ योग और वैराग्य का मार्ग ग्रहण करेगा। वह अपनी प्रेयसी को प्राप्त करने अपने घर आएगा तथा आपके द्वारा राज्य करके जीवन में खूब सुख भोगेगा। कुमार सुजान एक दिन शिकार खेलते हुए रास्ता भूल गया। अंधेरा पड़ जाने के कारण वह पर्वत के ऊपर बनी एक मढ़ी में जाकर सो गया। वह मढ़ी एक देव का निवास–स्थान थी। देव ने आकर जब सोते हुए राजकुमार को देखा तो उसने उसको निराश्रित अतिथि समझकर उसकी रक्षा का भार स्वीकार कर लिया। एकाएक देव का एक मित्र आया और उसने रूपनगर की राजकुमारी की वर्षगांठ का उत्सव देखने के लिए चलने का आग्रह करने लगा। देव व उसके मित्र ने निश्चय किया कि वे सोये हुए राजकुमार को सुप्तावास्था मे अपने साथ ले चलें और प्रातःकाल होने के पूर्व उसे सुप्तावास्था में ही यहाँ लौटा लाए। अन्य कोई उपयुक्त स्थान न देखकर देवों ने कुमार को राजकुमारी चित्रावली की चित्रसारी में ले जाकर रखा और आप उत्सव देखने लगे। उधर देव उत्सव देखने गये और इधर राजकुमार की नींद टूट गयी। अपने आपको एक नयी एवं खूब अच्छी तरह सुसज्जित स्थान पर पाकर राजकुमार के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। वहाँ उसने राजकुमारी चित्रावली का एक चित्र टंगा हुआ देखा जिस पर वह आसक्त हो गया। संयोग से उसने वहीं एक और चित्र बनाने की साम्रगी देखी। उसने रंगादि लेकर अपना एक चित्र बनाया और उसको राजकुमारी के चित्र के समीप रख दिया और

सो गया। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार देव उसको लेकर मढ़ी में आए। जागने पर कुमार को चित्रावली की चित्रसारी की घटना स्वप्न की मालूम हुयी पर अपने हाथ में रंग लगा हुआ देखकर उसके मन में घटना के सत्य होने का निश्चय हुआ और चित्र की राजकुमारी चित्रावली के प्रेम में विकल हो गया। राजकुमार के ठीक समय पर घर न पहुँचने के कारण राजा धरणीधर चिन्तित हुए और उन्होंने राजकुमार को खोजने के लिए आदमी भेजे। वे खोजिए राजकुमार लेकर घर आए। घर आकर भी राजकुमार का मन विरहाकुल एवं खिन्न बना रहा। अन्ततः उसने 'सुबुद्धि' विद्याधर नामक ब्राह्मण मित्र को अपनी मनोव्यथा का कारण बता दियां अपने मित्र सुबुद्धि के साथ वह फिर देव के मढ़ी में गया और वहाँ उसने बड़ा भारी अन्नसत्र खोल दिया। सुबुद्धि निरन्तर इस प्रयत्न में लगा रहा कि वह रहस्य को जान सके। उधर अपनी चित्रसारी में राजकुमार का चित्र देखकर चित्रावली उस पर मोहित हो गयी। उसने अपने नपुंसक भृत्यों को, जोगियों के वेश में राजकुमार का पता लगाने के लिए भेजा। एक कुटीचर ने राजकुमारी की माँ हीरा से राजकुमारी के चित्र–प्रेम की बात जड़ दी, माँ ने राजकुमार के चित्र को धुलवा दिया। राजकुमारी ने जब यह सुना तो उसने उस कुटीचर का सिर मुंड़ाकर उसको देश–निकाला दे दिया।

कुमारी द्वारा भेजे गये जोगीरूप भृत्यों में से एक राजकुमार के अन्नसत्र तक पहुँचा और राजकुमार को अपने साथ रूपनगर ले आया। उस भृत्य द्वारा की गयी व्यवस्था से एक शिवमन्दिर में राजकुमारी और राजकुमार का साक्षात्कार हुआ। पर ठीक इसी अवसर पर कुटीचर ने राजकुमार को अंधा कर दिया और एक गुफा में डाल दिया जहाँ उसे एक अजगर निकल गया, पर उसके विरह की ज्वाला से घबराकर उसने उसे चट उगल दिया। वहीं पर एक वनमानुष ने उसे एक अंजन

दिया जिससे उसकी दृष्टि फिर ज्यों–की–त्यों हो गयी। राजकुमार जंगल में घूम रहा था कि उसे एक हाथी ने पकड़ लिया। उस हाथी को एक पक्षिराज ले उड़ा और उसने घबराकर राजकुमार को समुद्र तट पर गिरा दिया। वहाँ से घूमता–फिरता कुमार सागरगढ़ नामक नगर में पहुँचा और सागरगढ़ की राजकुमारी कंवलावती की फुलवारी मे विश्राम करने लगा। राजकुमारी सखियों के साथ फुलवारी में आयी और वहाँ बैठे हुए कुमार को देखकर उस पर मोहित हो गयी। राजकुमारी ने जोगी वेषधारी कुमार सुजान को भोजन के बहाने अपने यहाँ बुलवाया। भोजन में कुमारी ने अपना हार छिपा दिया और इस प्रकार चोरी के अपराध में राजकुमार को कैद करवा लिया। इसी बीच में सोहिल नाम का कोई राजा कंवलावती के रूप की प्रशंसा सुनकर उसको प्राप्त करने की इच्छा से रूपनगर पर चढ़ गया। सुजान कुमार ने उसको हराकर भगा दिया। इससे प्रसन्न होकर 'सागर' राजा ने उसके साथ अपनी कन्या कौलावती का विवाह कर दिया। सुजान ने कंवलावती को लेकर कुमार गिरनार की यात्रा के लिए निकल गया। गिरनार में चित्रावली द्वारा भेजे हुए एक जोगी–पूत ने उसे पहचान लिया। उसने चित्रावली को जाकर सब संवाद दिया और पुनः चित्रावली का पत्र लेकर लौटा और सागरगढ़ में धूनी लगाकर बैठा। उस जोगी की सिद्धि सुनकर कुमार सुजान उसके पास आया और उसको जानकर उसके साथ रूपनगर आया और वहाँ नगर की सीमा पर बैठकर चित्रावली के नाम की रट लगाता हुआ उससे मिलन के लिए साधना करने लगा। इसी समय राजा चित्रसेन सागरगढ़ के एक कथक से 'सोहिल' के युद्ध गान की चर्चा सुनकर अपनी कन्या चित्रावली के विवाह के लिए चिन्तित हो उठा। राजा ने चार चित्रकारों को भिन्न–भिन्न देशों के राजकुमारों के चित्र लाने को भेजा। इसी बीच चित्रावली का दूत राजकुमार सुजान के आने

का समाचार लेकर रूपनगर पहुँचा, और उसको एक जगह बैठाकर उसके आने का समाचार राजकुमारी को देने आ रहा था। एक दासी ने द्वेषवश यह समाचार रानी को बता दिया। रानी की आज्ञा से वह दूत मार्ग में ही कैद कर लिया गया। दूत के लौटकर न आने पर कुमार सुजान बहुत व्याकुल हो गया और चित्रावली का नाम ले–लेकर पुकारने लगा। राजा चित्रसेन अपने अपयश के भय से राजकुमार को हाथी से मरवाने का प्रयत्न करता है, परन्तु राजकुमार हाथी को मार देता है। तब राजा चित्रसेन स्वयं उसे मारने के लिए अद्यत होता है। परन्तु इसी समय चित्रकारों में से एक चित्रकार सागरगढ़ से सोहिल के मारने वाले पराक्रमी सुजान कुमार का चित्र लेकर आ पहुँचा। राजा ने जब यह देखा कि चित्रावली का प्रेमी ही वह सुजान कुमार है जिसने सोहिल को मारा था, तो वह सुजान की आवभगत करने लगा और उसने सुजान के साथ अपनी कन्या चित्रावली का विवाह कर दिया। सुजान और चित्रावली पति–पत्नी के रूप में रूपनगर रहने लगे। उधर सागरगढ़ की राजकुमारी 'कौलावती' सुजान के विरह में व्याकुल रहने लगी। उसने राजकुमार के पास हंस मिश्र को दूत बनाकर भेजा जिसने भ्रमर की अन्योक्ति द्वारा कुमार को कंवलावती के प्रेम का स्मरण कराया। इस पर सुजान कुमार ने चित्रावली के साथ राजा चित्रसेन से विदा ली और स्वदेश की ओर प्रस्थान किया और मार्ग में कंवलावती को भी साथ ले लिया। मार्ग में सागर में तूफान आया और वह किसी प्रकार जगन्नाथपुरी पहुँच गया। वहाँ केशी पाँड़े नामक पुरोहित से उसकी भेंट हुयी। अनेक यातनाओं को सहन करने के बाद राजकुमार सुजान अपनी दोनों पत्नियों के साथ अपने घर नैपाल पहुँचा। पिता ने अपने पुत्र और पुत्र–बधुओं के आगमर पर राज्यव्यापी हर्षोल्लास मनाया। 'सुजान' की माँ जो पुत्र वियोग में अंधी हो गयी, पुनः अपनी

आखों में दृष्टि से युक्त हुयी। राजा धरणीधर ने अपने पुत्र सुजान को राजगद्दी सौंप दी और स्वयं तप करने लगे। राजकुमार सुजान ने दोनों पत्नियों सहित बहुत दिनों तक सुखपूर्वक राज्य किया।''[48]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा ह कि 'कवि ने इस रचना में जायसी का पूरा अनुकरण किया है। जो विषय जायसी ने अपनी पुस्तक में रखे हैं उन विषयों पर उसमान ने भी कुछ कहा है। कहीं कहीं तो शब्द और वाक्यविन्यास भी वही हैं। पर विशेषता यह है कि कहानी विलकुल कवि की कल्पित है।''[49]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– सूफीमत कैन्हया सिंह, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्र0 सं0 1998, पृ0 31

2–चित्रावली, व्याख्याकार–डॉ राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, रीगल बुक डिपो दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986, पृष्ठ स0 31

3– चित्रावली, व्याख्याकार–डॉ राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, रीगल बुक डिपो दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986, पृष्ठ स0 31

4–हिन्दी साहित्य का आलोनात्मक इतिहास, डॉ0 रामकुमार वर्मा, पृ0 284

5–सूफीमत कैन्हया सिंह, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्र0 सं0 1998, पृ0 34

6– सूफी काव्य संग्रह, सम्पादक– आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ0 34

7–सूफी काव्य संग्रह, सम्पादक– आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ0 36

8–सूफी काव्य संग्रह, सम्पादक– आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ0 34

9– चित्रावली, व्याख्याकार–डॉ राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, रीगल बुक डिपो दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986, पृष्ठ स0 34

10–हिन्दी साहित्य का आलोनात्मक इतिहास, डॉ0 रामकुमार वर्मा, पृ0 285

11–हिन्दी साहित्य का आलोनात्मक इतिहास, डॉ0 रामकुमार वर्मा, पृ0 285

12–हिन्दी साहित्य का आलोनात्मक इतिहास, डॉ0 रामकुमार वर्मा, पृ0 286

13–हिन्दी साहित्य का आलोनात्मक इतिहास, डॉ0 रामकुमार वर्मा, पृ0 289

14– रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा,

कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983–85, पृ0 स0 10

15–अग्नि पुराण गीताप्रेस गोरखपुर

16– रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983–85, पृ0 स0 10

17– रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983–85, पृ0 स0 10

18– रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983–85, पृ0 स0 14

12– काव्य के रूप, गुलाबराय, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली, पृ0 14

20– आधुनिक आलोचना और साहित्य, सीताराम जायसवाल, सरस्वती मंदिर, जतनबर बनारस, प्र0 स0 1951, पृ0 21

21– रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983–85, पृ0 स0 14

22– रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983–85, पृ0 स0 14

23– रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983–85, पृ0 स0 14

24– आधुनिक आालोचना और साहित्य, सीताराम जायसवाल, सरस्वती मन्दिर जतनबर बनारस, प्रथम संस्करण–1951, पृ0 सृ0 8

25– आधुनिक आालोचना और साहित्य, सीताराम जायसवाल, सरस्वती मन्दिर जतनबर बनारस, प्रथम संस्करण–1951, पृ0 सृ0 10

26– आधुनिक आालोचना और साहित्य, सीताराम जायसवाल, सरस्वती मन्दिर जतनबर बनारस, प्रथम संस्करण–1951, पृ0 सृ0 13

27– रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983–85, पृ0 स0 19

28–रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983–85, पृ0 स0 20

29– रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983–85, पृ0 स0 20

30– रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983–85, पृ0 स0 20

31– रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983–85, पृ0 स0 21

32– रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983–85, पृ0 स0 21

33– भारतीय संस्कृति का विकास, सत्यकेतु विद्यालंकार, श्री सरस्वती सदन नई दिल्ली, सातवाँ संस्करण, पृ0 17

34– हिन्दू संस्कार, डा0 राजबली पाण्डेय, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, पंचम संस्करण,

35– साहित्य–सिद्धान्त, डॉ राजअवध द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा– परिषद् पटना, द्वितीय संस्करण–1983, पृ0 स0 48

36– साहित्य–सिद्धान्त, डॉ राजअवध द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा– परिषद् पटना, द्वितीय

संस्करण—1983, पृ0 स0 48

37— साहित्य—सिद्धान्त, डॉ राजअवध द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा— परिषद् पटना, द्वितीय संस्करण—1983, पृ0 स0 48

38— साहित्य—सिद्धान्त, डॉ राजअवध द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा— परिषद् पटना, द्वितीय संस्करण—1983, पृ0 स0 48

39— साहित्य—सिद्धान्त, डॉ राजअवध द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा— परिषद् पटना, द्वितीय संस्करण—1983, पृ0 स0 49

40—रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983—85, पृ0 स0 112

41— रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983—85, पृ0 स0 112

42— रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983—85, पृ0 स0 111

43— रस अलंकार और छन्द, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्वत, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, कैलाश प्रकाशन कल्यानी देवी इलाहाबाद, संस्करण 1983—85, पृ0 स0 115

44— हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ0 नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स दिल्ली, 28 वाँ संस्करण, पृ0 164

45— भारतीय प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा और दाउदकृत चांदायन, डॉ0 बैकुण्ठ राय, साहित्य रत्नाकर रामबाग कानपुर, प्रथम संस्करण— 1990, पृ0 सं0 76

46— कुतुबन कृत मृगावती, सम्पादक माता प्रसाद गुप्त, प्रामाणिक प्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण जनवरी 1968, पृ0 9 से 17 तक।

47– मंझन कृत मधुमालती सम्पादक डा0 शिवगोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

48– कवि उसमान कृत चित्रावली, व्याख्याकार डॉ0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, रीगल बुक डिपो, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ0 9 से 13 तक।

49– हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली, पृ0 92

अध्याय 2

वस्त्रालंकारिक शब्दावली

(क) नारी–परिधान

(ख) पुरुष–परिधान

(ग) बाल–परिधान

(घ) नारियों के अलंकार

(ङ.) पुरुषों के आभूषण

(च) बालकों के आभूषण

(छ) शय्यादि से सम्बन्धित वस्त्र

अध्याय 2

वस्त्रालंकारिक शब्दावली–सूफी काव्य (प्रेम काव्य) में वस्त्र के अर्थ के रूप में अनेक शब्द प्रयुक्त हुये है। ये शब्द साधारण परिधानो के लिये आये है। इस अध्याय में हम– (क) नारी–परिधान, (ख) पुरुष–परिधान, (ग) बाल–परिधान, (घ) नारियों के अलंकार, (ड.) पुरुषों के आभूषण, (च) बालकों के आभूषण, (श) शय्यादि से सम्बन्धित वस्त्रादि का अध्ययन उक्त शीर्षको के अन्तर्गत क्रमशः चांदायन, मृगावती, मधुमालती तथा चित्रावली का वर्णन करेंगे।

(क) नारी–परिधान–

(1) चांदायन– नारी परिधान के लिए मु0 दाऊद ने अनेक शब्द प्रयुक्त किये हैं। ये शब्द साधारणतया अनेक प्रकार के परिधानों के लिये आये हैं, अथवा किसी विशेष परिधान की ओर संकेत करते हैं। मूलतः नारी परिधान के **चीरु, वस्तर सारी** तथा रंगी हुयी साड़ियों के लिए **मेघवना, कुसियारा, जुगिया, चौकड़िया, मुंगिया, छुंदरी कसुंभी,** आदि शब्दों का प्रयोग किया है।

"सिंदुरी **चीरु** काढ़ि पहिराए"[1]

x x x

"चोली **चीरु** भीजि गा पानीं"[2]

x x x

"सुनहु **चीरु** कस पहिर गोवारी"[3]

x x x

अपुरब **वस्तर** काढ़ि फिराए"[4]

x x x

'''सुनहु **चीरु** (चीर– सूती वस्त्री) कस पहिर गोवारी।

फुंदिया 'राधि सेंदुरिया' **सारी** (फुंदियों से मिली हुयी सिंदूरी रंग की साड़ी)।

'पहिर **मेघवना**' (साड़ी का एक प्रकार) अउ **कुसियारा**'(साड़ी का एक प्रकार)

जुगिया (गेरू रंग से रंगा हुआ) **चीर 'चौकड़िया** (चौकड़िया बनी हुयी) सारा।

मुंगिया 'पत्तलि (मुंगिया रंग की पतली सारी) अंग चढ़ाई।

मंडिला **छुंदरी** (चूंदरी, चुनरी) फिरि पहिनाई।

सांवन चांद '**कसुंभी**' (कुसुंभी रंग का चीर) राती।

एक खंड छाप सो '**सोह**' गुजराती। (एक खंडे छाप की गुजराती साड़ी)

'**डोरिया**' 'चंदरौटा' 'औ अबजारू'।

'साज **पटोरइ** (पट्टकूल) बहल सिंगारू।

चोला (चोली) **चीर** पहिरि जउ चाली' जानउं जाइ उड़ाई।''[5]

(2) मृगावती– कुतबुन कृत मृगावती में नारी परिधान के लिए अनेक शब्दों का प्रयोग किया है 'चीर' शब्द प्रायः साड़ी या ओढ़नी का अर्थ देता है। 'चीर' शब्द मृगावती में अनेक स्थान पर प्रयोग हुआ है। **चीर, चीरू, साड़ी** आदि शब्द साड़ी के अन्तर्गत ही आते है। यथा– जब अप्सराएँ मृगावती के साथ सरोवर में स्नान करने आयी तो राजकुमार ने दैव आदि का स्मरण करे दौड़कर मृगावती चीर चुरा लिया। दृष्ब्य है–

'''दइअ' संभरि कै निकसा धाई। **चीर** ताहि कर लीतिसि चाही।

संवरेसि सौ बुधि धांय जो कही। **चीर** लिहेसि मिरगावति रही।

उन्ह आरौ मनुसे क़र पावा, **चीर** लेइ 'कों' मकु 'कोउ' आवा।

सब आपन आपन को धाई। **चीर** लेइ कों बाहिर आईं।''[6]

x x x

केहि कारन कह **चीर** 'लुकाएहु'। सखी सेहलिन्हु साथ 'छडाएहु'।

'**चीर**' हमार देहु 'तुम्ह आनीं। जहं 'आएसु' तहं 'कौंन सयानी'।

"तोर **चीर** हौं देई न पारौं कही धाइ हम बात।

'तन मन' जीउ हमारेउ अरपउं देउं **चीर** सौ सात।।"[7]

x x x

"**चीर** हमार देहु 'कस नाहीं। 'अवर **चीर** हम पहिरि न जाहीं।"[8]

x x x

"**चीर** 'पहिरि कै वह रे' उड़ानी। धाइहि 'अचंभों कित' गइ रानी।"[9]

x x x

"**चीर** संवारिन्हि पहिरन लईं।"[10]

x x x

"पहिरहिं **चीर** (संवारहिं मांगा)।"[11]

x x x

ओहिंक **चीर** आनि पहिराए।"[12]

x x x

"पहिरे दखिन क **चीर** संवारी।"[13]

x x x

अभरन **चीर** उतारि 'धरि' पैठीं एवे अन्हाइ।"[14]

x x x

"जियं धुकधुकी आव मन भीतर 'कहिसि' **चीर** अब लेउ।"[15]

x x x

''कहिसि **चीर** कैसेहूं कै पावौं उड़ि रे इहां 'हुंत' जाउं।''[16]

x x x

'''**चीर** लुकाइ धरिहु तेहि ठांए जहं न 'पाव जन' रात।''[17]

x x x

''**चीर** 'पहिरि के वह रे उड़ानी।''[18]

x x x

'निससइ रुपमिनि रोवइ कुंअर गहा जौ **चीर**।''[19]

x x x

''लै कै **चीर** छपाइसि तहा।''[20]

x x x

'' तौ लहि **चीर** ढूंढि मैं लिया। बहुरि **चीर** धारिउं नौतिया।''[21]

x x x

''चीरु लिहेबिन ओहि न पावसि।''[22]

x x x

''ओहि के मंत्र लिहिसि हम चीरू।''[23]

मृगावती में नारी के वस्त्रों के लिए साड़ी शब्द का भी प्रयोग हुआ है। यथा–

'मिरगावतिइं न' **सारी** पाई। धाइ बहुरि पानी महं आई।''[24]

x x x

जौ लहि धाइ काज कै आई। **सारी** ढूंढि लिही 'जहं छपाई।''[25]

x x x

"**सारी** कसी रंगावलि' ठाईं।"[26]

X **X** **X**

कसी रगावलि हुंती जो **सारी**।"[27]

इसके अतिरिक्त **खीरू** (क्षीरोदक नाम का महीन वस्त्र) शब्द भी मृगावती की विशेष साड़ी के रूप में प्रयुक्त हुआ है। यथा

"मिरगावति कर 'कहु नहि' **खीरू**।"[28]

X **X** **X**

"जाइ गहहु मिरगावति **खीरू**।"[29]

इसके अतिरिक्त **घाघरा, धोती** शब्द भी प्रयुक्त हुआ है। दृष्टव्य है–

घाघर बांधि आइ पगु 'दीन्हे'।"[30]

X **X** **X**

"हाथहिं चक्र भवहिं अर **धोती**।"[31]

कुतुबन ने परिधान से सम्बन्धित अन्य शब्दों का भी प्रयोग किया हैं यथा–

"**पाट पटोर** (रेश्मी वस्त्र) **चीर** (सूती वस्त्र) बहु पाए।"[32]

X **X** **X**

"**कंचुकी** पहिरि 'सनाह' के भेसा।'[33]

X **X** **X**

कंचुकी तार तार होइ 'भांगी'।"[34]

(3) मधुमालती– अन्य कवियों की भाँति मंझन ने भी नारी परिधान के लिए **चीर, पल्लो, कंचुकि, आँचर, सारी, चोली** आदि शब्दों का प्रयोग किया है। पाणिनिकालीन चीर शब्द मंझन के काव्य में यत्र–तत्र ही प्रयुक्त हुआ है। यथा–

"औ जो अंग **चीर** गा भागी, नख रेखा जे उर कुच लागी।"[35]

x x x

"देह चतुर सम खौरि कै, **चीर** फेरि पहिराइ।"[36]

x x x

" सो अपने कर **पल्लौ** बाही।"[37]

x x x

रंग मेंहदी कर **पल्लौ** राती।"[38]

x x x

तौ नौ **पल्लौ** सिर से अनुसारे।"[39]

x x x

अजहूं पहिरि न जानौं **चोली,** अजहुं पेम रस भाव अमोली।"[40]

x x x

"**कंचुकि** कसनि उरहिं जो टूटी।"[41]

x x x

"**कंचुकि** तरकि तरकि उर फाटी।"[42]

x x x

गहि **आँचर** पोछा चखु पानी।"[43]

x x x

"जन्म गाँठि दुहुँ **आँचर** सारी।"[44]

x x x

झूलत उर **आँचर** बिहराने।"[45]

x x x

"अजहूँ पहिरि न जानौं चोली"[46]

(4) चित्रावली– चित्रावली में नारी परिधान से सम्बन्धित शब्द चीर, सारी, गुजराती सारी, चोली आदि शब्द प्राप्त हैं।

"खोंपा छोरिन सीस के गात उतारनि **चीर।**"[47]

x x x

"तीर धरिन सब **चीर** उतारी।"[48]

x x x

"तन **गुजराती चीर** अमोला"[49]

x x x

"कौंले रात **चीर** उतारा"[50]

x x x

"पहिरि **चीर** तन साँवरी भेस कीन्ह अभिसार"[51]

x x x

"चंदबदन तन चंपक **सारी**"[52]

x x x

"पहिरि अपूरब साँवरि **सारी**"[53]

x x x

"कौल पत्र तन सोंहै **सारी**"[54]

x x x

"औ तन बनि कटाव की **चोली**"[55]

(ख) पुरुष–परिधान–

(1) **चांदायन**– चांदायन में पुरुष परिधान के अन्तर्गत **कापर, बस्तर, बागा, आछा, पाट, जोगौटा, कोथी, कंथा तथा पागा** शब्द प्राप्त हैं।

"भांटन्हि **कापर** घोर देवावहि"[56]

x x x

"अपुरुब **बस्तर** काढ़ि फिराउ"[57]

x x x

"दिए असीस फिराए **बागा**"[58]

x x x

"चीर पटोर फिराए **बागा**"[59]

x x x

"मारि पबारउ जउ घरि **आछा** (धोती)"[60]

x x x

"बाधे **पाट** (पटका) जउ रे धर धरे"[61]

x x x

"चकरु **जोगौटा** (योगियों का वस्त्र) **कोथी** (थैली) **कंथा** (गूंदड़ो का वस्त्र)"[62]

x x x

"ऊपर हेर तखिसि पर **पागा**"[63]

(2) **मृगावती**– मृगावती में पुरुष परिधानों से सम्बन्धित शब्द **कापर, खीरा** (खीरोदक) **जोगौटा, बागा, कंथा** आदि शब्द प्राप्त हैं।

"नांगहि **कापर** दीन्हे आनी"[64]

x x x

"तुरिअ बांधि तरुवर सेउं **कापर** धरेसि उतारि"[65]

x x x

"पाग मारि भुइं **कापर** फारा"[66]

x x x

"पैठि ढंढियइ **कापर** छोरी"[67]

x x x

"**कापर** सेत आनि पहिराएन्हि निकसा रूप अपार"[68]

x x x

"तुरिअ छाड़ि कै **कापर** काढ़िहि"[69]

x x x

"**कापर** देइ कै देस अभारहु"[70]

x x x

"आनि देहुं अब आपन **खीरा**"[71]

x x x

"**जोगौटा**, रुद्राक्ष आधारी"[72]

x x x

"कै असमान फिराइसि **बागा**"[73]

x x x

"कहिसि अन्हाइ फिरावहु **बागा**"[74]

x x x

"कुंअर कहा हम **कंथा** देहू"[75]

x **x** **x**

"पायँ पावरी मेखलि **कंथा**"[76]

(3) मधुमालती– मधुमालती में पुरुष परिधान से सम्बन्धित शब्द **कछोटा, बस्तर, पटोर** शब्द प्राप्य हैं।

"बज्र **कछोटा** बांधि कै बैसा गोरख भेस"[77]

x **x** **x**

"भूखन **बस्तर** आनि पहिराई"[78]

x **x** **x**

"माय सुना कौलादेई व्याकुल फारु **पटोर**"[79]

(4) चित्रावली– चित्रावली में पुरुष परिधान से सम्बन्धित शब्द **कापड, पागा (पगडी), गेरुआ वस्त्र, कंथा** आदि शब्द प्राप्त हैं।

"भूँखा भोजन **कापड़** नाँगा"[80]

x **x** **x**

"राजा रोवै डारि सिर **पागा**"[81]

x **x** **x**

"अस तन तवै विरहनल **पागा**"[82]

x **x** **x**

"बैठ सँभारि गहेसि सिर **पागा**"[83]

x **x** **x**

"**गेरुआ वस्त्र** चढ़ाइ विभूता"[84]

x x x

"जेहि कारन गिंव पहिरा **कंथा**"[85]

(ग) बाल–परिधान–

(1) **चांदायन–** चांदायन में कोई शब्द नहीं है।

(2) **मृगावती–** मृगावती में कोई शब्द नहीं है।

(3) **मधुमालती–** मधुमालती में **झंगा** शब्द मिलता है।

"**झगा** फारि केस सिर तोरेउ"[86]

(4) **चित्रावली–** चित्रावली में **झंगा** शब्दा मिलता है।

"फारै **झंगा** औ लौटे परा"[87]

(घ) नारियों के अलंकार–

(1) **चांदायन–** चांदायन में **गूंदेहार, बेनी गूंदी, जूरा, कुडल, नेवरु (नूपुर), पायल, पैंजनि (पैजनिया) अनवट, विछुई, चूड़ी, आभरण, हांस, चूरा, कान क फेरे, केजूरे, करपे, मांठिए, मांठी, अंगूठी, कांठी, कंगन** आदि शब्द प्राप्त हैं।

"**गूंदे हार** (गूंथे हुए हार)ति बेचहि मारी"[88]

x x x

"**बेनी गूंदि** (गुथी हुई वेणी) जउहि ओरमावइ"[89]

x x x

"**जूरा** (जूड़ा) छोरि झा सो नारी"[90]

x x x

"**कुंडर** (कुण्डल) सुवन जरे लइ हीरा"[91]

x x x

"**चूरा** (जूड़ा) **नेवरु** (नूपुर) **पायर** (पायल) **पैजनि** (पैजनिया) गोवर होइ झनकार"[92]

x x x

"**अनवट** (पैर में पहनने का छल्ला) **विछुई**(विछुए) **पायर** (पायल) लोर चांद कई लीन्ह"[93]

x x x

"**आभरन** भार पाइ जनु **चूरी** (चूड़ी)"[94]

x x x

"नखत चाँद कर **आभरन** (आभरण) आभरण चाँद सिंगार"[95]

x x x

आभरन आनि कीन सभ लोरा"[96]

x x x

"तरिवन **हांस** (हांसली) अउ सोनइ **चूरा** (चूड़े)।

"भवर मोर अउ **कान क फेरे** (कुण्डल)।

"मूंड **भंग** (माँग) अउ करइं **केजूरे** (केयूर)।

"हाथ क **करपा** (करपे) सोवन **मांठी** (सोने की मांठिएँ)

अंगूठी मांनिक कइ **कांठी** (कंठमाला)"[97]

x x x

"दस अंगुरिन्ह **अंगूठी** पगवाई।

कर **कंगन** भर पहिर कलाई।"[98]

(2) मृगावती– मधुमालती में **कंगन**, **बरया (चूड़ी)**, **हार**, **गजमातिन्ह**, **नूपुर**, **घुंघुरू**, **बेनी**, **मेंहदी**, **काजर**, **सेंदुर**, **सिंगार**, **बारह आभरण** आदि शब्द प्राप्य हैं।

"पहुंचिउ वरया **कंगन** कलाई"[99]

x x x

"**बरया** (चूड़ी) फूटि कर गही जो नाहा"[100]

x x x

"**वरयां** जनु चरचहिं सुहाई"[101]

x x x

"गले **हार गजमोतिन्ह** माँगा"[102]

x x x

"**नूपुर** जुरे **घुंघुरु** अहे"[103]

x x x

"नख सिख **बेनी** नित्त तरासइ सिरजन **हार** मुरारि"[104]

x x x

"चिहुर **गूंदि बेनी** उरमावइ"[105]

x x x

"**बेनी** जानु उरग है किसतन गहे मंजूर–पुकार"[106]

x x x

"कै **महंदी** (मेहंदी) रे सुहागिनि लाई"[107]

x x x

"सहज बरुनि जनु **काजर** दिया"[108]

x x x

"जनु **काजर** चखदिएउ सुकामिनि"[109]

x x x

"**काजर** रात चंदन भव हाता"[110]

x **x** **x**

"**सेंदुर** सेत माँग मै देखा"[111]

x **x** **x**

"कीन्ह **सिंगार** संचि कै सोलह रहेउं निकटहिं भुलाई"[112]

x **x** **x**

"खंडिस **सिंगार** संपूरन किए"[113]

x **x** **x**

"नौ औ सात जो कहहि **सिंगारा**"[114]

x **x** **x**

"**बारह आभरण** बहुरि सवारी"[115]

x **x** **x**

"**बारह आभरण** फरसन ठए"[116]

(3) मधुमालती– मधुमालती में **कंठहार, हार मुंदरी, काजर सेंदुर, बेनि** आदि शब्द प्राप्त हैं।

"**कंठहार** मुक्ता मनि माला"[117]

x **x** **x**

"**कंठहार** गिवहार जे टूटे"[118]

x **x** **x**

"औ **मुंदरी** दूनौ कर केरी"[119]

x **x** **x**

"उरहिं **हार** हरावलि टूटी"[120]

x x x

"औ अधर मो **काजर** लीका"[121]

x x x

"**काजर** नैन पीक रतनारा"[122]

x x x

"नैन रेख **कज्जल** (काजर) की देखी सोभा कस देइ"[123]

x x x

"**सेंदुर** मिलिगा **तिलक** लिलारा"[124]

x x x

"उधसी **माँग बेनि** (वेणी) सिर छूटी"[125]

(4) चित्रावली– चित्रावली में **हार, खोपा, माला, टाँड, हांस, मुंदरी, छला, जेहरी, झाझरि, पायल, खुँभिया, बिछिया चूरी, कंगन** आदि शब्द मिलते हैं।

"गरे सोह मनि मोतिन **हारा** (हार)"[126]

x x x

"हिय डोल मुकुताहर **हारू** (हार)"[127]

x x x

"**खोंपा** (जूड़ा) छोरिन सीस के, गात उतारिन चीर"[128]

x x x

"गूंधी जानु पुहुप की **माला**"

"अलिकावलि अलि **माला** जैसी"[129]

x x x

"गींव माल मुक्ता मनि बसी"[130]

x x x

"सुभ्र सुजन पर **टाँड**(एक बाहु का आभरण) सोहाई"[131]

x x x

"भुजा **टाँड** औ बलै कर, अंगुरनि **मुंदरी** टूट"[132]

x x x

"सोहत **हाँस** (हँसुली) जराउगर बदन हेठ निकलंक"[133]

x x x

"मोति **हार** गर **कंचन हाँसा**"[134]

x x x

"अंगुरिन **मुंदरी** जरित की सोह **छला** प्रति पोर"[135]

x x x

"चकइ जराऊ **जेहरी** (एक आभूषण) जेहरि जिउ लै जाइ।

सुरनर है झांझर भए, देखि सो **झाँझरि** (झाझर) पाइ"[136]

x x x

"**पायल** आइ पाय लै परी"[137]

x x x

"**पायल** मानहुँ पाँवरि मेली"[138]

x x x

"**खुँभिया** (कान में पहनने का एक आभूषण) कान सेल की जोरी"[139]

x **x** **x**

"**बिछिया** बीछु होइ पग डसा"[140]

x **x** **x**

"बाँहन **चूरी कंकन** (कंगन) हाथा"[141]

(ङ.) पुरुषों के आभूषण–

(1) चांदायन– चांदायन में केवल **हार** शब्द पुरुषों के आभूषण के रूप में मिलता है।

"दीन्हि सुपारी मोतिन्ह **हारू** (हार)"[142]

(2) मृगावती– मृगावती में **कुंडल मुकुट सोने की कटार, कंठमाला** आदि शब्द प्राप्य हैं।

"**कुंडर** (कुंडल) **मटुक** (मुकुट) सिर सोहर कर कटार सोन मूंठि"[143]

x **x** **x**

"**मकुट** (मुकुट) बांधि के कुंअर बैसारा"[144]

x **x** **x**

"सीस **मुकुट** औ गिव कंठमारी"[145]

x **x** **x**

"**अभरन उत्तिम** पहिरइ कहं आवा"[146]

x **x** **x**

"राजइ **हार** धरइ कहं दीन्हा"[147]

x **x** **x**

"कर **नौ गिरही** (नौ पत्थरों वाला) दिहिस उतारी"[148]

(3) मधुमालती– मधुमालती में मुंदरी, मुंद्रा, कंठहार, माला, हार आदि शब्द प्राप्य हैं।

"और कुंअर कर मुंदरी आही"[149]

x x x

"स्रवन फटिक मुंद्रा पहिरावा"[150]

x x x

"कंठहार मुकता मनि माला"[151]

x x x

"कुंअरि कुंअर कंठ मेला हारा"[152]

(4) **चित्रावली–** चित्रावली में **कुंडल, मुंदरा, रूद्राक्षमाला** आदि शब्द प्राप्य हैं।

"मनि **कुंडल** मकरा कृत डारहु"[153]

x x x

"फटिक **मुंदरा** (कान का छल्ला) स्रवन संवारहु"[154]

x x x

"गीव पहिरुहु **रुद्राक्ष क माला**"[155]

x x x

"माथे **मुकुट** जराउ क राखा"[156]

x x x

"**हार** हमेल फूल पहिराए"[157]

x x x

झूलहिं झालर मुकुताहली (मुक्तों की माला)"[158]

(च) बालकों के आभूषण–

(1) **चांदायन–** कोई शब्द नहीं है।

(2) मृगावती– कोई शब्द नहीं है।

(3) मधुमालती– कोई शब्द नहीं है।

(4) चित्रावली– कोई शब्द नहीं है।

(छ) शय्यादि से सम्बन्धित वस्त्र–

(1) चांदायन– शय्यादि से सम्बन्धित वस्त्र **छीपत पटोर, सउरि, सुपेती, सुरंग चीरु, गेडुवा, सेज बिस्तर** आदि शब्द प्राप्त हैं

"**छींपत** (छपे हुये) नेत **पटोर** बिछाए"[159]

x x x

"**सउरि** (गद्दे) **सुपेती** (चादर) जाडु न जाई"[160]

x x x

"**सुरंग** (अच्छे रंग का) **चीरु** इकु आनि बिछावा"[161]

x x x

"**गेडुवा** (तकिया) चांद धरा उढ़िकाई"[162]

x x x

"पालिक **सेज** जो आनि बिछाई"[163]

x x x

"बेगर **मंदिर** सेज संवारा"[164]

x x x

"**सेज** (शैय्या) अकेलि फाटु मोर हियरा जउ जउ देखउं जागि"[165]

x x x

"पाउ धरहि तोहिं **बिस्तर** जाइहि जीउ गंवाई"[166]

(2) मृगावती– मृगावती में **सुपेती, सेज, कम्मर, छीपत पटोर** आदि शब्द प्राप्त हैं।

"सेत **सुपेती** (श्वेत चादर) सेज न भावै"[167]

x x x

"जाड़ सौर भा बिरह **सुपेती**"[168]

x x x

"ततखन कुंवर **सेज** परिहरी"[169]

x x x

"मंदिर संवारि के **सेज** बिछाई दुबौ **सेज** पर बैसे जाई"[170]

x x x

"उतरि **सेज** सेउं ठाढ़ि सोहाई"[171]

x x x

"**सेज** बैसि अब बेरसहु मोती"[172]

x x x

"उरहि लाइ कै दलमलइ रैनि **सेज** रस लेई"[173]

x x x

"बांधे **कम्मर** (कम्बल)सीस उघेले"[174]

x x x

"**छीपत (छपे हुये) नेत पटोर** बिछाए"[175]

(3) मधुमालती– मधुमालती में वस्त्रों से सम्बन्धित शब्द प्राप्त नहीं हैं किन्तु खटोला, सेज आदि शब्द अवश्य प्राप्त हैं। यथा–

"पालक जानौ अकास **खटोला**"[176]

x **x** **x**

"कैं तैं चढेसि मन पौन **खटोले**"[177]

x **x** **x**

"दरमरि **सेज** कुसुम कुंभिलाना"[178]

x **x** **x**

"सोवत **सेज** मैं बरनौं कहा"[179]

x **x** **x**

"पालक **सेज** मैं बरनौ कहा"[180]

(4) चित्रावली– चित्रावली में **डासन, बिछावन, उडास, मृगछाला** आदि शब्द प्राप्त हैं।

"**डासन** (बिछावन) नवा उडास पुराना"[181]

x **x** **x**

"हेठ अपूरब **डासन** डासा"[182]

x **x** **x**

"काहू करै **बिछावन** जाना"[183]

x **x** **x**

"डासन नवा **उडास** (वह बिछावन जो उठा ली जाये) पुराना"[184]

मृगछाला का प्रयोग प्राचीन काल में दो रूपों में किया जाता था। ऋषि–मुनि जब ध्यान साधना में बैठते थे तब वह **मृगछाला** को बिछाते थे किन्तु राजा और प्रजा इसको परिधान के रूप में भी प्रयोग में लेते थे। अतः यहाँ मृगछाला का प्रयोग बिछावन के रूप

में दृष्टव्य है। यथा–

"जत कत चले झारि **मृगछाला**"[185]

निष्कर्ष– अतः हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि **(क) नारी–परिधान– (1) चांदायन**– में **चीरु, वस्तर सारी** तथा रंगी हुयी साड़ियों के लिए **मेघवना, कुसियारा, जुगिया, चौकड़िया, मुंगिया, छुंदरी कसुंभी,** आदि शब्दों का प्रयोग किया है। **(2) मृगावती**– में **चीर, चीरू, साड़ी खीरू' पाट पटोर** (रेशमी वस्त्र) **चीर** (सूती वस्त्र) "**कंचुकी (3) मधुमालती** में **चीर, पल्लो, कंचुकि, आँचर, सारी, चोली (4) चित्रावली**– में चीर, सारी, गुजराती सारी, चोली आदि शब्द प्राप्त हैं।

(ख) पुरुष–परिधान– के अन्तर्गत **(1) चांदायन**– में **कापर, बस्तर, बागा, आछा, पाट, जोगौटा, कोथी, कंथा तथा पागा (2) मृगावती**– में **कापर, खीरा** (खीरोदक) **जोगौटा, बागा, कंथा (3) मधुमालती**– में **कछोटा, बस्तर, पटोर (4) चित्रावली**–में **कापड, पागा (पगडी), गेरुआ वस्त्र, कंथा** आदि शब्द प्राप्त हैं।

(ग) बाल परिधान के अन्तर्गत **(1) चांदायन**– में **कोई शब्द नहीं है। (2) मृगावती**– में **झंगा शब्द प्राप्त है (3) मधुमालती**– में **कोई शब्द प्राप्त नहीं है। (4) चित्रावली**–में **झंगा** शब्द प्राप्त हैं।

(घ) नारियों के अलंकार– के अन्तर्गत **(1) चांदायन**– में **गूंदेहार, बेनी गूंदी, जूरा, कुडल, नेवरु (नूपुर), पायल, पैंजनि (पैजनिया) अनवट, विछुई, चूड़ी, आभरण, हांस, चूरा, कान क फेरे, केजूरे, करपे, मांठिए, मांठी, अंगूठी, कांठी, कंगन (2) मृगावती**– में **कंगन, बरया (चूड़ी), हार, गजमातिन्ह, नूपुर, घुंघुरू, बेनी, मेंहदी, काजर, सेंदुर, सिंगार, बारह आभरण (3) मधुमालती**– में **कंठहार, हार मुंदरी, काजर सेंदुर, बेनि (4) चित्रावली**– में **हार, खोपा, माला, टाँड, हांस,**

मुंदरी, छला, जेहरी, झाझरि, पायल, खुँभिया, बिछिया चूरी, कंगन आदि शब्द मिलते हैं।

(ङ.) पुरुषों के आभूषण–के अन्तर्गत **(1) चांदायन– हार (2) मृगावती–** में **कुंडल मुकुट सोने की कटार, कंठमाला (3) मधुमालती**–में **मुंदरी, मुंद्रा, कंठहार, माला, हार (4) चित्रावली**– में **कुंडल, मुंदरा, रूद्राक्षमाला** आदि शब्द प्राप्य हैं।

(च) बालकों के आभूषण– के अन्तर्गत **(1) चांदायन**– कोई शब्द नहीं है। **(2) मृगावती**– कोई शब्द नहीं है। **(3) मधुमालती**– कोई शब्द नहीं है। **(4) चित्रावली**– कोई शब्द नहीं है।

(छ) शय्यादि से सम्बन्धित वस्त्र– के अन्तर्गत **(1) चांदायन**– में **छीपत पटोर, सउरि, सुपेती, सुरंग चीरु, गेडुवा, सेज बिस्तर (2) मृगावती**–में **सुपेती, सेज, कम्मर, छीपत पटोर** आदि शब्द प्राप्त हैं। **(3) मधुमालती**– में वस्त्रों से सम्बन्धित शब्द प्राप्त नहीं हैं किन्तु खटोला, सेज आदि शब्द अवश्य प्राप्त हैं। **(4) चित्रावली**– में **डासन, बिछावन, उडास, मृगछाला** आदि शब्द प्राप्त हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक– माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणिक प्रकाशन 35, लाजपत कुंज सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण–मई 1967, पृ0 47

2 वही पृ0 45

3 वही पृ0 81

4– वही पृ0 36

5– वही पृ0 81

6– कुतुबन कृत मृगावती, सम्पादक– माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणिक प्रकाशन 35, लाजपत कुंज सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण–मई 1968, पृ0 61

7– वही पृ0 64

8–वही पृ0 65

9–वही पृ0 75

10–वही पृ0 37

11–वही पृ0 37

12–वही पृ0 54

13–वही पृ0 56

14–वही पृ0 59

15–वही पृ0 60

16–वही पृ0 73

17–वही पृ0 74

18—वही पृ0 75

19—वही पृ0 126

20—वही पृ0 158

21—वही पृ0 160

22— वही पृ0 158

23— वही पृ0158

24— वही पृ0 61

25— वही पृ0 75

26—वही पृ0 203

27—वही पृ0 204

28—वही पृ0 61

29—वही पृ0 321

30—वही पृ0 213

31—वही पृ0 214

32—वही पृ0 215

33—वही पृ0 203

34— वही पृ0 204

35—मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक—डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 42

36— तदैव, पृ0 75

37— तदैव पृ0 41

38– तदैव पृ0 58

39– तदैव पृ0 73

40– तदैव पृ0 62

41– तदैव पृ0 42

42– तदैव पृ0 133

43– तदैव पृ0 36

44– तदैव पृ0 132

45– तदैव पृ0 140

46– तदैव पृ0 62

47– उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 29

48– तदैव पृ0 29

49– तदैव पृ0 67

50– तदैव पृ0 84

51– तदैव पृ0 85

52– तदैव पृ0 41

53– तदैव पृ0 84

54– तदैव पृ0 85

55– तदैव पृ0 67

56– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 24

57– तदैव, 36

58– तदैव, 37

59– तदैव, 38

60– तदैव, 84

61– तदैव, 112

62– तदैव, 160

63– तदैव, 22

64– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 10

65– तदैव, 16

66– तदैव, 79

67– तदैव, 22

68– तदैव, 113

69– तदैव, 130

70– तदैव, 206

71– तदैव, 65

72– तदैव, 84

73– तदैव, 124

74– तदैव, 192

75– तदैव, 129

76– तदैव, 83

77– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 53

78– तदैव, 134

79– तदैव, 47

80– उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 10

81– तदैव, 24

82– तदैव, 34

83– तदैव, 41

84– तदैव, 66

85– तदैव, 82

86– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 47

87– उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 22

88– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 25

89– तदैव, 63

90– तदैव, 63

91– तदैव, 82

92– तदैव, 82

93– तदैव, 326

94– तदैव, 82

95– तदैव, 82

96– तदैव, 326

97– तदैव, 326

98– तदैव, 82

99– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 203

100– तदैव, 204

101– तदैव, 50

102– तदैव, 21

103– तदैव, 21

104– तदैव, 51

105– तदैव, 213

106– तदैव, 246

107– तदैव, 50

108– तदैव, 43

109– तदैव, 48

110– तदैव, 249

111– तदैव, 249

112– तदैव, 54

113– तदैव, 22

114– तदैव, 55

115– तदैव, 22

116– तदैव, 193

117– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 131

118– तदैव, 133

119– तदैव, 42

120– तदैव, 42

121– तदैव, 46

122– तदैव, 133

123– तदैव, 143

124– तदैव, 133

125– तदैव, 42

126– उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 29

127– तदैव, 58

128– तदैव, 29

129– तदैव, 29

130– तदैव, 67

131– तदैव, 47

132– तदैव, 58

133– तदैव, 47

134– तदैव, 58

135– तदैव, 47

136– तदैव, 49

137– तदैव, 49

138– तदैव, 59

139– तदैव, 58

140– तदैव, 59

141– तदैव, 67

142– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 33

143– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 207

144– तदैव, 120

145– तदैव, 215

146– तदैव, 219

147– तदैव, 245

148– तदैव, 215

149– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 41

150— तदैव, 53

151— तदैव, 131

152— तदैव, 132

153— उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 54

154— तदैव, 54

155— तदैव, 54

156— तदैव, 125

157— तदैव, 125

158— तदैव, 125

159— दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 39

160— तदैव, 48

161— तदैव, 190

162— तदैव, 191

163— तदैव, 190

164— तदैव, 28

165— तदैव, 44

166— तदैव, 194

167— मृगावती, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 276

168— तदैव, 278

169— तदैव, 110

170— तदैव, 122

171— तदैव, 195

172— तदैव, 195

173— तदैव, 201

174— तदैव, 364

175— तदैव, 120

176— मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक—डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 24

177— तदैव, 33

178— तदैव, 42

179— तदैव, 57

180— तदैव, 22

181— उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 18

182— तदैव, 21

183— तदैव, 18

184— तदैव, 18

185— तदैव, 71

अध्याय 3

खाद्य तथा पेय पदार्थों से सम्बद्ध शब्दावली

(क) अनाज और तेलादि

(ख) फल, मेवा तथा तरकारी

(ग) मिष्ठान एवं पकवान

(घ) चर्व्य पदार्थ

(ङ.) पेय पदार्थ

(च) मसाले आदि

अध्याय 3

खाद्य तथा पेय पदार्थों से सम्बद्ध शब्दावली– सूफी काव्य (प्रेम काव्य) में खाद्य तथा पेय पदार्थों से सम्बन्धित अनेक शब्द प्रयोग हुए है। प्रेम काव्य में परिवार आदि के नित्य प्रति के अनेक अत्यन्त सुन्दर स्वाभाविक एवं मार्मिम शब्दों का प्रयोग किया गया हैं आइये इनका क्रमशः चांदायन, मृगावती, मधुमालती एवं चित्रावली कृतियों का (क) अनाज और तेलादि (ख) फल, मेवा तथा तरकारी (ग) मिष्ठान एवं पकवान (घ) चर्व्य पदार्थ (ड़) पेय पदार्थ (च) मसाले आदि के शीर्षको का आधार बनाकर अवलोकन करेगें।

(क) अनाज और तेलादि– जायसी तर काव्य में अनाज और तेलादि से सम्बन्धित शब्दों का प्रचुर मात्राा में प्रयोग हुआ है।

(1) चांदायन– दाऊद कृत चांदायन में आनज और तेल आदि से सम्बन्धित अनेक शब्दों की सूची मिलती है। यह शब्द अनेक रूप में प्रयुक्त किये गये है। **अन्न, अक्षत (चाउर), कनिक, सातू, घी एवं तेल** आदि।

अन्न– अन्न शब्द का प्रयोग समस्त प्रकार के अन्न (जैसे चावल, गेहूँ आदि) के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

"**अंन** घन पाट पटोर भल कउतुक भूल राउ"[1]

अक्षत (चाउर), चावल,– चावल के पौधे अथवा भूसा या छिलका चढ़े चावल को धान कहते है और जब कूटकर धान का छिलका उतार दिया जाता है तो उसे चावल कहते हैं।

'चाउर' कनिक खांड घिउ लोनु तेलु बिसवार"[2]

इसके अतिरिक्त अक्षत (अक्खत) शब्द का प्रयोग चांदा–लोरा पुनर्दर्शन खण्ड में भी मिलता है। जब चांदा अक्षत लेकर वहाँ जाती है जहाँ दीवाली खेली जा रही थी।

"**अक्खत** चांद चली लइ तहाँ"[3]

x **x** **x**

"सून फूल चांदा लइ **अक्खत** मेला जाइ"[4]

कनिक का शाब्दिक अर्थ गेहूँ के मोटे आटे से है।

चाउर **कनिक** खांड घिउ लोनु तेल बिसवार"[5]

सातू जौ, चने आदि को भूनकर पीसा हुआ आटा सतुआ कहलाता है।

"बिनु पानी **सातू** कस सानसि"[6]

घी घृत, तपाया हुआ मक्खन।

चाउर कनिक खांड **घिउ** लोनु तेल बिसवार"[7]

"तेल– किसी बीज या वनस्पति आदि के निकाला हुआ स्निग्ध पदार्थ।

चाउर कनिक घिउ लोनु **तेल** बिसवार"[8]

(2) मृगावती– चांदायन की भाँति मृगावती में भी अनाज, तेलादि के शब्द प्रयुक्त हुये है। वे शब्द है– **अक्षत, अन्न, मक्खन, मांस मसउर, भोजन, भुगुति, ज्यौनार** आदि।

अक्षत (चावल) परिभाषा पूर्ववत्

"लोक भुआ बज पूजे कुंवर के **अक्खत** फूल तंबोल"[9]

x **x** **x**

"नगर काहुं **अन्न** पानि न खावा"[10]

पूरी (पुरई) एक खाद्य पदार्थ जो आटे को साधारण रोटी की तरह बेलकर घी में पकायी जाती है।

"बावन **पूरी (पुरई)** हांडी चौरासी"[11]

मक्खन– (नवनीत) गाय या भैंस के दूध का वह सार भाग जो दूध या दही को मथने से प्राप्त होता है और जिसको तपाने से घी बनता है।

"**मक्खन** लेखें अधर सुहाए"[12]

मृगावती में **'मास' मीट** आदि का भी वर्णन मिलता है। **मांस मसउर** का अर्थ होता माँस के बड़े अर्थात् **कबाब।**

"खीर दहिउं **मांस मसउर** और सब पाँच अंब्रीत"[13]

इसके अतिरिक्त सामान्य रूप से भोजन के लिए और भी शब्दों का प्रयोग हुआ है।

"जो रे आव इहि ठाईं **भोजन** सब कोउ पाव"[14]

x **x** **x**

"बहु **भोजन** सब कहं वह देई"[15]

x **x** **x**

"भुगुति देउं भिछया **भोजन** लैरे इहां हुत जाहि"[16]

इनके अतिरिक्त भोजन शब्द के पर्यायवाची के रूप में भुगुति एवं भुक्ति शब्द का भी प्रयोग हुआ है।

"**भुगुति** देउं भिछया **भोजन** लैरे इहां हुत जाहि"[17]

x **x** **x**

"तेहि दिन सेउं मैं **भुगुति** न खाई"[18]

x **x** **x**

"**भुगुति** देउं पां लागौं तोरें"[19]

इसके अतिरिक्त एक साथ होने वाले भोजन को जो प्रायः पंगत कहीं जाती है उसके लिए **ज्यौनार** शब्द का भी प्रयोग मिलता है।

"होइ लागि **ज्यौनार** अपारा"[20]

(3) मधुमालती– मु0 दाऊद कुतुबन की भाँति ही मंझन ने भी अपने काव्य मधुमालती में खाद्य पदार्थों का प्रयोग किया है। वे शब्द हैं– **अन्न, जेवनार, खांड, खाझी, कनक** आदि।

" सोना रूप **अन्न** धन है गै रतन पंवार"[21]

x **x** **x**

"कै **जेवनार** पिंड़ एक दीन्हा"[22]

x x x

"चित्रसेन **जेवानार** कराई"[23]

x x x

"वांभन लोग राये और राने पंच अंब्रित **जेवनार**"[24]

x x x

"**खांड** फरी जो कोत कटारा"[25]

x x x

"जैसे **खांड** नीर महँ परई"[26]

x x x

"जो **खाझी** पंछिन्ह कै जानी"[27]

x x x

"**कनक** औटि जो सांचे ढारी"[28]

(4) चित्रावली– चित्रावली में खाद्य पदार्थ से सम्बन्धित शब्द **भुगुति, अन्न, तिल** आदि शब्द ही प्राप्त हैं।

"**भुगुति** (भोजन अन्न) देत कोउ बिसरत नाहीं"[29]

x x x

"पहिले **भुगुत** दई जो चाहा"[30]

x x x

"**अन्न** धन मैं सकल निधि विधि मोहि दीन्ह अनेग"[31]

x x x

"**तिल** समान कछु बाहर नाहीं"[32]

(ख) फल मेवा तरकारी– प्रेम काव्य जो प्रबन्ध काव्य के रूप में हिन्दी साहित्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं। प्रबन्ध काव्य में काव्य के माध्यम से कवि ने प्रकृति चित्रण

वारहमासी आदि के अन्तर्गत अनेक स्थानों पर खाद्य तथा पेय पदार्थों से सम्बन्धित रखते हुए अनेक प्रकार के फल, मेवा, एवं विभिन्न प्रकार की तरकारियों का वर्णन किया है।

(1) चांदायन– मु0 दाऊद ने गोवर वर्णन खण्ड में विभिन्न प्रकार के फलों, मेवा एवं तरकारिं के नामों का उल्लेख किया है। आइये सबसे पहले फल फिर मेवा तदनन्तर तरकारी का वर्णन क्रमशः देखते हैं। फलों में– **नारियल, अनार, अंगूर जामुन, कैथ, ईमली एवं संतरा** शब्द प्राप्त हैं।

"**नारियर** (नारियल) गोवा के तहं रूषा"[33]

x **x** **x**

"**दारयौ** (अनार) दाष बहुल लै लाई"[34]

x **x** **x**

"दारयौ **दाष** (अंगूर) बहुत लै लाई"[35]

x **x** **x**

"**जामिनि** कैथ न को जाना"[36]

x **x** **x**

"जामिनि **कैथ** (कैथा) न को जाना"[37]

x **x** **x**

"बास षिजूरि वर पीपरा **अबिली** (ईमली) भई सैवार"[38]

x **x** **x**

"**नारिंग** (संतरा) कहे न जाई"[39]

मेवा में– चिरौंजी, सुपारी, छुआरा आदि शब्द प्राप्त हैं।

"खांड **चिरउंजी** (चिरौंजी) दाख खुरुहरी बहुत लोग बेसाहिं"[40]

x **x** **x**

"मैन मंजीठि **चिरौंजी** सुपारी"[41]

x **x** **x**

पान उडांगर (अडागर) सुरंग **सोपारी**"[42]

x **x** **x**

"मैन मंजीठि चिरौंजी **सुपारी**"[43]

x **x** **x**

"जैफर लौंग बिकाइ **छुहारी** (छुहारा)"[44]

x **x** **x**

"नरियर गुवा लवंग **छुहारी** (छुहारा)"[45]

तरकारी– चांदायन में चांदा लोर प्रथम दर्शन खण्ड में अनेक प्रकार की तरकारियों के नाम उल्लिखित हैं। **भाँटा (बैगन), टीडा (टिन्डा), कुम्हड़ा, परवल, कुदुरू, तरोई, अरवी, पालक, चौलाई, लौकी, चिचिंडा, सेम, ककोरा, सोया, मैथी, कुदुरियाँ** आदि तरकारियों के नाम एक ही छन्द में उदघृत हैं। यथा–

"जाजर पापर भूंजि उचाए।

भांटा (बैगन) **टींडस** (टिन्डा) सोंधि तराएं।

करुएं तेल **करैला** तरे।

कुम्हड़ा (कुमैड़ा) भूंजि साठि इक धरे।

खिखसा **परवर** (परवल) **कुंदरी** (कुंदरू) अहीं।

घिए **तरोई** (तुरई) **अरुई** (अरबियाँ) गहीं।

बोटी बोटिहि धोइ पकाए।

चूका **पालक** अउ **चौंलाए** (चौलाई)।

लौआ (लौकी) **चिंचिडा**, बहुत **तोरई** (तरोई)।

सीता **सेंब** (सेम) भार दस भई।

कंकोल (ककोरा) जीवंती सौफ औ **सोई** (सोया) मेथि (मैथी) पकानि।

राधी कुसुंभ **कुदुरियाँ** काढ़े बहुल संधान"[46]

इसके अतिरिक्त उर्द की दाल की बनी बड़ी का भी वर्णन मिलता है। दृष्टव्य है–

बरा मुंगौरा **बरियइं** (बड़ी) कीन्हीं"[47]

इसी छन्द में **मिथौरी** (जो मूंग की दाल से बनती है) का भी वर्णन है–

"बनी **मेथौरी** छिर कुलि बारी"[48]

(2) मृगावती– मृगावती में फल, मेवा तरकरी से सम्बन्धित अल्प शब्द ही प्राप्त हैं।

मृगावती में अधिक फलों के नाम उद्घृत नहीं हैं। यत्र–तत्र एक या दो ही फलों के नाम प्राप्य हैं। **आम और ईमली** दो ही शब्द मिलते हैं।

"भूखे **अंब** (आम) न पाकै बारा"[49]

x **x** **x**

"**अंबिली** (ईमली) ढूढ़त हौ इहं आवा"[50]

(3) मधुमालती– मधुमालती में फल मेवा तरकारी से सम्बन्धित शब्द **केला, अनार, संतरा, जामुन, बादाम, छुहारा, चिरौंजी** शब्द प्राप्त हैं।

"विपरीत बन **केदली** (केला) औ गज सुंड सुमाउ"[51]

x **x** **x**

"देखि **अनार** हिया विहरावे"[52]

x **x** **x**

"**नारंग** (संतरा) रक्त घूँटि भौ राती"[53]

x **x** **x**

"**जामुनि** (जामुन) भई डार दुख कारी"[54]

x **x** **x**

वादाम छुहारा और **चरौंजी** (चिरौंजी) बसह सहस दिय लादि।"[55]

(4) चित्रावली– चित्रावली में फल मेवा तरकारी से सम्बन्धित शब्द **अनार, अंगूर**

बडहर फल तथा **कटहल** सब्जी का उल्लेख प्राप्य हैं।

"अमिरित फर औ **दाड़िम** (अनार) दाखा"[56]

x **x** **x**

"अमिरित फल औ दाड़िम **दाख** (अंगूर)"[57]

x **x** **x**

"कटहर **बड़हर** (एक खट्टा मीठा फल) कोऊ न खाई"[58]

x **x** **x**

'**कटहर** बड़हर कोऊ न खाई"[59]

(ग) मिष्ठान एवं पकवान– जीवन में नाना प्रकार के व्रत एवं त्यौहार, वर्षगांठ, विवाह आदि कार्यक्रमों में भारत में अनेक प्रकार के मिष्ठान एवं पकवान बनाने का रिवाज है। इसलिए काव्य को लिखते समय कवि यह ध्यान रखता है कि वह जीवन के हर पल और प्रति क्षण का वर्णन न करे किन्तु जीवन में कुछ चरणों आयामों या यों कहें कि कुछ अंश जरूर ही दर्शता है। इसके अतिरिक्त अतिथि सत्कार आदि में मिष्ठान और पकवान भी बनाये जाते हैं।

(1) चांदायन– चांदायन में मिष्ठान एवं पकवान से सम्बन्धित निम्न शब्द ही प्राप्य हैं– **खांड, लाडू, लावन, खंडोर, पकवान, खिरउरा, गोझा, बरा, मिगौरा** आदि।

"**खांड** (शक्कर का लड्डू) चिरउंजी दाख खुरुहरी बहुतइ लोग बेसहिं"[60]

x **x** **x**

"भार सहस दुइ **लाडू लावन** (मिष्ठान)"[61]

x **x** **x**

"बहुल **कं(ख)डौर** (मिश्री का लड्डू) असंभारा"[62]

x **x** **x**

"जाजर पापड़ भय **पकावन**"[63]

x x x

"कीत **खिरउरा** (दूध का लड्डू) अउ **कुसियारा** (गोझा)"[64]

x x x

"**बरा मुंगौरा** (मिगौरा) बरियइं कीन्हीं"[65]

(2) मृगावती– मृगावती में मिष्ठान एवं पकवान से सम्बन्धित शब्द –**मिठाई, षटरस, घिरित खांड, गुरहि, खजहजा, पकवान, फरा** आदि।

"जनु गुंग खाइ **मिठाई** रहा"[66]

x x x

"**षटरस** पाँच अंब्रित आहारा"[67]

x x x

"**घिरित खांड** सेउं **गुरहि** मेरावा अयी महा रस लेहु"[68]

x x x

"भोग करहि पाँच अंब्रित मधुर **खजहजा** खाहि"[69]

x x x

"वहु संधान **पकवान** गरासी"[70]

x x x

"चाहत **फरा** सोहारी पाएउं"[71]

(3) मधुमालती– मधुमालती में मिष्ठान एवं पकवान से सम्बन्धित कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(4) चित्रावली– चित्रावली में मिष्ठान से सम्बन्धित केवल **मीठे** शब्द प्राप्त है।

"सब **मीठे** परकार सलोने"[72]

(घ) चर्व्य पदार्थ– चर्व्य पदार्थ वह पदार्थ होते है जो दांतो से चबाये जायें।

(1) चांदायन– चांदायन में चर्व्य पदार्थ **जाजर (खस्ता), पापड़, पान**, आदि शब्द

प्राप्त हैं।

"**जाजर (खस्ता) पापड़** भए पकावन"[73]

x **x** **x**

"**जाजर पापड़** भूंजि उचाएं"[74]

x **x** **x**

"प(पा)ए **पान** भय अवसारा"[75]

x **x** **x**

"भइ जेवनार फिराए **पानां**"[76]

x **x** **x**

"हरियन **पान** ते रातुर फूला"[77]

(2) मृगावती– मृगावती में चर्व्य पदार्थ पान, मांए मसउर, आदि शब्द प्राप्त हैं।

"वीरी **पान** खांदि कै खाए"[78]

x **x** **x**

"**पान** खाइ जो घूंटेसि पीका"[79]

x **x** **x**

"अधर सुरंग **पान** जनु खाए"[80]

x **x** **x**

"**पान** खियाई लै रे उर लाई"[81]

x **x** **x**

"हाथ पखारि **पान** पुनि दिए"[82]

x **x** **x**

"खीर दहिउ **मांस मसउर** और सब पाँच अंब्रीत"[83]

x **x** **x**

"चेरी **पान** लै आई वारा"[84]

x x x

"**पानि** कपूर गुवा महं नीरा"[85]

(3) मधुमालती– मधुमालती में इससे सम्बन्धित कोई शब्द नहीं है।

(4) चित्रावली– चित्रावली में इससे सम्बन्धित कोई शब्द नहीं है।

(ङ०) पेय पदार्थ– (1) चांदायन– चांदायन में पेय पदार्थ पानी, दूध, दही, आदि शब्द प्राप्त हैं।

"राखहु **दूध** पियावहु **पानी**"[86]

x x x

"**दूध** दाँत हसि विटिया वारी"[87]

x x x

"लइ कर **दूध** जउ वेगां आवसि"[88]

x x x

"बिनु **पानी** सातू कस सानहि"[89]

x x x

"**दही** न देहु खांउं जेहि लाई"[90]

x x x

"बेचत **दूध** घर गई लुगाई"[91]

x x x

"लइ कइ **दूध** तउ दरब दिवाबा"[92]

x x x

दही कह लोरहिं महरि बोलाई"[93]

x x x

"ओटि कर **दूध** दहि लीजिये दस गुन दीजिय दान"[94]

(2) मृगावती— मृगावती में पेय पदार्थ से सम्बन्धित शब्द— **पानी, खीर, दहिउ, नीर, पाँच अंब्रित, खंडबानि,** आदि शब्द प्राप्त हैं।

"भूखेहि भुगुति पियासेहि **पानी**"[95]

x x x

"पंथी आवत **पानि** पियावहु"[96]

x x x

"धाइन्हि अस कै **खीर** पियावा"[97]

x x x

"**खीर दहिउ** माँस मसउर और सब **पाँच अंब्रीत**"[98]

x x x

सुझर **पानि** देखत अति चोखा"[99]

x x x

"काँचे कंबल कनक **नीर** पिया"[100]

x x x

"**पानि** कपूर गुवा महं नीरा"[101]

x x x

"पेम सुरा जिन्ह **अंचएद** तिन्हहि न किछुवइ सुद्धि"[102]

x x x

"**खीर** दहिउ माँस मसउर और सब **पाँच अंब्रीत**"[103]

x x x

"भोग करहिं **पाँच अंब्रित** मधुर खजहजा खाहिं"[104]

x x x

"पियत जाइ **खंडबानि** पिआसा"[105]

x **x** **x**

"चात्रिग अवर **पानि** नहि पिया"[106]

(3) मधुमालती– मधुमालती में पेय पदार्थ **दूध, नीर, नीरू,** आदि शब्द प्राप्त है।

"औंटि **दूध** नित करै अहारा"[107]

x **x** **x**

"तब वर कामिनि **अंब्रित नीरू**"[108]

x **x** **x**

"जैसे खांड **नीर** महँ परई"[109]

x **x** **x**

"**खांड** फरी जो कोत कटारा"[110]

(4) चित्रावली– चित्रावली में पेय पदार्थ से सम्बन्धित शब्द **छीर, दूध** ही प्राप्त हैं।

"प्रथमहि जैस पियाइउ **छीरा**"[111]

x **x** **x**

"तेहि कारन बुधिवंत नर, प्यावहि **छीर** सुतंतु"[112]

x **x** **x**

"और न **दूध** पियाइऐ"[113]

x **x** **x**

"**दूध** छाड़ि बेगहि भा ठाढा"[114]

(च) मसाले आदि से सम्बन्धित शब्दावली

(1) चांदायन– चांदायन में मसाले आदि से सम्बन्धित शब्द **लोनु (नमक) विसवार (मसाले), हूरद (हल्दी) जैफर, लौग, कपूर, लवंग, ब्राह्मी, सौंफ** आदि शब्द प्राप्त हैं।

"चाउर कनिक खांड घिउ **लोनु**(नमक) तेल **विसवार** (मसाले)"[115]

x **x** **x**

हूरद (हल्दी) पीर जसु हु है (हइ) देहा"[116]

x **x** **x**

"**जैफर लोग** विकाइ छुहारी"[117]

x **x** **x**

"बेना अउरू **कपूर** सुहावा"[118]

x **x** **x**

"नरियर गुवा **लवंग** छुहारी"[119]

x **x** **x**

"**पत्रज (तेलपात) बंभी** (ब्राह्मी) गिनत न आवा"[120]

x **x** **x**

"कंकोल जीवंती **सौंफ** औ सोइ मेथि पकानि"[121]

(2) मृंगावती– मृगावती में मसालों से सम्बन्धित शब्द कपूर, इमली, आम आदि शब्द प्राप्य हैं।

"पंक **कपूर** सुबहु सो अनूपा"[122]

x **x** **x**

"पानि **कपूर** गुवा मह नीरा"[123]

x **x** **x**

"**अंबिली** (ईमली) ढूढत हो इहं आवा"[124]

x **x** **x**

"पावा **आंब** जइस मन भावा"[125]

(3) मधुमालती– मधुमालती में मसालों से सम्बन्धित शब्द कपूर, कुंकुम, चन्दन, आदि शब्द प्राप्य है।

"अग्र **कपूर** जो उमल कुंकुम आदि जवादि"[126]

x **x** **x**

"गगन वदन ता **चंन्दर** सारी"[127]

x **x** **x**

"हाट पटोरन्ह छावा म्रिगमद अगर **कपूर**"[128]

(4) चित्रावली– चित्रावली में मसाले से सम्बन्धित केवल **मजीठ, केसर** शब्द ही प्राप्य है।

"भा **मजीठ केसर** जो अहा"[129]

निष्कर्ष– अतः हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि इस अध्याय के अन्तर्गत (क) अनाज और तेलादि से सम्बन्धित शब्द **(1) चांदायन**– में **अन्न, अक्षत (चाउर), कनिक, सातू, घी एवं तेल (2) मृगावती**– में **अक्षत, अन्न, मक्खन, मांस मसउर, भोजन, भुगुति, ज्यौनार, अन्न, जेवनार, खांड, खाझी, कनक (3) मधुमालती**– में खाद्य पदार्थों से सम्बन्धि शब्द हैं– **अन्न, जेवनार, खांड, खाझी, कनक** आदि।**(4) चित्रावली**– चित्रावली में खाद्य पदार्थ से सम्बन्धित शब्द **भुगुति, अन्न, तिल** आदि शब्द ही प्राप्त हैं। **(ख) फल, मेवा तथा तरकारी** से सम्बन्धित शब्द **(1) चांदायन** में– **नारियल, अनार, अंगूर जामुन, कैथ, ईमली एवं संतरा मेवा में– चिरौंजी, सुपारी, छुआरा भाँटा (बैगन), टीडा (टिन्डा), कुम्हड़ा, परवल, कुदुरू, तरोई, अरवी, पालक, चौलाई, लौकी, चिचिंडा, सेम, ककोरा, सोया, मैथी (2) मृगावती**– **आम और ईमली (3) मधुमालती**–में **केला, अनार, संतरा, जामुन, बादाम, छुहारा, चिरौंजी (4) चित्रावली**– में **अनार, अंगूर बडहर** फल तथा **कटहल** सब्जी का उल्लेख प्राप्य हैं।

(ग) मिष्ठान एवं पकवान से सम्बन्धित शब्द **(1) चांदायन**– में **खांड, लाडू, लावन, खंडोर, पकवान, खिरउरा, गोझा, बरा, मिगौरा (2) मृगावती**– में **मिठाई, षटरस,**

घिरित खांड, गुरहि, खजहजा, पकवान, फरा (3) मधुमालती–मधुमालती में मिष्ठान एवं पकवान से सम्बन्धित कोई शब्द प्राप्त नहीं है। **(4) चित्रावली**– चित्रावली में मिष्ठान से सम्बन्धित केवल **मीठे** शब्द प्राप्त है। **(घ) चर्व्य पदार्थ** के अन्तर्गत **(1) चांदायन**– में **जाजर (खस्ता), पापड़, पान, (2) मृगावती में** पान, मांए मसउर, **(3) मधुमालती**– मधुमालती में इससे सम्बन्धित कोई शब्द नहीं है। **(4) चित्रावली**– मधुमालती में इससे सम्बन्धित कोई शब्द नहीं है। (ड़) पेय पदार्थ से सम्बन्धित शब्द **(1) चांदायन**– में पानी, दूध, दही, **(2) मृगावती–में पानी, खीर, दहिउ, नीर, पाँच अंब्रित, खंडबानि, (3) मधुमालती**– में पेय पदार्थ **दूध, नीर, नीरू,** आदि शब्द प्राप्त है। **(4) चित्रावली– छीर, दूध** ही प्राप्त हैं। (च) मसाले से सम्बन्धित शब्द **(1) चांदायन** में **लोनु (नमक) विसवार (मसाले), हूरद (हल्दी) जैफर लौग, कपूर, लवंग, ब्राह्मी, सौंफ (2) मृंगावती**– कपूर, इमली, आम **(3) मधुमालती**– में कपूर, कुंकुम, चन्दन, **(4) चित्रावली**– में मजीठ, केसर शब्द ही प्राप्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 29

2– तदैव, 40

3– तदैव, 161

4– तदैव, 161

5– तदैव, 40

6– तदैव, 43

7– तदैव, 40

8– तदैव, 40

9–कुतुबन कृत मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 114

10– तदैव, 237

11– तदैव, 119

12– तदैव, 47

13– तदैव, 120

14– तदैव, 124

15– तदैव, 125

16– तदैव, 189

17– तदैव, 189

18– तदैव, 197

19– तदैव, 138

20– तदैव, 119

21—मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक—डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 18

22— तदैव, 16

23— तदैव, 146

24— तदैव, 146

25— तदैव, 19

26— तदैव, 34

27— तदैव, 109

28— तदैव, 61

29— उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 2

30— तदैव, 2

31— तदैव, 11

32— तदैव, 65

33— दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 16

34— तदैव, 16

35— तदैव, 16

36— तदैव, 16

37— तदैव, 16

38— तदैव, 16

39— तदैव, 16

40— तदैव, 25

41– तदैव, 339

42– तदैव, 25

43– तदैव, 339

44– तदैव, 25

45– तदैव 339

46– तदैव, 143

47– तदैव, 143

48– तदैव, 143

49– कुतुबन कृत मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 163

50– तदैव, 123

51– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 24

52– तदैव, 67

53– तदैव, 67

54– तदैव, 67

55– तदैव, 135

56– उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 87

57– तदैव, 88

58– तदैव, 89

59– तदैव, 89

60– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स,

आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 25

61— तदैव, 37

62— तदैव, 37

63— तदैव, 37

64— तदैव, 37

65— तदैव, 143

66— मृगावती, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 59

67— तदैव, 120

68— तदैव, 160

69— तदैव, 219

70— तदैव, 119

71— तदैव, 123

72— उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 65

73— दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 36

74— तदैव, 142

75— तदैव, 36

76— तदैव, 39

77— तदैव, 20

78— मृगावती, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 59

79– तदैव, 59

80– तदैव, 47

81– तदैव, 128

82– तदैव, 120

83– तदैव, 120

84– तदैव, 205

85– तदैव, 207

86– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 43

87– तदैव, 43

88– तदैव, 381

89– तदैव, 43

90– तदैव, 43

91– तदैव, 382

92– तदैव, 383

93– तदैव, 382

94– तदैव, 382

95–कुतुबन कृत मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 10

96– तदैव, 124

97– तदैव, 13

98– तदैव, 120

99– तदैव, 19

100— तदैव, 54

101— तदैव, 207

102— तदैव, 92

103— तदैव, 120

104— तदैव, 219

105— तदैव, 283

106— तदैव, 190

107— मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक—डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 18

108— तदैव, 36

109— तदैव, 34

110— तदैव, 19

111— उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 14

112— तदैव, 14

113— तदैव, 14

114— तदैव, 14

115— दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 40

116— तदैव, 53

117— तदैव, 25

118— तदैव, 25

119— तदैव, 339

120— तदैव, 339

121— तदैव, 143

122— मृगावती, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 19

123— तदैव, 207

124— तदैव, 123

125— तदैव, 123

126— मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक—डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 135

127— तदैव, 61

128— तदैव, 18

129— उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 66

अध्याय 4

पात्रादि वाचक शब्द

(क) भोजन बनाने और करने के पात्र

(ख) अन्य क्रियाओं से सम्बद्ध पात्र

(ग) पात्रों के विविधोपादान

अध्याय 4

पात्रादि वाचक शब्द– जायसीतर काव्य मे पात्राादि वाचक शब्दों का प्रयोग बहुत अल्प मात्रा में ही प्राप्त है। अतः यह कहना कठिन है कि उस समय पात्रादि का प्रयोग कैसे होता था और किस तरह के पात्रों का प्रयोग किया जाता हैं। किन्तु कुछ उदाहरण अवश्य प्राप्त है।

(क) भोजन बनाने और करने के पात्र–

(1) चांदायन– चांदायन में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(2) मृगावती– मृगावती में भोजन बनाने और करने के पात्रों में केवल **हांडी** और **कचोरे** शब्द ही प्राप्त है।

"clou iwh **हांडी** (मिट्टी का छोटा वर्तन) चौरासी"[1]

X **X** **X**

दूध पियावत चलीं **कचोरें** (कटोरा)"[2]

(3) मधुमालती– मधुमालती में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(4) चित्रावली– चित्रावली में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(ख) अन्य क्रियाओं से सम्बद्ध पात्र–

(1) चांदायन– चांदायन में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(2) मृगावती– मृगावती में एक शब्द खरिका मिलता है।

"जेइं भूंजि कै खरिका लिए"[3]

(3) मधुमालती– मधुमालती में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(4) चित्रावली– चित्रावली में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(ग) पात्रों के विविधोपादान–

(1) चांदायन– चांदायन में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(2) मृगावती– **हांडी** शब्द ही प्राप्त है।

"बावन पूरी **हांडी** (मिट्टी का छोटा वर्तन) चौरासी"[4]

(3) मधुमालती– मधुमालती में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(4) चित्रावली– चित्रावली में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

निष्कर्ष– अतः हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि पात्रादि वाचक शब्द (क) भोजन बनाने और करने के पात्र के अन्तर्गत **(1) चांदायन–** चांदायन में कोई शब्द प्राप्त नहीं है। **(2) मृगावती–** मृगावती में भोजन बनाने और करने के पात्रों में केवल **हांडी** और **कचोरे** शब्द ही प्राप्त है। **(3) मधुमालती–** मधुमालती में कोई शब्द प्राप्त नहीं है। **(4) चित्रावली–** चित्रावली में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(ख) अन्य क्रियाओं के से सम्बद्ध शब्द– (1) चांदायन– चांदायन में कोई शब्द प्राप्त नहीं है। **(2) मृगावती–** मृगावती में केवल खरिका शब्द प्राप्त है। **(3) मधुमालती–** मधुमालती में कोई शब्द प्राप्त नहीं है। **(4) चित्रावली–** चित्रावली में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(ग) पात्रों के विविधोपादान– (1) चांदायन– चांदायन में कोई शब्द प्राप्त नहीं है। **(2) मृगावती–** मृगावती में केवल **हांडी** शब्द ही प्राप्त है। **(3)मधुमालती–** मधुमालती में कोई शब्द प्राप्त नहीं है। **(4) चित्रावली–** चित्रावली में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 119

2– तदैव, 307

3– तदैव, 120

4– तदैव, 119

अध्याय 5

व्यावसायिक शब्दावली

(क) कृषि सम्बन्धी शब्द

(ख) वाणिज्य से सम्बन्धित शब्द

(ग) औद्योगिक शब्दावली

(घ) मुद्रा तथा नगादि

(च) अन्य व्यवसाय– शिक्षण एवं पौरोहित्यादि।

अध्याय 5

व्यावसायिक शब्दावली– व्यावसायिक शब्दावली का प्रयोग जायसीतर सूफी काव्य में कम ही देखने को मिलता है किन्तु यत्र–तत्र कुछ शब्दों का प्रयोग हुआ है। हम उन्हीं का अध्ययन इस अध्याय में करेगें।

(क) कृषि सम्बन्धी शब्द–

(1) चांदायन– चांदायन में कृषि सम्बन्धी कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(2) मृगावती– मृगावती में **रहट चलहि** शब्द प्राप्त है।

"**रहट चलहि** सींचहि अंबराई"[1]

(3) मधुमालती– मधुमालती कृषि सम्बन्धी कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(4) चित्रावली– चित्रावली में **हट** शब्द प्राप्त है।

"आय आपु ज्योंर **हट** (पानी निकालने का यंत्र) पुकारा"[2]

(ख) वाणिज्य से सम्बन्धित शब्द–

(1) चांदायन– चांदायन में **महाजनु, बनिजु,** शब्द प्राप्त हैं

"लोग **महाजनु** (महाजन) पूछत आहा"[3]

x **x** **x**

"कउनु **बनिजु** मेहि आगे आवा"[4]

x **x** **x**

"सुरिजन **बनिजि** तुम्हारे उबरे बूढ़ न बार"[5]

x **x** **x**

"हउं रे **बनिजु** गोवरां लइ आएउ"[6]

(2) मृगावती– मृगावती में **महाजन, वैपारी, बनिज** आदि शब्द प्राप्त हैं।

"बइठे नरिंद **महाजन** भारी"[7]

x **x** **x**

"कंचनपुर जो अहे **वैपारी** (व्यापारी)"[8]

x **x** **x**

"कहिन्हि जाइ कै **बनिज** बेसाही"[9]

(3) मधुमालती– मधुमालती क़ोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(4) चित्रावली– चित्रावली में कोई शब्द प्राप्त है।

(ग) औद्योगिक शब्दावली

(1) चांदायन– चांदायन में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(2) मृगावती– मृगावती में कोई शब्द प्राप्त नहीं हैं।

(3) मधुमालती– मधुमालती कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(4) चित्रावली– चित्रावली में कोई शब्द प्राप्त है।

(घ) मुद्रा तथा नगादि–

(1) चांदायन– चांदायन में **हीर, सोन, मोंति, कंचन, लोहे,** आदि शब्द प्राप्त है।

"**हीर** (हीरा) पवार **सोन** (सोना) भल कापर जत चाहिये सब आहि"[10]

x **x** **x**

"**हीरा मोंति** (मोती) लग जिन्ह आहा"[11]

x **x** **x**

"सुन लिलारु उठि बैठा (बइठा) बाजुर **कंचन** (सोना) दीत"[12]

x **x** **x**

"बीस पवरि बीसउ जरि लोहे, **सोनेइं** (सोना) रसे किवार"[13]

(2) मृगावती– मृगावती में **रतन, मोंति, सोन, रूपा, दाम, अष्ट धातु** आदि शब्द प्राप्त हैं।

"**रतन** (रत्न) **मोंति** (मोती) आनौं भरि थाली"[14]

x **x** **x**

''परस घाट सब बांधे जरे **रतन** बहु लाइ''[15]

x **x** **x**

''घोर पटोर **सोन** (सोना) बहु **रूपा** (चाँदी)

दाम (सिक्का) दीन्ह अगनित भरि कूपा''[16]

x **x** **x**

''घालि **अष्ट** (आष्ट धातु) कै कोठी मूंदि बज्र कै लीन्ह''[17]

(3) मधुमालती– मधुमालती **मोती, रतन, सोना, रूपा, धन,** आदि शब्द प्राप्त है।

''जैसे **मोती रतन** गिरि माहे, ते मोहिं मो तैसार''[18]

x **x** **x**

''उहाँ नैन सीप गज **मोती**''[19]

x **x** **x**

''**सोना रूपा** (चाँदी) अन्न **धन** (रूपया) गै **रतन** पंवार''[20]

(4) चित्रावली– चित्रावली में **रतन, नग, कुंदन, मुक्ता, सोन, रूपा** शब्द प्राप्त है।

''ए सुंदरि वह **रतन** अमोला''[21]

x **x** **x**

''वह पिउ **रतन** अमोल **नग**, तू धनि **कुंदन** हेम''[22]

x **x** **x**

''बिरह अगिन जरि **कुंदन** भउऊ''[23]

x **x** **x**

''है वह **रतन** पदारथ सोई, कुंदन मिल जराउ जेहि होई''[24]

x **x** **x**

''ग्रीव माल **मुक्ता** मनि बसी''[25]

x **x** **x**

"गाय **सोन** (सोना) मुंदरी **नग** जरी"[26]

x **x** **x**

"**सोना रूप** (चाँदी) **नग** गाइ मुइ पाटंबर गज घोर"[27]

(च) अन्य व्यवसाय– शिक्षण एवं पौरोहित्यादि–

(1) चांदायन– चांदायन में **पुरानु** (पत्रा) शब्द प्राप्त है।

"काढ़ि **पुरानु** (पत्रा) राशि गनि दीठी"[28]

(2) मृगावती– मृगावती में **पत्रा, चौदह विद्या** शब्द प्राप्त हैं।

"गनि गुनि **पत्रा** देखहु कौन गरह दहुं सुद्ध"[29]

x **x** **x**

"**चौदह बिद्या** भोज निदाना"[30]

(3) मधुमालती– मधुमालती **गरह गनाये** शब्द प्राप्त है।

"भोर भौ पंडित जन आये, रासि बारा गन जो **गरह गनाये**"[31]

(4) चित्रावली– चित्रावली में जोषती शब्द प्राप्त है।

"भोर होत आए **जोषती** (ज्योतिषी)"[32]

x **x** **x**

"**जोतिष** मह कोइ बाद न ऑटा"[33]

निष्कर्ष– अतः हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि इस अध्याय में **व्यावसायिक शब्दावली–** के अन्तर्गत **(क) कृषि सम्बन्धी शब्द–** के अन्तर्गत **(1) चांदायन–** में कृषि सम्बन्धी कोई शब्द प्राप्त नहीं है। **(2) मृगावती–** मृगावती में **रहट चलहि** शब्द प्राप्त है। **(3) मधुमालती–** मधुमालती में कृषि सम्बन्धी कोई शब्द प्राप्त नहीं है। **(4) चित्रावली–** चित्रावली में **हट** शब्द प्राप्त है।

(ख) वाणिज्य से सम्बन्धित शब्द– (1) चांदायन– चांदायन में **महाजनु, बनिजु,**

शब्द प्राप्त हैं **(2) मृगावती–** मृगावती में **महाजन, वैपारी, बनिज** आदि शब्द प्राप्त है। **(3) मधुमालती–** मधुमालती में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।**(4) चित्रावली–** चित्रावली में कोई शब्द प्राप्त नहीं है। **(ग) औद्योगिक शब्दावली के अन्तर्गत (1) चांदायन–** चांदायन में कोई शब्द प्राप्त नहीं है। **(2) मृगावती–** मृगावती में कोई शब्द प्राप्त नहीं हैं। **(3) मधुमालती–** मधुमालती कोई शब्द प्राप्त नहीं है। **(4) चित्रावली–** चित्रावली में कोई शब्द प्राप्त नहीं है।

(घ) मुद्रा तथा नगादि– के अन्तर्गत (1) चांदायन– में **हीर, सोन, मोंति, कंचन, लोहे शब्द प्राप्त है।** (2) मृगावती– में **रतन, मोंति, सोन, रूपा, दाम, अष्ट धातु** शब्द प्राप्त है। **(3) मधुमालती–** में **मोती, रतन, सोना, रूपा, धन,** शब्द प्राप्त है। **(4) चित्रावली–**में **रतन, नग, कुंदन, मुक्ता, सोन, रूपा** शब्द प्राप्त है।

(च) अन्य व्यवसाय– शिक्षण एवं पौरोहित्यादि– के अन्तर्गत **(1) चांदायन–** में **पुरानु** (पत्रा) शब्द प्राप्त है। **(2) मृगावती–** में **पत्रा, चौदह विद्या (3) मधुमालती–** में **गरह गनाये** शब्द प्राप्त है। **(4) चित्रावली–** में जोषती(ज्योतिषी) शब्द प्राप्त हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 17

2– उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 34

3– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ054

4– तदैव, 56

5– तदैव, 360

6– तदैव, 368

7– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 173

8– तदैव, 292

9– तदैव, 292

10– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 25

11– तदैव, 40

12– तदैव, 40

13– तदैव, 22

14– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 9

15– तदैव, 18

16– तदैव, 114

17— तदैव, 245

18— मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक—डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 38

19— तदैव, 136

20— तदैव 18

21— उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 65

22— तदैव, 65

23— तदैव, 65

24— तदैव, 67

25— तदैव, 67

26— तदैव, 14

27— तदैव, 14

28— दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 31

29— मृगावती, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 11

30— तदैव, 245

31— मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक—डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 17

32— उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 13

33— तदैव, 14

अध्याय 6

धार्मिक तथा दार्शनिक शब्द

(क) विविध समुदायों तथा साधनाओं से सम्बद्ध शब्दावली

(ख) विविध संस्कारों एवं कृत्यों आदि से सम्बद्ध शब्दावली

(ग) विविध दर्शनों से सम्बन्धित शब्दावली

(घ) विविध पर्वों तथा त्योहारों से सम्बद्ध शब्द

अध्याय 6

धार्मिक तथा दार्शनिक शब्द

(क) विविध समुदायों तथा साधनाओं से सम्बद्ध शब्दावली– "छठी शताब्दी के आसपास अरब में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास अपनी सीमा पर पहुँच चुका था। राष्ट्रीय, सामाजिक एवं धार्मिक विश्रृंखलता सर्वत्र व्याप्त थी। मूर्तियाँ पूजी जा रहीं थीं। धर्म के आडम्बर की प्रमुखता हो गयी थी। देव–स्थानों में देवदास एवं देवदासियों को समर्पण की प्रथा एवं उनसे व्याप्त व्यभिचार प्रचलित थे। विश्व के अन्य धर्म भी ह्रास की ओर अग्रसर थे। जरथुस्त्र, मूसा एवं ईसामसीह द्वारा प्रज्ज्वलित पूत ज्योतियाँ भी मानव 'रक्त से तृप्त हो रही थीं। इसी समय हजरत मुहम्मद अरब की भूमि पर अवतरित हुए (570 ई0) जिन्होंने अपने युग की माँग को पूर्ण करते हुए इस्लाम का प्रवर्तन किया, जो अत्यन्त सरल धर्म था। इसकी दो ही प्रमुख विशेषताएँ थीं 1– बहुदेवत्व के विरुद्ध एक ईश्वर में विश्वास (तौहीद) और 2– दैनिक उपासना (नमाज)।"[1]

"भारत और अरब के ऐतिहासिक संबंध ज्ञात इतिहास में स्पष्ट रीति से मिलते हैं। सन् 15 हि0 से अरब आक्रामकों एवं यात्रियों के भारत मे आगमन के वर्णन मिलते है। आजकल जिस जगह बम्बई का शानदार शहर बसा हुआ है, उसके पास थाना नाम का एक छोटा सा बन्दरगाह था, जो अब भी अवस्थित है। सबसे पहले सन 15 हि0 (सन् 635 ई0) में बहरैन के शासक की आज्ञा से अरबों ने इस बन्दरगाह पर चढाई की।"[2] अरब वाले धार्मिक दृष्टि से भी भारतीय ज्ञान–परम्परा से परिचित और उसका समादर करने वाले थे।

इस्लाम के सम्प्रदाय– "हजरत मुहम्मद की मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारी चार खलीफाओं अबू बकर, उमर, उसमान एवं अली। ने अपने युग में इस्लाम धर्म का पूर्ण प्रचार एवं प्रसार किया। धीरे–धीरे यह धर्म शाम, फिलिस्तीन, मिस्र, ईरान, स्पेन एवं तुर्किस्तान तक फैल गया। प्रसार के साथ ही इस धर्म में उत्तराधिकार एवं राजनीतिक नियमों आदि के प्रश्नों को लेकर मतभेद प्रारम्भ हो गया। रसूल हजरत मुहम्मद के देहावसान के थोड़े ही समय बाद, उनके जीवन एवं तुर्कों से प्रभावित होकर इस धर्म के विभिन्न सम्प्रदाय प्रकट हुए। इसका प्रथम विभाजन राजनीतिक आधार पर हुआ। सर्वप्रथम **खारिजी, मुरीजी, शिया और कादिरी सम्प्रदाय** दृष्टिगोचर हुए।"[3] "खारिली सम्प्रदाय के मानने वाले संघर्षप्रेमी थे। युद्ध और रक्तपात से भी उन्हें हिचक न थी। उनकी उत्पत्ति इस्लाम की तत्कालीन प्रचलित मान्याताओं के विरोध के कारण हुयी। इनके प्रमुख सिद्धान्त थे– 1– खलीफा की नियुक्ति चुनाव द्वारा होनी चाहियें और उसे मुसलमानों का विश्वासपात्र होना चाहिए।"[4] 2– जो नमाज नियमित रूप से नहीं पढ़ता रोजा नहीं रखता तथा अन्य धार्मिक कृत्यों और नियमों का समुचित पालन नहीं करता, वह काफिर हैं। 3– कोई मुसलमान, किसी पाप का प्रायश्चित किए बिना मर जाये तो उसे हमेशा के लिए दोज़ख (नरक) में कष्ट भोगना पड़ता है। 4– अन्य मुसलमानों यादि खारिजियों के मत को नहीं मानते तो उनसे लड़ाई करनी चाहिए और उन्हें खत्म कर देना चाहिए।"[5] खारिजियों के विरोध में दो प्रमुख सम्प्रदाय अस्तित्व में आये–**मुरीजी** और **शिया**।

कुछ इस्लामी संप्रदायों में प्राप्त परम्परा इस्लामी मान्यताओं का खण्डन एवं सूफी संन्यास–भावना तथा चिन्तन–प्रधान विचारकों के अभ्युदय के पीछे इस धर्म का चिन्तन शून्य पक्ष, खलीफ़ाओं के शासन के स्वार्थ–द्वन्द्व के कारण उत्पन्न निर्वेद एवं विदेशी

तत्त्वचिन्तकों की चिन्तन धाराओं के प्रभाव का हाथ है। सूफी–प्रवाह के पूर्व इस्लाम के गुलात, अली इलाही एवं मोतजिला संप्रदायों द्वारा प्रवर्तित सिद्धान्तों में हिन्दू धर्म एवं दर्शन में प्रतिपादित सिद्धान्तों से समानता मिलती है। आगे आने वाले सूफीमत से भी भारतीय चिन्तन धारा की अनेक बातों में अभूतपूर्व समानतायें मिलती हैं। इसी कारण प्रारम्भ के अनेक योरोपीय समीक्षकों से सूफीमत पर भारतीय धर्म एवं दर्शनों, विशेषतः भारतीय दर्शन से प्रभावित मानता है। इसी प्रकार का मत होपेनहावर, गोल्डजिहर, श्लोस तथा सर विलियम जोन्स आदि काभी है।''[6]

चौदहवीं शताब्दी में सूफी काव्य रचना के आरम्भ के समय उत्तरी भारत में सिद्ध–साधकों और नाथ योगियों का पर्याप्त प्रभाव पड़ चुका था। योग साधना के बल पर प्राप्त सिद्धियों के कारण लोगों पर इनका सिक्का जम गया था। इनकी साधना योगपरक और अनुभूति मूलक थी। इस साधकों में गोरखनाथ सर्वाधिक प्रसिद्ध हुये। **डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार** ''विक्रम संवत्' की दशवीं शताब्दी में भारत वर्ष के महान गुरु गोरखनाथ का आविर्भाव हुआ। भारतवर्ष के कोने–कोने में उनके अनुयायी आज भी पाये जाते है। भक्ति आन्दोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली आन्दोलन गोरखनाथ का योग मार्ग ही था। भारत वर्ष में कोई ऐसी भाषा नहीं है जिसमें गोरखनाथ सम्बन्धी कहानियाँ न पायी जाती हों।''[7]

सूफी प्रेमाख्यानकार कवियों ने 'मरजीया' शब्द का निरन्तर प्रयोग किया है। इस शब्द के प्रयोक और इसे एक विशिष्ट रूढ़ि के साथ प्रस्तुत एवं प्रचारित करने का श्रेयमलिक मुहम्मद जायसी को है, पर मरण साधना की की इस दशा का वर्णन उनके पूर्ववर्ती सूफियों में भी बराबर मिलता है।

(1) **चांदायन–** प्रेम कथाओं में प्रेमी बार–बार मरता है। लोरिक का 'मरण चाँदा

के धवल गृह–आरोहण में घटित होता है और यह मरण अकेला नहीं पूरी एक मरण–शृंखला है। जब और कोई युक्ति दोनों के मिलन की नहीं रह जाती है, बृहस्पति धवलगृह आरोहरण की युक्ति की ओर संकेत करती हुयी लोरिक से कहती है कि उसका अवलंबन करने पर वह या तो स्वर्ग (धवलगृह) पर चढ़कर वह चांदा के रूप का भोग करता और या तो उसे फांसी ही मिलती– दोनों ही अवस्थाओं में उसे स्वर्ग का निवास लाभ प्राप्त होता। **मरण साधना** तथा **स्वर्ग निवास** के लिए प्रयुक्त शब्द **सरग** एवं **परान** तथा **मरऊं, जियावा** शब्द प्राप्त है।

"उटउ बीर जउं उटवइ **पारसि**। **सरग** पंथ जउ चढ़त संभारसि।

कइ कारन हनिवंत बरु बांधसि। कइ कर लाइ पुंख सर सांधसि।

कर रे फांस बरु मेलसु जउ रे **सरग** चढ़ि जासु।

कर रे चांदा रबि भूंजसू दुहुं तस **सरग** निबा (वा) सु।"[8]

दाऊद ने उसके स्वर्ग (धवलगृह) के आरोहण का वर्णन भी इसी दृष्टि से किया है–

चली बीरु बरहा कर लावा। जिय के परे दूसर न बोलावा।[9]

x **x** **x**

बीर **परान** बरन गुन काहा। बेडिनि बांस चढ़ति जनु आहा।[10]

सोती चांदा को जगाते समय भी उसके प्राण निकल जाते है, प्राणों की बाजी लगाकर वह चांदा को जगाता है–

"गा परान बर पौरुख बीरहि बकति न आउ।

जीउ उडान मनि संका केहि बिधि सोवत जगाउ।"[11]

चांदा जब जाग कर चोर–चोर पुकारते हुए उसके केश पकड़ती है, वह उससे

कहता है–

"तोहि लागि जउ 'मरऊं नेह न छाडउं काउ।

पिरीति तुम्हारि लागि मोरे हिरदइं जइ 'जीउ' जाइ तउ जाउ।"[12]

और चांदा इसका उत्तर देती हुयी कहती है–

जिउ देइ चाह आइ सो बेरा। जियतहि न कोउ चोर मुंह हेरा।

मींचु टारि तूं आतेसि कइसेइं मेंटि न जाइ।

पाउ धरहि तोहिं बिस्तर जाइहि जीउ गंवाइ।"[13]

प्रत्युत्तर देते हुए लोरिक **मरण–साधना** द्वारा अमरत्व की सिद्धि के अपने उसी विश्वास का प्रतिपादन करता है जिसकी ओर ऊपर संकेत किया जा चुका है, और यह प्रतिपादन कितना स्पष्ट और दृढ़ है, इसको सुगमता से देखा जा सकता है–

"जउ लहि जीउ घट महंहि होई। तउ लहि सरगि न आवइ कोई।

परथमि मानुस जीउ 'गंवावइ'। तउ पाछें चढ़ि सरगेहिं आवइ।

'मरि कइ' चांद सरगि हउं आवा। जउ जिउ होइ डराइ डरावा।

हउं तउ मरिउं जउहि तूं देखी। तोहि देखि धनि मुइउं बिसेखी।

मुएं जो मारइ सो कस आहा। चांद मुएं कर मारब काहा।

देखि रूप जिउ दीन्हा तउं आइउ तोहि पास।

रहे नैन जेहिं देखउं रहइ जियहु लइ सांस।।"[14]

प्रेमी के इस मरण निवेदन से जो प्रभाव प्रेम पात्र में पड़ना चाहिए था, वही चांदा पर पड़ता है और जो वह उसको चोर की भांति पकड़े हुए थी, छोड़ देती है–

कहत बचन मोहिं असभा का गहि करियहिं तोहि।

महर रूखि लइ टांगइ सो हत्या फुनि मोहि।।[15]

इस मरण श्रृंखला की सबसे दृढ़ कड़ी हमें लोरिक चांदा–मिलन के अनन्तर उस समय मिलती है जब चांदा चौखंडी में उसे अपनी शैय्या के नीचे छिपा देती है, और दो राज–भृत्य उसे खोज कर पकड़ ले जाने के लिए आते हैं। कवि ने इस मरण का वर्णन भी बड़ी पूर्णता के साथ किया है–

चांद सुरिजु घर घरा छपाई। राहु गरह दुइ गरहइं आई।

लोर चउखंडी दई संभारा। कउहु देवस अंथवइ करतारा।

अइस कुलखनां मूंड कटाउब। पापधि चोर परि रूखि टंगाउब।

'नियरि मींचु होइ ढूकी रगत न रहा सुखान।

बिनु जिय लोरिक सेजि तराहीं आपनि कया न जान।''[16]

लोरिक ने इस बार अपनी **मृत्यु** अपने नेत्रों से स्वयं देखी है, जो आकर और उसे पहचान कर लौट गयी है, और यह भी उसे तब भान हुआ है जब चांदा ने उसे छिड़क कर जिलाया है–

अथवा सुरुज चांद दिखरावा। अंबिरित छिरका लोरु 'जियावा'।

आपनि 'मीचु' नैन मइं देखी। 'मींचु' आइ फिरि गई बिसेखी।

हउं जइ जिया चांद कुंबिलानी। अत अवसान भया तेहिं बानीं।

एहिं परि रइनि 'जउ दई जियावइ। नाखउं मींचु नहि नियरें आवइ।''[17]

किन्तु इस बार के मरण में लोरिक को यह आश्वसान भी मिल जाता है कि अब वह अकेला न रहेगा, चांदा उसकी संगिनी होगी–

सुनहु लोर एक बिनती अब तुम्हं काह मंखाहु।

हउं तुम्हरइ जइसि ब्याही तूं मोर ब्याहू नाहु।।''[18]

और इस प्रकार उसकी मरण साधना उसे अमरत्व की सिद्धि प्रदान करती है।

दाऊउ ने इस मरण–साधना का निर्वाह चांदा के सर्पदंश के प्रसंगों में भी किया है। दोनों बार लोरिक चिता रच कर चांदा के निर्जीव शरीर के साथ उस पर जल मरने को उद्यत होता है, यद्यपि दोनों बार गारुडियों द्वारा चांदा के जीवित किए जाने पर उसका यह मरण टल जाता है। प्रथम सर्प दंश का प्रसंग तो संक्षिप्त है, उसमें मरण की तत्परता मात्र ही आ पायी है किन्तु दूसरे सर्पदंश प्रसंग मे वह चिता की रचना का चांदा के निर्जीव शरीर के साथ उस पर बैठ भी जाता है, और तब गारुड़ी आकर चांदा को जिलाता है।

मरण से अर्जित होने वाले दाऊउ के इस प्रेम का एक अभिन्न सहचर सत्य है। जब लोरिक चांदा से अपना प्रेम निवेदन करता है, वह जानना चाहती है कि उसमें सत्य भी है अथवा नहीं क्योंकि यही वल बल है जिससे प्रेम की नाव पार लगती है–

पूछउं लोरिक कहु 'सति' मोही। केइं असती बुधि दीन्हीं तोही।

'सत' हि तिरइ सायर महिं नावा। बिनु सत बूडइ थाह न पावा।

जेंहि सुत होइ सो लागइ तीरा। सत कह हीन बूड़ मंझि नीरा।

सत गुन खैचि तीन लइ लावा। सत छोड़े गुन तोरि बहावा।

सत संभार तउ पावइ थाहा। बिनु सत थाह होइ अवगाहा।

सुत साथी सुत सांभल सत इ नाउ कंडहार।

करि सत कत तू आवसि बर सिधि देइ करतार।''[19]

प्रेम और सत्य का प्रमाण देते हुए लोरिक जब रंग (अनुराग) की बातें कहने लगता है किस प्रकार रंग (अनुराग) ने उसके समस्त जीवन को आपूरित किया है, वह उसके विवरण निम्नलिखित प्रकार से देता है–

जेंहि दिन चांदा गइउं जेवनारा। देखि विमाहिउं रूप तुम्हारा।

तुम्हरी जोति जु भा उजियारा। परउि पतंग होइ मइं न संभारा।

सो रंग रहा न चित हुत जाई। चितहु मांझ रंग कुरिया छाई।

रंग जेवन रंग भोजन करउं रंग पुनि जीवन निरंग फुनि मरउं।

तेहि रंग नैन नीर नइ बहा। होइ बर रंग करानन ढहा।

रंग जउ देह न मन भारी बिनु रंग उठइ न पाउ।

जीउ चाहि रंगि दूलह सुनु चांदा सत भाउ।"[20]

प्रेम के अभिन्न सहचर के रूप मं सत्य का यह कथन भी दाऊद के काव्य की विशेषता है कथा के किसी लोकगाथा–रूप में दोनों के इस अभिन्न संबंध का निर्वाह ही नहीं संकेत भी नहीं हुआ है।

सम्प्रदाय के प्रति कवि ने छन्द में मुहम्मद साहब के बारे में लिखा है कि ब्रह्म ने एक ज्योतिर्मय पुरुष का सृजन किया जिसका नाम 'मोहम्मद' है तथा जो सारे जगत का प्यारा है। यथा–

पुरिषु येकु सिरजसि उजियारा।

नाउ महंमदु जगतु पियारा।

जिह(हि) लग सबै पिरथमी सिरी।

औ तिहि नाउ मोनदी फिरी।

जिह जिहवा वहु नाउ न लीजा।

बर(रु) सी(सि)र काटि अगनि मुष दीजा।

दूसर ठाउ(उ) दइ(ई) यों (जो) कीन्हां

बचनु सुनाइ पंथु कै दीन्हा।

तिह(हि) मारगि जौ चाल (लि?) सिराइ (ई)।

दुह(हु) महि गति पि(?) छहि बडाई।

पाप पुन की त(ता)री कालि यों (ज्यों?) बरै (नै?) तुम्हार (रिं)

दइ (ई) लिषा सभु मागिहौं (है) धरहर कै हम(?) भार।"[21]

(2) मृगावती– कुतुबन की मृगावती कालक्रम में दूसरी सूफी प्रेमाख्यान कृति है इसमें प्रेम कहानी तो है ही, साथ ही प्रेम की दिव्यता का वर्णन भी कवि प्रसंगानुसर करता रहता है। वह भी प्रेम के लिए सांसाारिक दृष्टि से मरण आवश्यक समझता है। प्रेम की महत्ता और उसकी कठिनाई दोनों का बखान करते हुए कवि ने प्रेम साधान में प्रयुक्त शब्द **प्रेम, खेल, संकर, सूर पारवती ससि** आदि शब्दों का वर्णन किया है।

"प्रेम उत्तंग ऊँच गढ़ अहा। बाउर सोइ जो बिनु दख चहा।

प्रेम खेल जो चाहउ खेला। सिर सेउँ खेल जीउ पर हेला।

कुतुबन कंगुरा प्रेम का ऊँचा अति रे उतंग।

सीस न दीजै पाव तर कर न पहूँचइ खंग।"[22]

कंचनपुर में पहुँचकर जब योगी राजकुँअर मृगावती के परमरूप को देखता है और मूर्छित हो जाता है तब मृगावती की सखियाँ उसे **पतंग के समान दीपक** पर बार–बार जलने वाला मूर्ख कहती हैं। यथा–

"तारेन्ह कहा जोगि मति हीना। अइस बोल तोहि सोभ न (दीना)।

गन गंध्रप सुर नर औ नागा। बार बैठे सब अहनिसि जागा।

जेहि के भाग औ करम लिलारा। तेहि कर होइ निमिख एक बारा।

तूं रे नीच जो बोलसि पासा। काहे न बकतसि ऊंच अकासा।

तूं भुइं सरग कै बातैं कहही जरत आगि कर पालौ गहही।

मान बिहूने हेत बिन रूपहिं जे राचंत।

मूरखि दिया पंतग जेउं फिरि फिरि ते दाधंत।।'''[23]

उस समय राजकुँवर उनसे मरण–साधना की विशेषता तथा उससे प्राप्त अदृभुत शक्ति का वर्णन करता है–

दाधा होइ सो जानइ पीरा। दिया जानइ जेहि दगध सरीरा।

जरि–जरि मरइ सो मरि–मरि जीअइ। सौ पै प्रेम सुरा रस पीअइ।"

बिरुला यह रस पावइ कोई। जो यह पाव अमर होइ सोइ।

समुन्दर तंरति चंढ़ति गिरि झंप हुतासन लिंपि।

प्रेम सुरा जिनि अंचई सो किअ–किअ न करंति।"[24]

राजकुँवर द्वारा धृष्टतापूर्वक प्रेम की चर्चा सुनकर रानी मृगावती जब उसे प्राणदण्ड का भय दिखाती है, तब वह अपनी मरण–दशा का संकेत करते हुए कहता है–

जौ जिउं होइ तो करौं मरोहू। मोहि अपने जिउ कर नहिं छोहू।

मैं आपन जिय तहियइं काढ़ा। प्रेम प्रीति रस जेहि दिन बाढ़ा।

पेम लाइ में जिउ परिछेवा। भंवर मरइ पै छाड़ न केवा।"[25]

X X X

"राजा मुएहि न मारइ काऊ। मुएं के मारे किछु नहि साऊ।

तेहि दिन मुएउं पेम जौ खेला। साँप के मुँह अंगुरी जो मेला।

जौ जिउ होइ तो मरइ डराऊं सांस जीभि लै खिनक रहाऊ।।"[26]

ब्रह्म को सम्पूर्ण जगत का स्रष्टाकहा गया है जिसने सर्वप्रथम 'मुहम्दीयनूर' को उत्पन्न किया। यथा–

पहिलें नूर मुहम्मद कीन्हा। पाछें तेहिक चिंता सब लीन्हां।

औ तेहि लगि आपुहि परगटा। सीउ सकति कीतिसि दुइ घटा।

जेहि रसनां ओहि नाउं न आवा। पावक जरे मोख नहि पावा।

हियइं नाउं कै बकति सुनावा। मुकुत होइ इंद्रासन पावा।

भरम छाड़ि कै होहु सयाने। नाउं भरमि कस फिरहु भुलाने।

जेहि लगि सब संसार रचाया बहुत भावनां भाउं।

बंचहु पंथ पुरान लै सो रानां सो राउं।।"[27]

कवि ने **नायक** को **सूर्य** और **शंकर** तथा **नायिका** को **शशि** और **पार्वती** कहा गया है–

संकर सूर मढ़ी तप आई।

पारवती ससि तप कहं आई।।"[28]

कुतुबन ने नायिका के निवास को ऊँचे शिखर पर बताया है, जिसका मार्ग इतना संकरा है कि **चींटी** भी वहाँ प्रवेश नहीं पा सकती।

आई परेउं तेहि ठाएँ जहाँ न आहइ घाट।

सिखर ऊंच नहिं मारग जाइ चांटिहु चढ़इ न बाट।"[29]

गोरखपुर गोरखपंथी साधना की अवस्था है। कवि ने इसे जो नाथपंथी योगी का वेश धारण करता है पर केवल वेश से ही काम नहीं चलता उसके हृदय की दृष्टि भी खुली होनी चाहिए।

(3) मधुमालती– शत्तारी सम्प्रदाय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता भारतीय योग साधना की स्वीकृति हैं **शत्तारी सम्प्रदाय** के अनुयायी भी भारतीय योगियों की तरह योग साधना में विश्वास करते थे। मंझन के गुरु शेख मुहम्मद गौस ने

स्वयं 13 वर्ष तक घोर तपस्या की थी। और इस कारण शत्तारी सम्प्रदाय के अनुयायियों में तप–साधना के प्रति गहन आस्था थी। शत्तारी सम्प्रदाय अरबी और फारसी में ही नहीं, हिन्दी में भी परमात्मा के नाम का जाप करते थे। मधुमालती के कवि मंझन ने अपने गुरु शेख मुहम्मद गौस के सम्बन्ध में कहा है–

बारह बरिख तहाँ गै दुने। जहाँ सूर ससि दिष्ट न परे।

बिकट बिखम औ भयावन ठाऊँ। कलिजुग धुन्धदरी ओहि नाऊँ।

चहुँ दिसि परबत बिखम अंगमा। तहाँ केहूँ मानुस गंगा।

तहाँ जाइ के जपेउ बिधाता। कै अहार बन जामुनि पाता।

मन मत्तंग मारि बस किया ग्यान महारस अम्ब्रिज पिया।"[30]

भारतीय योग साधना में तप, प्राणायाम आदि की महत्ता सर्वविदित है। मधुमालती का मनोहर भी अपनी प्रियताम के वियोग में अपने पिंड अर्थात् शरीर की प्रक्षालन करता है। **गुरु दर्शन ब्रह्म विचारी एक विधा** आदि शब्द प्राप्त हैं।

"गुरु दरसन सेउँ लौ उपराजी। सहज अनाहद किंगरी साजी।

मधु रूप सेऊँ रस चित भजा। आवा गौन पौन घट संचा।

विरह आगि सेउँ तन मन जारेउ। पौन पानि सेउं पिउँ पखारेउ।"[31]

भारतीय योग साधना में हठयोगियो को आदरपूर्ण स्थान प्राप्त है। हठयोग में साधक सांसारिक प्रलोभनों से मुक्त होकर योगी–रूप बन जाता है। मनोहर का हठयोगी रूप दृष्टव्य है–

कठिन बिरह दुख गान संभारी। माँगेउ खप्पर दंड अधारी।

चक्र मांथे मुख भस्म चढ़ावा। सवन फटिक मुन्द्रा पहिरावा।

उदपानी कसि कै कर सांटी। गुन किगरी बैरागी ठारी।"[32]

शत्तारी सम्प्रदाय में परमात्मा को आदि पुरुष और इस अखिल जगत का स्रष्टा कहा गया है। परमात्मा को तभी प्राप्त किया जा सकता है जबकि मनुष्य अपने आपको सांसारिक आकर्षणों से सर्वथा मुक्त कर ले। वही परमात्मा सारी सृष्टि का नियामक है और यह सृष्टि उसी में से जनम लेकर अन्ततः उसी में विलीन हो जाती है। परमात्मा का स्वरूप संसार के विविध पदार्थो में प्रतिबिम्बित हैं परमात्मा अगम्य, निर्विकार और अनिवर्चनीय है। परमात्मा की प्राप्ति में अहं ही सबसे अधिक बाधक है। कवि मंझन ने ऐसे परमात्मा के स्वरूप का वर्णन इस प्रकार किया है–

प्रेम प्रीति सुख निधि के दाता। दुइ जग एकोंकारि विधाता।

बुधि प्रगास नाहीं तुआ ताई। तुअ अस्तुति जे करौं गोसाई।

तीनि भुअन चहुं जुग तै राजा। आदि अन्त ज तोहि पै छाजा।

पंडित मुनि जन ब्रह्म–विचारी। तुअ अस्तुति जग काहुं न सारी।

एक जीभि मै कैसे सारौं। सहस जीभि चहुं जग नाहिं पारौं।

तीनि भुअन घट–घट महँ, अनबन रूप बेलास।

एक जीभि कहु ताहि कै, कैसे अस्तुति करै हवास।''[33]

परमात्मा के स्वरूप का वर्णन करते हुए कवि मंझन कहते है कि तीनों लोकों के बासी करोड़ों वर्षों तक भी ब्रह्म की स्तुति करें तो यही अनुभव करेंगे कि वे ब्रह्म को उस रूप में नहीं जान सके जो कि ब्रह्म का वास्तविक रूप है। मनुष्य की बुद्धि करोंड़ों वर्ष तक चक्कर लगाने के बाद ही परमात्मा के स्वरूप का वर्णन कर सकेगी। परमात्मा ने ही इस सृष्टि को रचा है, वही इसका पालनकत्तार्त है आरैर वही इसका संहार करता है–

कोटि बरिस जौ मन फिरि आवै। बुधि वपुरी दहुं कहवाँ पावै।

जगत न अन अहार कर दाता। करता हरता एक विधाता।"[34]

x x x

एक अनेक भाउ परमेंसा। एक रूप काछें बहू भेसा।

तीनि लोक जहवाँ लहि ठाईं। भोग के अनबन रूप गोसाईं।

करता करै जगत जेत चाहै। जमु था जमु रहे जमु आहै।

बाजु ठाउँ बरसै सब ठाईं। निरगुन एक ओंकार गोसाई।

गुपुत रूप परगट सम ठाईं। बाझु रूप बहु रूप गोसाई।

त्रिभुवन पूरि अपूरि कै, एक जांति सम ठाउं।

जोहित अनबन मूरति, मूरति अनबन नाऊं।"[35]

सत्तारी सम्प्रदाय में मुहम्मद को अत्यधिक आदर प्राप्त है। मुहम्मद की महत्ता का वर्णन करते हुए कवि ने कहा है–

मूल मुहम्मद सब जग शाखा। विधि नौ लाख मटुक सि राखा।

ओहि पटतर दोसर कोउ नाहीं। वह शरीर यह सभ परिछांही।

अलख लखिय जेहि पार न कोई। रूप मुहम्मद काछें कोई।

रूप कनाउँ मुहम्मद धरा। अर्थ न दोसर एकै धरा।

ऊंचे कहौं पुकारि कै जगत सुनै सभी कोइ।

परगट नाउं मुहम्मद गुपुत जो जानिय सोइ।"[36]

कवि मुहम्मद को तीनों लोकों का राजा मानते हैं। उनके मतानुसार सारी चराचर सृष्टि में मुहम्मद की ही ज्योति आच्छादित है। मुहम्मद की वही ज्योति सब स्थानों में प्रकट हो गयी। वही मुहम्मद इस सृष्टि का दीपक है। उसी मुहम्मद की ज्योति के कारण तीनों लोकों में प्रेम की दुन्दुभी बज उठी। इन्हीं के लिए विधि ने सृष्टि

की रचना की थी–

सइहि सरीर सिस्टि जौ आवा। और सिस्टि सभी ओहि कर भावा।

उहई जोति प्रगट सभ ठाउँ। दीपक सिस्टि मुहम्मद नाऊँ।

असैहि लगि दइय सिस्टि उपराजी। त्रिभुवन पेम दुन्दुभी बाजी।

नाउं मुहम्मद त्रिभुवन राऊ। ओहि लगि भएउ सिस्टि कर चाऊ।''[37]

ब्रह्म के ज्ञान और प्राप्ति में माया ही सबसे बड़ी बाधक हैं यह माया मनुष्य में अज्ञान उत्पन्न करती है। जिसके कारण ब्रह्म का ज्ञान असंभव हो जाता है। कबीर आदि सन्त कवियों ने भी माया की बहुत निन्दा की है। कवि ने माया को कलयुग की काली नागिन की तरह मानते हुए कहा है–

यह खोंटी कलि नागिन कारी। त्रिभुवन मोहिनि बिरिध कुँवारी।

प्रथमै जनमि जहाँ लहि आए। ते सभ मोहि भोरै एइं खारा।

एहि कलि बारी बहुतै चाही। बारि–बारि गही न काहूँ ब्याही।

एइं पापिनी सभंसार भोरावा। लोभ बिगूचें लाभ न पावा।

असि चंचलि जनि मोहै कोई। लाभ मूर सेउं जाइ न खोइ।''[38]

माया की विभीषिका का अत्यन्त सजीव वर्णन दृष्टव्य है–

एहि मोहिनी जनि मोहै कोई। लाभ न लहै मूल खति होई।

चली जाइ जिनि तार कै छाहीं। यह दे बिहारिन काहु कै नाहीं।

दिन पंच पंच सब सेतै राती। काहूं न पुनि भई जम्म अहिवाती।

जेहिं पालेति निस्चै तेहि मारेसि। कौन सा जाहि उठाइ न डारेसि।

ऊंच नीच सभके घर जाई। पै अस्थिर कतहूं न रहाई।

मोहन रूप छिनारि करमुखी खोटी बिरिध कुमारि।

सभ सयंसार भोरइ इन्ह खावा चंचल चपल बिटारि।"[39]

(4) चित्रावली– भारत में सूफियों के कई सम्प्रदाय प्रचलित है। इनमें चिश्तिया सम्प्रदाय सर्वाधिक लोक प्रिय एवं मान्य है। कवि का सम्बन्ध इसी सम्प्रदाय से था। कवि ने शेख हाजी पीर को अपना गुरु बताया है। गुरुमुख, मारग गहा, साह निमाज आदि शब्द प्राप्त हैं। यथा–

मोहिं मया कै एक दिन, श्रवन लगा गहि माथ।

गुरमुख वचन सुनाय कै, कलि महँ कीह सनाथ।"[40]

इन्होंने शेख हाजी पीर की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि –

बाबा हाजी पीर अपारा। सिद्ध देत जेहि लाग न बारा।

जे मुख देखा ते सुख पावा। परसि पाय तन पाप गंवावा।

हिन्दू तुरक सबै कोउ जाना। निसदिन जाँचहि इंछा दाना।"[41]

X X X

जौ कोउ जिय जिहचै करि आवै। श्रवन लागि तेहि ज्ञान चेतावै।

जासौ वचन सिद्ध वै कहा। तै सब तजि बिध मारग गहा।"[42]

कवि सम्भवतः शाह निजाम चिश्ती के प्रति भी गहरा आदर भाव रखते थे। यथा–

गहि भुज कीन्हें पार जे, बिनु साहस बिनु दाम।

कश्ती सकल जहान के, चस्ती साह निजाम।"[43]

सूफियों के चिश्तिया सम्प्रदाय पर भारतीय योग एवं वेदान्त का पर्याप्त प्रभाव रहा है। कवि ने उसी परम्परा का उल्लेख करते हुए अपने गुरु द्वारा प्राप्त दीक्षा का सारांश इस प्रकार व्यक्त किया है–

करम बात अब कहौ। सुनु तोहीं। जस कछु गुरु सिखावा मोहीं।

ज्ञान डोरि करू हिया मथानी। साँस लेत डोरी लपटानी।

उलटी दृष्टि रहे टुक लाई। सजग रहै जेहि तंतु न जाई।

तौ लहु मथै बैठि दे जीऊ। निसर छाछ मही तें धीऊ।

निजु सो मथनी एक दिन, मथत मथत गा फूटि।

तत्वमसी पुनि तत्व सों, जाय नरक सब छुटि।"[44]

सूफी लोग परमतत्व को निराकार एवं निगुर्ण ब्रह्म की भाँति मानते हैं। कवि ने उस परमतत्व को सृष्टिकर्ता कहकर उसकी उपमा एक चित्रकार से दी है और उस चित्रकार को सर्वव्यापी, सबसे दूर उदधि के समान बताया है। इस जगतरूपी चित्र का निर्माण करके वह उसके चित्रों में इस प्रकार समाविष्ट हो गया है कि उसे प्रत्यक्ष देखा नहीं जा सकता है, यथा–

अस विचित्र लिखि जानै सोई, वन्हि बिनु मेट सके नहिं कोई।

कीन्हेसि रूप बरन जहँ ताईं, आपु अबरन अरूप गोसाईं।

अगनि पवन रज पानि के, भाँति भाँति व्यौहार।

आपु रहा सब माहिं मिलि, करे निगरावै पार।"[45]

समस्त सृष्टि अथवा जगत को उसका प्रतिबिम्ब कवि ने प्रतिबिम्बदान के प्रति अपनी आस्था व्यक्त कर दी है–

मुख दरसाव परम उजियारा। जाहि बिलाइ तिमिर औ तारा।

एक जोत परगट सब ठाहूं। रहा न कतहू दूसर माहूं।"[46]

सूफी लो इश्के–हकीकी के लिए इश्के मजाजी की आश्यकता मानते है और लौकिक प्रेम इश्के मजाजी को परिष्कृत करते जाते है और उसका उन्नयन करके अलौकिक प्रेम मे उसका पर्यवसान दिखाते हैं।

चित्र दर्शन को सुजान अपने पूर्वजन्मों के पुण्य का फल मानता है–

भयो भाग्य मम दाहिन आजू, जेहि विधि दीन्ह आनि यह साजू।"[47]

x x x

कै सुदिस्टि अपने विधि देखा, आनि देख बहु रूप सुरेखा।"[48]

इस प्रेम के उत्कर्ष का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है कि–

चारि देस नगर हैं चारी, पंथ जाइ तेहि नगर मंझारी।

जो कोउ जान न चाह बिचारा, बीचहिं मारि लेहि बटमारा।"[49]

परेवा के अनुसार ये चार नगर इस प्रकार है– भोगपुर, गोरखपुर, नेहनगर, और रूपनगर। इनकी यात्रा करते हुए सुजान रूप नगर पहुँचता है। सुजान योगीरूप में चित्रावली का ध्यान करने लगता है। इस समय चित्रावली एक संदेश सुजान को प्राप्त होता है–

आए लांघ समुद्र पहारा। अब नैनन महँ ठांव तुम्हारा।

जो दुःख मोहि लागी तुम्ह पावा। सो दुःख मोहि ऊपर आवा।"[50]

वह सुजान को सिद्ध कहती है और एक दर्पण देकर ध्यान को एकाग्र करने को कहती है–

दरपन मांहि निरखि मुख छाया। परा मुरछि गा जिउ तजि काया।"[51]

नायिका चित्रावली के सौन्दर्य में आध्यात्मिकता का समावेश करते हुए कवि ने स्पष्ट कहा है कि–

वह चित्रावलि आहै। सोई। तीन लोक वन्दै सब कोई।"[52]

x x x

अति सरूप चित्रावली, रवि ससि सर न करेई।

धन सौ पुरुष और धन हिया, औहि के पंथ जिउ देइ।''[53]

निष्कर्षतः यह कह सकते है कि सूफीमत के सिद्धान्तों, उसकी साधना–पद्धति का समावेश करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

(ख) विविध संस्कारों एवं कृत्यों आदि से सम्बद्ध शब्दावली–

भारतीय हिन्दू परिवारों में जन्म से मृत्युपर्यन्त व्यक्ति का जीवन षोडश (सोलह) संस्कारों की सीमा से बांधा गया है। यथा–

1– गर्भाधान

2– पुंसवन

3–सीमान्तोन्न्यन

4– जातकर्म

5– नामकरण

6– निष्क्रमण

7– अन्नप्राशन

8– चूड़ाकर्म

9–कर्णवेध

10– उपनयन

11–वेदारंभ

12– समावर्त्तन

14– विवाह

15– गृहस्थ

16– वानप्रस्थ

(1) चांदायन– कवि चांदायन में विभिन्न संकारो का वर्णन करते हुए लिखा है कि जब चांदा का जन्म हुआ तब पृथ्वी और स्वर्ग में चाँदनी फैल गयी। **अवतार छठी**, आदि शब्द ही प्राप्त हैं।–

सहदेव मंदिर चांद अवतारी। धरती सुरगि भई उजयारी।

पहिलिइं घरी भएउ अवतारू। हुइ रातन(नि) जानौ 'सयंसारू।''[54]

आगे कवि छवि का वर्णन करते हुए कहता है कि–

पांचउ दिवसु छठी भय राती। नेउता गोरव छतीसउ जाती।''[55]

(2) मृगावती– मृगावती में भी विविध संस्कारों का वर्णन करते हुए राजकुँवर का जन्म वर्णित करते है। **गुनसिवावहु, पोथा वांच पुरान, निछावरि, गांठि बांध, भेंटइ** शब्द ही प्राप्त हैं।

राजा मंदिनर पूत और (त(ता) रा। अति सुरूप धन(नि) सिरजनिहार)।

ससिहर जनौं पूनेउं कर अहा। भरि उजियार जगत महं रहा।

राजइं पूत दिस्ट भरि देखा भा। अनंद अस आव न लेखा।''[56]

जन्म के बाद राजा ने पाँच वर्ष के राजकुमार को विद्यारम्भ के लिए पंडितों को बुलाया

तुम्हं एब एहि कहं गुन सिखरावहु। पढ़ि औराइ तौ बानि बचावहु।

पंडित आइ पढ़ावहि लागै। जो किछु गुन तेहि चित महं जागे।

दस रे बरिस महं अभ भा पोथा बांच पुरान।

हेंगुरि खेल बेझ भल मारइ नागर चतुर सुजान।''[57]

कवि विवाह के बाद न्योछावार आदि कृत्यों का वर्णन करता है'

"दरब कोरि एक साथ ले वावा। करै पतोहु निछावरि आवा।"[58]

x x x

"राजइ अधिक निछावरि किही। बहू बधाइ बहुत कै किही।"[59]

राजकुंवार का रूपमिनी के साथ विवाह वर्णित करते हुए रूपमिनी द्वारा जयमाला डालने का वर्णन, गांठ बाधना तथा भावर का वर्णन निम्नवत् किया है। यथा–

'रूपमिनी कर जैमारा गही। आनि कुअंर रि उपर दिही।"[60]

x x x

एइं अस कहा कुंअर हा रांधा। गांठि बोलिं बांभन कर बांधा।"[61]

x x x

गांठि जोरि के भांवरि दिही। रीतिचार कुल अही सो किही।"[62]

रूपमिनी को जब को जब राक्षस उठा कर ले जाता है तथा प्रातः काल राजा घोड़े पर सवार होकर उसकी मृत जानकर उसके अन्तिम संस्कार की बात करते हुए कहता है–

"चंदन काठ संग लिहेसि अपारा।

कहिसि जाइ ओहि हाड़ौ लेऊं।

जारौ लै के मोंख ओहि देऊं।"[63]

मृगावती के साथ पुनः विवाह के चार वर्ष वाद जब वह अपने माता पिता के घर आता है। मृगावती का सखियों के साथ विदा के समय भेंट करने का वड़ा ही मार्मिक वणर्न किया है–

मिरगावति सब सखीं बोलाई। अहीं जहां लहि भेंटइ आई।

भेंटइ सबइ समंदि बहु देई। लगाइ बहु रोवहिं सेई।"

दइअ मेराव तौ होइ मेरावा। दूर देस कहु चित्त उचावा।

बिछुरें रानी मिलन दुहेला। वह सुख गा जो एक संग खेला।"[64]

तथा मृगावती ने दो पुत्रों को जन्म दिया यथा–

दुइ रे पूत मिरगावति जाए। राइ भान कहि रान बुलाए।

करन राइ छोटें कर नाऊं। राइ भान सेउं दोसरें ठाऊं।"[65]

(3) मधुमालती– 16 संस्कारों में से कुछ मधुमालती में भी मिलते है। जिसमें **जन्म अवतार, पिण्डदान, छठी, कन्यादान, विद्यारम्भी** आदि प्रमुख है।

जब राजा यह सोचता है कि निःसन्तान जीवन व्यर्थ है। पुत्र के माध्यम से ही माता–पिता यश आदि पाते है पुत्र के द्वारा उनकी मृत्यु के बाद उनका नाम युग–युग तक स्मरण किया जाता है। पुत्र ही मृत्यु के बाद पिण्डदान करता। पिण्डदान के अभाव में पितर प्यासे रह जाते है। यथा–

सुत से माता–पिता जग लहई, सुत से नाँव जगत मो रहइ।

सुत बिना है ब्रिथा संसारा, सुत दीपक बिनु जग अंध्यारा।

सुत बिना मुये नाँव को लेई, सुत बिना को पिंण्डा देई।"[66]

एक तपस्वी द्वारा जब राजा को यह बताया गया कि वह एक पुत्र की प्राप्ति करेगा तथा यह सुन कर राजा के यहाँ सुत आगमन की बधाई तथा मंगल बाद्य बजाये गये–

संसति आस राय जब पाई, करै लागु सुत आस बँधाई।

मेख लग्न अस्विनी पैसारा, दसयें अंस ऊँच अवतारा।

पचयें ससि सूरज छठवाई, दसये सुक्र ब्रिहस्पति नवई।

दिस्टि सनीचर नखत लिलारा, दसयें राति भयों औतारा।

मदन मूरति भागिवंत, रानी राय अधार।

सुभ महुत्र औतरे, राजा कुल उजियारा।"[67]

तथा छठी रात्रि में छठी का आयोजन किया गया। यथा–

छठी राति छठी बाजन बाजे, घर धर नग्र बधावा साजे।

सब धर नग्र उछाह कल्याना, खोरि खोरि आनंद निसारा।"[68]

छठी के अवसर सभी लोग हर्षित थे तथा नगाड़े बजा कर गीत गा रहे थे–

सब घर नग्र बधावा, औ जो खोरि अनंद।

सुरस कंठ जो गावै, धुरवा धुरपद छन्द।"[69]

राजकुमार के जन्म के बारहवें दिन भी बड़ी धूमधाम से उत्सव मनाया गया।

"बरहें दिन बरही भइ भारी। नग्र लोग जो नेवता झारी।"[70]

राजकुंअर जैसे जैसे बड़े होते जाते राजा प्रसन्न हो नित नेवछावरि में द्रव्य लुटानते रहते–

खन खन राजा अंकम लावै, नेवछांवरि नित दर्ब लुटावे।"[71]

जब राजकुंअर पाँच वर्ष के हो गये तब उनकी विद्यारम्भी की व्यवस्था की गयी–

मोहि तोसौं न लागे खोरी, दिन दिन करब मै सेवा तोरी।

जैस मोर तैसन सुत तोरा, बिद्या देत न लाये भोरा।

आपुहिं दोस न लावौ, बिनवै चर्न गहि राउ।

प्रतिपालहु, बालापन, आपन मोर हिआउ।"[72]

x x x

पुनि पंडित कुंअर मन लावा, एक बचन बहु अर्थ पढ़ावा।

जो अस बोल कुंअर औरावा, चित्र उरेहे अर्थ बुझावा।

थोरे दिन भा कुंअर सयाना, बेद भेद बहु भांति बखाना।

अमर जो अमरु सतभावा, पिंगल कोक कंठ औरावा।

ब्याकरन जे जोतिख गीता, गीत गोबिन्द अर्थ को कीता।

औ जो ग्रंथ ग्यान जोग, पढ़ा अनेक कुमार।

निपुन भौ गुन बिद्या बादि न कोऊ पार।''[73]

राजकुंअर जब बारह वर्ष के हुआ तो वर्षगांठ बनायी गयी। यथा–

जौ लगि कुंअर बिद्या साधी, जौं लगि गांठी बरहीं बांधी।''[74]

विवाह का एक पर्यायवी शब्द शादी आजकल खूब बोला जाता है कि उस समय इस शब्द के लिए पाणिग्रहण शब्द का प्रयोग किया जाता था। यथा–

सांझ होत गौगुधरी बारा, आइ बरात राज दरबारा।

जनवासा जहँ राये सँवारा, तहवाँ आनि बरात उतारा।''[75]

X X X

बंदनवार कै चहुँ दि लाये।''[76]

X X X

''बेद भनै बाभन बेदवासी, होम करै आहुति चौरासी।''[77]

गांठ बन्धन का वर्णन करते हुए कवि कहता है–

कंअरहिं लाइ पढ़े बरनारी, जन्म गांठि दुहुँ आँचर सारी।

कुंअरि कुअंरि के कंठ मेला हारा, कुंअर हार मधु गीवा सारा।''[78]

तदपश्यचात राज कन्यादान करता है–

''कन्यादान कीन्ह त्रिपबिक्रम देव पित्र धै साखि।''[79]

(4) चित्रावली– अन्य कवियों की भाँति उसमान कवि कृत चित्रावली में 16

संस्कारों में से कुछ संस्कार मिलते हैं जिनमें **जन्म** के लिये **औतार परगट छठीं** तथा **नेग** के लिए **नेगिन्ह** शब्द प्राप्य है।

"सिव असीस विधि भयो मयारा,

धरनीधर घर सुत औतारा।

निहकलंक ससि परगट भएऊ

सगरे कुल अॅजोर भै गएऊ"80

कुँअर के जन्म के पश्चात उसकी छठीं मनाने का भी उल्लेख है। यथा–

छठीं राति बाजन गह गहे,

बाजे औ सब गावत रहे।"81

कृत्यों के लिये नेग शब्द का प्रयोग भी मिलता है।

जेहि जस भाएव राँधा कोरा,

नेगिन्ह देत न लाएव भोरा"82

(ग) विविध दर्शनों से सम्बन्धित शब्दावली– हिन्दी सूफी कवियों ने ब्रह्म का अनेक रूपों में वर्णन किया है।

(1) चांदायन– चांदायन मे ब्रह्म को जगत की सम्पूर्ण वस्तुओं का **सिरजनहार** कहा गया है। तथा **सिरजनहार** शब्द ही प्राप्त है।

"पहलै गाउ (उं) सिरजन हारू।

जिनि सिरज्या यह दौ (दे) सवि (दि) यारू।

सिरजसि धरती औरु अगासू।

सिरजसि मेर म (मं) दर कबिलासू।

सिरजसि चांद सुरुज उजियारा।

सिरजसि चांद सुरुज उजियारा।

सिरजा (सिरजसि?) सरग नषत की मारा।

सिरजसि छाह सीव औ धूपा।

सिरजयि (सि) किर तन और सरूपा।

सिरजसि मेघु पवन अ (अं) धकारा।

सिरजसि बीज करै चमकारा।

जाकर सभै पिरथमी सिरजसि (?) कह्यों (ह्यों) येक सो गाई।

हीय गहवर मन हुल्हसै दूसर चित न समाई।''83

जिस ब्रह्म ने सम्पूर्ण संसार, जल और महीतल का निर्माण किया उसका स्थान कहाँ है यह तो नहीं जाना जा सकता है उसके बिना संसार का कोई स्थान खाली नहीं है। यथा–

सिरजसि तीन (तेइँ) मेदनि नव षंडा।

सिरजसि नदी अठारह गंडा।

सिरजसि नीर षीर ओ (औ) षारू।

सिरजसि गिर (रि) परष (ब) त तरवरा।

सिरजसि बिनष (षं)ड औ सरवरा।

सिरजसि रतन पदारथ मोंती।

सिरजसि मान (नि)क दीय (?) जोती।

सिरजसि माकार (मकर) गोह घार (रि) यारा।

सिरजसि बहुते मंछ अपारा।

सिरजसि सभ संसार सपूरन जल (?) महियल सोइ।

ज (जि)ह कर ठाव न जानीये तिह बिन ठाव न होइ।"[84]

X X X

सिरजसि बेलि फूल ओ (औ) बासूं(सू)।

सिरजसि भ(भं)वर न छाडहि पासू।

सिरजसि सीतर चंदनु सुहावा।

सिरजसि नाग तिही यु(जु) बिढवि (बिढावा)।

सिरजसि कोइल(लि) मधुरी बैनी।

सिरजसि दादुर चवै यु (जु) रैनी।

सिरजसि क (कं)वर पदम जर माहां।

सिरजसि अगनि जरत यों (जो) दहा।

सिरजसि पानौ यु (जु) अछैहि बाहा (छाहा)।

सिरजसि कनिक झार यों (जो) दहा।

सिरजसि षानि अठारा (र)ह सिरजसि अगनित मूरि।

सिरजसि कत अगुरायनि (आकरायनि?) सबै रहा भरपूरि।"85

X X X

सिरजसि अंन य (यु–जु) मानसु (मानुस) षाई।

सिरजसि भूष यु (जु) तिही बुझाई।

सिरजसि दाष्ज्ञ दो (ऊ)षि रस भरी।

सिरजसि बेलि य (जु) बीन (बिन) यर (जर) फरी।

सिरजसि मीठ षांछ के (कै) उ (ऊ) षा।

सिरजसि कर(रु) ये बहोति (ते) रूषा।

सिरजसि साप डंक बिस भरा।

सिरजसि माह (हु) रू मनै (रै) युं (जु)षाइ (ई)।

सिरजसि मधु माषी लै जाइ (ई)।

सिरजसि हाथी घोरे औ गै (ग) हि बा (बां) धे राइ दुवारि।

सभ राय (ज)नि कर राया (जा) यु (ज्यों) यों (जो?) ससि रैनि अहार।।''86

x x x

सिरजसि मिरग नारि (भि?) यो (जो) वी (ची) ना।

सिरजसि तिह की बासु यों (जो) ल्हीना।

सिरजसि साड(उ)ज थरहि बिचाही।

सिरजसि भगती (भुगुती) जरमहि षाई।

सिरजसि पंषि (पष्षि) राति उजियारी।

सिरजसि बरन यो (जो) द्योस बिकारी।

सिरजसि भ (भं)बर पाट यों (जो) तना।

सिरजसि गुबिरोरा भुवि षना।

सिरजसि पंष(षि?) अवर(?) फर माहा।

सिरजसि बरु (बरुं)सु तिह (हि) ठाहा।

सिरजसि आंथि न साथिं औ झा (झां)कि (षि) मरै जिन(नि) कोइ।

येकि अकेलैं सब जगु सिरजा दु(दू) सर औरु न कोई होइ?)''87

सूफी कवियो ने सूर्य चन्द्र को .नायक नायिका के प्रतीक के रूप में ग्रहण किया है नायक–नायिका का मिलन सूर्य–चन्द्र का मिलन कहा गया है। यथा–

हउं निचि चांद सुरिज कब पावउं।

दिवसु होइ चढि सरगि बोलावउं।''[88]

(2) मृगावती– मृगावती में भी ब्रह्म को सम्पूर्ण जगत का स्रष्टा कहा गया है जिसने सर्वप्रथम मुहम्मदीयनूर को उत्पन्न किया है। तथा **नूर मुहम्मद, गुरुखनाथ** शब्द ही प्राप्त हैं।

पहिलें नूर मुहम्मद कीन्हा। पाछें तेहिक चिंता सब लीन्हां।

औ तेहि लगि आपुहि परगटा। सीउ सकति कीतिसि दुइ घटा।

जेहि रसनां ओहि नाउं न आवा। पावक जरे मोख नहि पावा।

हियइं नाउं कै बकति सुनावा। मुकुत होइ इंद्रासन पावा।

भरम छाड़ि कै होहु सयाने। नाउं भरमि कस फिरहु भुलाने।

जेहि लगि सब संसार रचाया बहुत भावनां भाउं।

बंचहु पंथ पुरान लै सो रानां सो राउं।।''89

सांसारिक जीवन मिट्टी के पात्र के समान क्षणजीवी है उसे निश्चिन्तता शोभा नहीं देती। यह जीवन तो रहँट के जल के समान नश्वर है, जो घड़ी में भरता है और दूसरी घड़ी में ढलकर समाप्त हो जाता है। इस संसार में कोई किसी का नहीं हैं न कोई कुटुम्ब–परिवार किसी का है और न धन दौलत किसी की है। इस सम्बन्ध में कुतुबन का भी कहना है कि संसार मे अकेला ब्रह्म ही सत्य है, कोई दूसरा है न हुआ है और न होगा। यथा–

....................अलख करतारू। रमी (रमि) के रहेव सबै संसारू।

........निरंजन लखै न जोई (जाई) जोति सरूप जो लखत भुलाई।

.........मह सिध परमेसा। ना उहि तिरी ना पुरुष क भेसा।

.........त पिता बंध नहीं कोई। एक अकेल न दोसर होई।

.....कहै सौ नरकही जोई (जाई) एक एक बीहहम (?) चीलल(ला) ई।

एक एकस सो रे उवह करत (ता) दोसर कहै न कोय।

गनि गुनि देखा पंडितन्ह दहुं (दुहुं?) सौ (सौं) चैन न होय।"[90]

जीव और ब्रह्म का भेद केवल भासमान भेद है। अद्वैत वेदान्तियों की भाँति हिन्दी सूफी कवियों ने भी ज्ञान दृष्टि द्वारा द्वैतभाव समाप्त करने और प्रेमिका के मिलन में इसी भाव को व्यक्त करते हुए लिखा है कि नेत्र एक दूसरे से मिलने पर इस प्रकार अनुरक्त हो जाते हैं कि जैसे पानी में बूँद मिल जाये। दोनों एक दूसरे पर इस प्रकार अनुरक्त होते हैं कि उनके दो शरीर न होकर मानों एक ही शरीर रह गया है। कुतुबन गोरख शब्द को मानों गुरु के पर्याय के रूप में स्वीकार कर लिया था। मृगावती में रूपमिनी और राजकुंवर के संवाद में यह प्रयोग देखा जा सकता है। यथा–

पूछिसि कवन देस सो आयेहु, को गोरख को चेला।

गुरुखनाथ गुरु आह हमारे, गोरखपुर सो खेला।"[91]

(3) मधुमालती– सूफी दर्शन का मूलाधार ही प्रेम तत्त्व है। अर्थात् सर्वप्रथम प्रेम–तत्व का प्रवेश हुआ और इसके बाद ही यह अखिल सृष्टि उत्पन्न हुयी। इस सृष्टि की उत्त्पत्ति तथा उसके मूल में प्रेम की ही स्थिति मानी गयी है। प्रेम तत्त्व का साधक अमर हो जाता है उसे मृत्यु का भी भय नहीं रहता है। **प्रेम, मुनिवर, सिस्टि, परगट** आदि शब्द ही प्राप्त हैं।

पेम आलौकिक नवा सयंसारा। जेंहिं जिअं प्रेम सो धनि औतारा।

पेम लागि संसार उपावा। प्रेम गहा बिधि परगट आवा।

पेम जीति सभी सिस्टि अंजोरा। दोसन न पाव प्रेम कर जोरा।

बिरला कोइ जाके सिर भागू। सो पावै यह प्रेम सोहागू।

सबद ऊँच चारिहुं जुग बाजा। प्रेम पन्थ सिर देह सो राजा।

पेम हाट चहुँ दिसि है पसरी, गै बनिजौ जे लोइ।

लाहा औ फल गाहक, जनि उहकावै कोइ।"[92]

कवि मंझन के शब्दों में इस समूची सृष्टि का मूल कारण प्रेम तत्त्व है। यथा–

प्रथमहि आदि प्रेम परविस्टी। तौ पाछे भइ सकल सिरिस्टी।

उतपति सिस्टि प्रेम सों आई। सिस्टि रूप भर पेम सवाई।

जगत जनमि जीवन फल ताही। पेम पीर उपजी जिअ जाही।

जेहिं जिअं प्रेम न आई समाना। सहज भेद तेहं किछू न जाना।"[93]

प्रेम के दार्शनिक पक्ष के अन्तर्गत कवि परम सत्ता का निरूपण भी प्रेम के रंग में ही किया है। परमात्मा केवल अनुपम सौन्दर्य और ज्योतिर्मय ही नहीं है, अपितु वह प्रेममय भी है। यथा–

जेउं जेउं देखै रूप सिंगारा। खिन मुरछै खिन चेत सम्भारा।

देखि रूप चकित चित रहा। विधि यह कौन कहाँ मैं अहा।

एक रूप जो किएं सिंगारा। मुनिवर परहिं देखि मुख बारा।

रूप रेख का कहौं बखानी। सहस भाउ होई हियै समानी।

दोसर कतहुं तुब जोरा। दरपन सिस्टि रूप मुख तोरा।"[94]

परमात्मा के प्रेममय स्वरूप का विवेचन इस प्रकार किया गया है –

पेम जोति सभ सिस्टि अंजोरा। दोसर न पाव पेम कर जोरा।

बिरुला कोई जाके सिर भागू। सो पावै यह पेम सुहागू।"[95]

मधुमालती में परमात्मा का स्वरूप विवेचन मुख्यत5 चार दृष्टियों से किया है और

वे चार दृष्टियाँ है– सौन्दर्य, प्रेम, नूर तथा बुद्धि।

सूफी दर्शन के अनुसार जीवात्मा के दो रूप होते हैं नफ्स तथा रूह। नफ्स का आशय जड़ आत्मा से होता है और रूह पवित्र आत्मा को कहते हैं। प्रेम तत्त्व पाकर ही जीवात्मा उच्चतर सोपानों तक पहुँच जाती है–

जेहि जिअ परै पेम कै रेखा, जहँ देखे तहँ देख अदेखा।

उपजि आव हिअं जौ पुनि ग्याना, जहँ देखै तहँ आपु अपाना।''[96]

ब्रह्म एक है, दूसरा नहीं और जीवात्मा तथा ब्रह्म परस्पर अभिन्न हैं। यथा–

तै जो समुंद लहरि मै तोरी। तै रवि मैं जग किरनि अंजोरी।''[97]

तथा–

इहै रूप परगट बहु भेसा। इहै रूप जग रांक नरेसा।''[98]

जीवात्मा और परमात्मा का सम्बन्ध शाश्वत है और अमर होता है। यथा–

मैं न आजु तोरे दुक्ख दुखारी। तोरे दुख सेउं मोहि आदि चिन्हारौ।''[99]

तथा–

मोहि तोहि कौ पारै बेगराई। एक जोति दुई भाउ दिखाई।''[100]

(4) चित्रावली– कवि की पारलौकिक पक्ष की व्यंजना की पद्धति। वैसे कवि ने सूफीमतानुसार दार्शनिक चिन्तन की अभिव्यक्ति यथास्थान की है। **पवन, अलख, गुसाई,** शब्द ही प्राप्त हैं।

इच्छा तरू एक आह सोहावा। जेहि जस इच्छा तेस फल पावा।

मंजुल मुकुर विमल कर लेखा। जो देखै सो आपुहि देखा।''[101]

वह परमतत्व कर्त्ता को एक चित्रकार के समान है जिसने क्षिति, **जल, पावक, गगन, समीर,** पंच महाभूतों तथा उनके गुण– **शब्द, रूप, रस, स्पर्श एवं गंध**

का निर्माण किया है। यथा–

आदि बखानौं चितेरा, यह जग चित्र कीन्ह जेहि केरा।''[102]

x x x

अगिनि पवन रज पानि कै, भांति, भांति व्योहार।

आपु रहा सब माँहि मिलि, को निगरावै पार।

सो करता सब मांह समाना। परगट गुपुत जाइ कहि जाना।''[103]

x x x

है सब ठाँऊ नाहि कोई ठाई, पुनिगन लखहिं कि अलख गुसाई।''[104]

इस प्रकार कवि सर्वात्मवाद की दृष्टि से उस परमतत्व की विवेचना करता हुआ, वैदान्त की नेति–नेति पद्धति पर उसको अनिर्वचनीय कह देता है–

''मोरे मुख कुछ कही न जाई। देखहु रसना करी हंसाई।'[105]

विचित्रता यह है कि वह स्वयं रूप रंग रहित है परन्तु उसकी रचना रूपात्मक है, तथा उसने इस सृष्टि की रचना बिना किसी साधन–सामग्री के की है–

कीन्हेसि वचन वेद जेहि सीखा। को अस चित्र पवन पर लीखा।

कीन्हेसि रूप बरन जह ताईं। आपु अबरन अरूप गुसाईं।

अस बिचित्र लिखि जानै सोई। बन्हि बिनु मेटि सके नहिं कोई।''[106]

भारतीय ऋषियों के प्रसिद्ध उपमान मृग की नाभि में स्थित कस्तूरी के द्वारा अभिव्यक्त किया है। वे कहते है जिस प्रकार मृग की नाभि में कस्तूरी रहती हैं उसी प्रकार मनुष्य के शरीर में परमात्मा रहता है। मृग अपनी नाभि में स्थित कस्तूरी को नहीं जानता और व्याध उसकी नाभि कांट कर कस्तूरी निकाल लेता है। उसी प्रकार जीव अपने घट में निवास करने वाले परमात्मा को नहीं समझ पाता जब कस्तूरी

के समान ब्रह्म घट से निकल जाता है तब यह शरीर अर्थहीन हो जाता है। यथा–

दुहुँ जग जाकी उपमा नाहीं। रे मन सोइ बसै तोहि माहीं।

का ढूढ़हिं जहाँ तहाँ उदासा। मृग ज्यों तृण–तृण ढूंढत बासा।

जब किरात नाभि कटि लेई। मृग पछताइ तहाँ जिउ देई।

मृगमद माह बास ज्यों रहई। त्यों घट माह निरंजन अहई।''[107]

(छन्द सं0112)

ब्रह्म और जगत के सम्बन्ध को समुद्र और लहर जैसा बताया है। ज्ञान दृष्टि से देखने वालों को केवल समुद्र ही दिखाई देता है। ब्रह्म रूपी विशाल समुद्र में सम्पूर्ण सृष्टि बालू के कण के समान छिपी रहती है। यथा–

दूसर जगत नाम जिन पावा। जैसे सहरी (लहरी) उदधि कहावा।

ज्ञान नैन जो देखै कोई। वारिधि बिना आन नहिं होई।

जहवाँ सिन्धु अपार अति बिनु तट बिनु परिमान।

सकल सिष्टि तेहिमां गुपुत बालू कनक समान।''[108]

(घ) विविध पर्वों तथा त्योहारों से सम्बद्ध शब्द

(1) चांदायन– दाऊद ने फागुन का वर्णन बारहमासी के माध्यम से मैंना–संदेश–निवेदन खण्ड में वर्णित किया है। त्यौहार से सम्बन्धित **फागुन** शब्द ही प्राप्त है।

फागुनि सीउ चरगुन कहा। उछर पवन सतगुन होइ रहा।''[109]

x x x

नाचहिं फाग होइ इनकारा। तेहिं रस भीनीं सबइ सयंसारा।

रगत रोइ मइं तब कइ चोल चीर रतनार।

कहि सुरिजन तोरि मैनां भइ होरी जरि छार।''[110]

(2) मृगावती– मृगावती में त्योहार से सम्बन्धि शब्द **मांचरचारा, फागुन, एकादशी** शब्द ही प्राप्त है। मृगावती की एक सखी के घर हर्षोंउत्सव मनाया जा रहा था। तब वह अपनी सखी मृगावती को आमंत्रित करते हुए कहती है।

''कहिसि हमरें घर मांगरचारा। तुम्हं आबहु तो जाइ संवारा।''[111]

इसके अतिरिक्त मिगरावति के एकादशी ब्रत का भी उल्लेख मिलता है। यथा–

मिरगावति रानी है 'भावा'। करइ एकादशि निरजल आवा।''[112]

x x x

जौ निरजला एकादसि आई। तेहि ठां छपि कै रहा लुकाई।''[113]

x x x

कहिसि बिहानहि चलिए नहाई। करिय एकादसि निरजला आई।''[114]

फागुन त्यौहार का वर्णन करते हुए कवि ने **बारहमासा** के माध्यम से व्यक्त करते हुए कहा है–

फागुन फागु जगत सब खेला। होरी मांझ मैं रे जिउ मेला।''[115]

x x x

''आहर गएउ बसंत सुहावा। रहा छाप पिउ भवा परावा।

फागु बसंत सुहावन यह जोबन मैंमंत।

तरुअर पात जो झरि परे 'अजहुं न आएउ कंत।''[116]

इस प्रकार मृगावती में एकादसी ब्रत एवं होलिकावर्णन मिलता है।

(3) मधुमालती– मधुमालती में भी मंझन ने अन्य कवियों की भाँति **होलिकोत्सव** का वर्णन **बारहमासा** के मध्यम से व्यक्त किया है–

फागुन सखी बिपति सुनु मोरी, बिरह आगि जरि भौ जे होरी।

तरुअर पात कर रहा न नाऊ, जानेहु जरे बिरह के दाऊ।।"[117]

(4) चित्रावली– चित्रावली में फारसियों के त्योहार **नवरोज** का वर्णन मिलता है। यथा–

पुनि नवरोज सरहों काहा, धन सो पुरूष जे पायो लाहा।

दलबादल जहँ अंबर छावा, ससि सूरज तेहि माँह बनावा।"[118]

निष्कर्ष अतः निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि (क) विविध समुदायों तथा साधनाओं से सम्बद्ध शब्दावली के अन्तर्गत (1)चांदायन में मरण साधना के लिए प्रयुक्त शब्द सरग एवं परान मरऊं जियावा (2) मृगावती में प्रेम, संकर सूर, पारवती ससि, (3) मधुमालती में गुरु दर्शन, ब्रह्म विचारी, एक विधाता, (4) चित्रावली में गुरमुख, मारग गहा, साह निजाम, आदि शब्द प्राप्त हैं। (ख) विविध संस्कारों एवं कृत्यों आदि से सम्बद्ध शब्दावली के अन्तर्गत (1) चांदायन में– अवतार, (2) मृगावती में– गुन सिखारावहु, पोथा बांच पुरान, निछावरि, गांठि बांधा, भेंटइ, (3) मधुमालती में पिण्डा देई, अवतारा, नेवछावरि, (4) चित्रावली में– औतारा, छठीं नेगिन्ह आदि शब्द प्राप्य हैं। (ग) विविध दर्शनों से सम्बन्धित शब्दावली के अन्तर्गत (1) चांदायन में सिरजनहार (2) मृगावती में नूर मुहम्मद, गुरुखनाथ (3) मधुमालती में प्रेम, मुनिवर सिस्टि, परगट (4) चित्रावली में पवन, अलख गुसाई, आदि शब्द प्राप्त हैं। (घ) विविध पर्वों तथा त्योहारों से सम्बद्ध शब्द (1) चांदायन में फागुन, (2) मृगावती में मांगरचारा, फागुन, एकादशी, (3) मधुमालती में फागुन (4) चित्रावली में नवरोज आदि शब्द प्राप्त हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– अमीर अली, दि स्फिरिट आफ इस्लाम (भूमिका) पृ0 18

2– तारा चन्द्र, इनफ्लुएंस आफ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर, पृ0 65

3– वही, 51

4–राम पूजन तिवारी, सूफीमत साधना, और साहित्य, पृ0 133

5– वही, 134

6– वही, 183

7– हजारी प्रसाद द्विवेदी, नाथ सम्प्रदाय, पृ0 96

8– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक--माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967,

9– वही,

10–वही,

11–वही,

12–वही,

13–वही,

14–वही,

15–वही,

16–वही,

17–वही,

18–वही,

19–वही,

20—वही,

21—वही,

22— मृगावती, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968

23—वही,

24—वही,

25—वही,

26— वही,

27—वही,

28— वही,

29—वही,

30— मंझन कृत मधुमालती, टीका, डा0 सुरेश अग्रवाल, अशोक प्रकाशन नई सड़क दिल्ली, पृ0 69

31— वही, 69

32— वही, 70

33— वही, 70

34— वही, 71

35— वही, 71

36— वही, 72

37— वही 72

38— वही, 72

39– वही 73

40– उसमान कृत चित्रावली, टीका, व्याख्याकार, डा0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, रीगल बुक डिपो, दिल्ली 6, पृ0 स0 3

41– वही, पृ0 स0 3

42– वही, पृ0 स0 3

43– वही, पृ0 स0 3

44– वही, पृ0 स0 4

45–वही, पृ0 स0 35

46– वही, पृ0 स0 35

47–वही, पृ0 स0 35

48–वही, पृ0 स0 35

49–वही, पृ0 स0 35

50–वही, पृ0 स0 36

51–वही, पृ0 स0 36

52–वही, पृ0 स0 36

53–वही, पृ0 स0 36

53–वही, पृ0 स0 36

54– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 स0 29

55– वही, पृ0 स0 31

56– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा,

प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 11

57– वही पृ0 स0 13

58– वही पृ0 स0 72

59– वही पृ0 स0 73

60–वही पृ0 स0 120

61–वही पृ0 स0 121

62–वही पृ0 स0 121

63–वही पृ0 स0 109

64–वही पृ0 स0 305

65–वही पृ0 स0 303

66–मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 17

67– वही पृ0 स0 17

68–वही पृ0 स0 18

69– वही पृ0 स0 18

70–वही पृ0 स0 18

71–वही पृ0 स0 19

72–वही पृ0 स0 19

73–वही पृ0 स0 19

74–वही पृ0 स0 19

75–वही पृ0 स0 132

76–वही पृ0 स0 132

77–वही पृ0 स0 132

78–वही पृ0 स0 132

79–वही पृ0 स0 132

80– उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 13

81– वही पृ0 14

82– वही पृ0 14

83– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 स0 2

84– वही पृ0 स0 2

85–वही पृ0 स0 3

86–वही पृ0 स0 4

87–वही पृ0 स0 5

88–वही पृ0 स0 178

89–मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 3

90– वही, पृ0 सृ0 1

91– शिव गोपाल मिश्र मृगावती, छन्द सं0 123

92– मंझन कृत मधुमालती, टीका–लेखक–डा0 सुरेश अग्रवाल, अशोक प्रकाशन नई सड़क दिल्ली, पृ0 स0 21

93–वही, पृ0 सृ0 20

94–वही, पृ0 सृ0 21

95–वही, पृ0 सृ0 21

96–वही, पृ0 सृ0 23

97–वही, पृ0 सृ0 23

98–वही, पृ0 सृ0 23

99–वही, पृ0 सृ0 23

100–वही, पृ0 सृ0 23

101–उसमान कृत चित्रावली, टीका, व्याख्याकार, डा0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, रीगल बुक डिपो, दिल्ली 6, पृ0 स0 76

102–वही, पृ0 सृ0 77

103–वही, पृ0 सृ0 77

104–वही, पृ0 सृ0 77

105–वही, पृ0 सृ0 77

106–वही, पृ0 सृ0 101

107–सूफीमत, कन्हैया सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1998, पेज न0 77

108–उसमान कृत चित्रावली, टीका, व्याख्याकार, डा0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, रीगल बुक डिपो, दिल्ली 6, पृ0 स0 103

109–दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 स0 348

110–वही, पृ0 सृ0 348

111–मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 218

112–वही, पृ0 सृ0 58

113–वही, पृ0 सृ0 58

114–वही, पृ0 सृ0 59

115–वही, पृ0 सृ0 112

116–वही, पृ0 सृ0 113

117–मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 122

118–उसमान कृत चित्रावली, टीका, व्याख्याकार, डा0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, रीगल बुक डिपो, दिल्ली 6, पृ0 स0 126

अध्याय 7

आरण्यक तथा औपवनिक शब्द

(क) वृक्ष एवं वीरुध

(ख) पुष्प

(ग) फलादि

अध्यायं 7

आरण्यक तथा औपवनिक शब्द – सूफी काव्य (प्रेम काव्य) में वृक्ष, फल, लताएँ आदि का वर्णन अनेक स्थानों पर वाटिका, महल, भवन, बाग आदि के सौन्दर्य वर्णन के साथ–साथ अनेक उपमानों के रूप में भी बिखरे हुए हैं।

वृक्ष के अनेक पर्यायवाची प्रयुक्त हुए हैं– **तरुवर, द्रुम, बिटप** आदि अनेक शब्द मिलते हैं। फूल के भी पर्यायवादी भी **सुमन, कुसुम, कलिका** आदि शब्द मिलते हैं। वीरुध के भी अनेक पर्यायवादी शब्द– **डार, पात** आदि नाम प्रयुक्त हुए है।
इसके अन्तर्गत हम चांदायन, मृगावती, मधुमालती और चित्रावली में प्रयुक्त शब्दों का अध्ययन करेंगे।

(क) वृक्ष एवं वीरुध–(1) चांदायन– चांदायन में मु0 दाऊद ने वृक्ष एवं वीरुध के शब्दों का प्रयोग करते हुए गोवर वर्णन खण्ड में उद्यान का वर्णन करते हुए वृक्षों में **नारियल, गुवा, ताड़, बास, खजूर, पीपल** आदि का वर्णन किया है।

नारियल– खजूर की जाति का एक वृक्ष जो खम्भे की तरह पचास–साठ गज ऊँचा होता है। इसके फलों पर घना रेशादार छिलका होता है, फल के भीतर सफेद गरी खाने में मीठी होती है।

"नारियर (नारियल) गो(गू)वा के तह(हं) रूषा।"[1]

गुवा– (सं0 पु0 सुपारी) यह एक सुपारी का वृक्ष होता है। यथा–

"नारियर (नारियल) **गो(गू)वा** के तह(हं) रूषा।"[2]

ताड़– यह नारियल के वृक्ष से मिलता जुलता है। इसके फल से **'ताड़ी'** नामक शराब बनती है।

कटहर **तारा(र)(ताड़)** भरे अ(अं)बराना (मा?)"[3]

x x x

"**तार (ताड़)** खिजूरि जामु लखराऊं"[4]

बाँस– यह एक जंगली वृक्ष है। सूखा बाँस अनेक रूपों में प्रयोग किया जाता है।

"**बाँस** षिजूरि बर पीपरा"[5]

कटहल– एक वृक्ष जिसमें हाथ भर लम्बे मोटे फल लगते हैं।

"**कटहर (कटहल)** तारा(र) भरे (अं)बराना (मा?)"[6]

खजूर – ताड़ की जाति का एक वृक्ष जिसके फल छोहारे के आकार के होते हैं, एक प्रकार की मिठाई।

"बाँस **षिजूरि (खजूर)** बर पीपरा"[7]

x x x

"तार **खिजूरि (खजूर)** जामु लखराऊं"[8]

पीपल– बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसको हिन्दू लोग बहुत पवित्र मानते हैं।

"बाँस षिजूरि बर **पीपरा(पीपल)**"[9]

चन्दन– एक प्रसिद्ध पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत सुगन्धित होती है तथा इस लकड़ी को घिसकर बनाया हुआ लेप देवताओं के तिलक के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

"अगरु **चंदनु (चन्दन)** 'सबु' धरा बिकाई"[10]

x x x

"अगरु **चंदन (चन्दन)** उषंटना अछइ सुहाई बासु"[11]

x x x

"अगर **चंदन** फूल अउ पानूं"[12]

जलकुकुरी (जलकुम्भी) – यह जल के तल पर होने वाली एक वनस्पति है।

" अरु **जलकुकुरी** चहुचुहाई"[13]

कोंपल– पल्लव नई पत्ती जो किसी पौधे में से निकलती है।

"पियर पात जस बिनु जीवा(उ) रहेउं **कोंप** कु(कुं)बिलाइ।"[14]

(2) मृगावती– कुतुबन ने आरण्यक (वन जंगल) तथा औपवनिक (उपवन–बगीचा) के शब्दों का प्रयोग बड़े ही सुन्दर एवं मार्मिक ढ़ग से किया है। मृगावती में निम्न वनों के नामों का उल्लेख प्राप्त है, जो बड़ा ही समीचीन है। यथा– **कजली वन** के बारे में कुतुबन ने लिखा हैं–

"तेहि सेउं **कजली वन** एक आहीं"[15]

X X X

"आइ परेउं **कजली वन** महां"[16]

कजली वन के अतिरिक्त **आरनवन खण्ड** के बारे में भी कुतुबन ने लिखा है–

" **आरन वन खंड** आव न कोई।"[17]

X X X

"**आरन वन खंड** मांझ धसाएउं"[18]

लखराउं – वह बाग जिसमें एक लाख पेड़ हो।

"पैठि देख **लखराउं** सोहाई"[19]

अमराई– आम का बाग।

"देखेसि' एक **अंबराउं** सुहाई"[20]

केदली– (केले का पेड़)

"**केदली** पेड डारि छतनारी।"[21]

कंचल गट्टा– कमल का बीज।

"बिहसहिं हंसहिं **कंवल गट** तोरहिं।"[22]

हरे पात– हरे पत्ते।

हरे पात सब कोंपल नए।"[23]

कोंपल– परिभाषा पूर्व में दी जा चुकी है।

हरे पात **कोंपल** नए।"[24]

डार– (डाली) वृक्ष का एक हिस्सा।

डार पांखी दोइ बोलहिं बैठी (बईठी)"[25]

x **x** **x**

डार टेकि कर रोवइ ठाढ़ी।"[26]

(3) मधुमालती– जायसीतर सूफी काव्य में मु0 दाऊद की भाँति मंझन ने भी अनेक वृक्षों एवं लताओं का वर्णन अपने प्रेम काव्य में किया है। **अंबराई** (आम का बाग), **चन्दन, खजूर, कटहर** एवं **कल्प वृक्ष** तथा **डार, ताड़** आदि।

अंबराई– आम का बाग।

"चलहु जाइ कौतुक **अंबराई**"[27]

x **x** **x**

"कहेन्हि चलौ खेलैं **अंबराई**"[28]

चन्दन– एक वृक्ष जिसकी लकड़ी पूजा पाठ के लिए प्रयुक्त होती है।

"**चन्दन** कै वन–बन उपजै"[29]

खजूर– परिभाषा पूर्व में दी जा चुकी है।

'घायेल **खजूर** फाटि गौ छाती"[30]

कटहर– एक वृक्ष जिस पर 5–7 किलो के फल आते है। जो सब्जी के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

"**कटहर** पहिरु कॉंट की सारी।"[31]

कल्प वृक्ष– "कल्प वृक्ष स्वर्ग का वृक्ष विशेष है। प्रत्येक इच्छित वस्तु इसके द्वारा प्राप्त की जा सकती ह।"[32]

कल्पविछ पुहमी परिहरै"[33]

डार– (वृक्षकी टहनियाँ), **डाली**, वृक्ष की एक शाखा।

"जस बसंत रितु सिर के **डारा**"[34]

(4) चित्रावली— कविवर उसमान ने भी अन्य कवियों की भाँति पेड़ पौधों और फलों का विवरण अपने काव्य में यथा स्थान किया है। यथा—

नारियल— परिभाषा पूर्व में प्रेषित है।

"नरियर— और सोपारी लाई"[35]

सोपारी— परिभाषा पूर्व में प्रेषित है।

"नरियर और **सोपारी** लाई"[36]

पुरइन— कमल का पत्ता।

"भीतर सरवर **पुरइन** पूरी"[37]

डार—पात—

मंजुल **डार—पात** अति हरे"[38]

वनस्पतियाँ और **पत्ते** आदि का उल्लेख एक ही पंक्ति में दृष्टव्य है।

"जहं लग **वनसपती तरु पाता**"[39]

(ख) पुष्प— सूफी प्रेमाख्यानों की नायिकाओं को रिझाने के लिए तत्कालीन कवियों ने अनेक प्रकार के पुष्पों का वर्णन अपने काव्य में काव्य सौष्ठव के लिये किया है। उद्यान वर्णन, महल वर्णन, वन वर्णन आदि में अनेक पुष्पों के नाम उद्धृत किये गये हैं। आइये क्रमशः कृतियों के वर्णन से इसे देखें।

(1) चांदायन— चांदायन में अनेक फूलों का उल्लेख मिलता है।

कुंद— इसका झाड़ होता है। सफेद रंग का छोटा किन्तु सुगन्धित फूल अगहन पूस में आता है।

"दौना मरुवा **कुंद** निवारी"[40]

निवारी— इसका श्वेत फूल चैत के महीने में लगता है। इसको आज कल निवाडझै भी कहते है।

"दौन मरुवा कुंद **निवारी**"[41]

मरुवा– (मरुआ, मरुवौ) इसके फूल सफेद रंग एवं लाल रंग वाले होते हैं। यह फूल फागुन चैत्र में पुष्पित होता है।

"दौन **मरुवा** कुंद निवारी।"[42]

कंवल– "आई ने अकबरी में कंवल दो प्रकार का बताया गया है। एक सूर्य तथा दूसरा चन्द्रमा के प्रकाश से खिलने वाला गुलाबी तथा सफेद।"[43]

कंवल फूल 'मोर' हिरदा सूखा"[44]

x x x

कंवल क फूल जीभि तेहि माहां"[45]

x x x

कंवल क फूल वीरिय अति लोने।"[46]

(2) मृगावती– मृगावती में भी अनेक पुष्पों का वर्णन किया गया ह। जैसे– कंवल, कुमुदिनि आदि।

कंवल– भारतीय फूलों में सर्वोच्च स्थान कमल का है।"[47] साहित्य, चित्रकला तथा वास्तुकला सभी में कमल का विशिष्ट स्थान रहा है। यह सरोवर में खिलता है। पत्तें भी अत्यन्त आकर्षक गोल आकार के होते हैं, जो पानी की सतह पर तैरते रहते हैं तथा फूल सीधी डंडी पर पानी की सतह पर खिलता है।

"फूले बहुत **कंवल** तहं अहा।"[48]

x x x

जनौं पानि बिनु **कंवल** सुखाई।"[49]

कुमुदिनि– कुई नामक झाड़ या लता का पुष्प।

"फूली **कुमुदिनि** सघन सुहाई।"[50]

x x x

ताल मांझ फूलीं जनौं **कुईं**"[51]

इसके अतिरिक्त मृगावती के पांखी खण्ड में **चंपा**, **जूही**, **निवारी**, **चंबेली**, आदि पुष्पों का वर्णन एक साथ देखने को मिलता है। यथा–

"भुई **चंपा** भुई रही लजाई"[52]

X X X

"जूही निवारी करना फूला"[53]

X X X

"सेवती अनी **चंवेली** लाई"[54]

सेवती– "इसकी आकृति गुलाब जैसी, रंग सफेद तथा चार से छः तक पंखुडियाँ होती है और गुजरात तथा दक्षिण में अधिक होता है।"[55]

सेवती अनी चंवेली आई"[56]

(3) मधुमालती– अन्य कवियों की भाँति मंझन ने भी अनेक पुष्पों का उल्लेख किया है। मधुमालती में **कुसुम, टेसू सेवल, तिल का फूल** आदि के नामों का प्रसंगवत विवरण मिलता है।

कुसुम– "मदन कुसुम ग्यान बिगासा"[57]

X X X

"दरमरि सेज कुसुम कुंभिलाना"[58]

X X X

"कुसुम बास सुरंग जो पावै"[59]

टेसू– एक प्रकार का फूल जिसको पानी में डालकर रंग उतारा जाता है तथा होलीकोत्सव में एक दूसरे पर इस रंग को डालते थे।

टेसू आगि लाइ सिर रहा"[60]

सेवल– परिभाषा पूर्व में दी जा चुकी है।

सुअटा **सेंवर** बेगि तजु''[61]

तिल का फूल–

'' **तिलक फूल** मैं बरनि न पांरा''[62]

कुमुदिनी– परिभाषा पूर्व में दी जा चुकी है।

''कै जनु **कुमुदिनी** ससि रंग राती''[63]

x x x

कौंल **कुमुद** जल बूड न गये''[64]

(4) चित्रावली– चित्रावली में अन्य कवियों के भाँति उसमान ने भी पुष्पों का वर्णन अपने काव्य में काव्य सौन्दर्य हेतु प्रयुक्त किया है। यथा– **कवल, कुमुद, जूही, कनेर** आदि।

कवल– परिभाषा पूर्व में दी जा चुकी है।

''तोरि **कंवल** केसर झहराही'' [65]

कुमुद– कमल के समान एक फूल जो रात में खिलता है।

बासर पदुम **कुमुद** रह फूला''[66]

जूही– इसका श्वेत रंग का फूल होता है।

''जाही **जूही** अति बहुताई''[67]

गुलाब– यह लाल पीला गुलाबी तथा सफेद आदि कई रंगों का होता है।

''कदम **गुलाब** लाग बहु भाँति''[68]

कुंदि (कनेर) – इसका पौधा छः सात हाथ ऊँचा होता है। जिसमें लाल पीले या सफेद रंगों के फूल आते हैं।

''चंपकली जनु **कुँदि** उतारी''[69]

मौलसिरी – एक प्रकार का सदा बहार वृक्ष जिसमें छोटे छोटे सुगन्धित फूल होते हैं।

''मौलसिरी फूली औ मूँदी''[70]

(ग) फलादि– सूफी काव्य में फलों के नामों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। वाटिका वर्णन, हाट वर्णन तथा भोजन आदि में इनका विवरण मिलता है।

(1) चांदायन– दाउद कृत चांदायन में निम्न लिखित फलों के नाम मिलते है। **अनार, अंगूर, कैथ** आदि का उल्लेख किया है।

दारयौ– दाड़िम (अनार)– एक प्रकार का फल जो गोल होता है तथा उसके अन्दर लाल रंग के दाने होते हैं।

"दारयौ (यौं) दाष बह(हु)ल लै लाइ(ई)"[71]

दाष–द्राक्षा (अंगूर)

"दारयौ **दाष** बहुल ले लाई।"[72]

जामुन तथा **कैथ** –

जामिनि कैथ न को जाना।"[73]

अबिली (इमली)

बास षिजूर बर पीपरा **अ(अं)बली** भई सैवार"[74]

नारंगी (संतरा)

नारिंग–झारिग कहे न जाई"[75]

(2) मृगावती– मृगावती में भी अन्य कृतियों की भाँति फलों का सन्दर्भ कम देखने को मिलता है। किन्तु **अंब (आम)** तथा **इमली** शब्द प्राप्त हैं।

अंब (आम)

"भूखे **अंब** न पाकै बारा"[76]

x x x

"पावा **आंब** जइस मन भावा"[77]

इमली–

"**अंबिली** दूढ़त हौं इहं आवा"[78]

(3) मधुमालती– जायसीतर काव्य का अध्ययन करने पर हम पाते है कि मु0 दाऊद, कुतुबन की भाँति मंझन ने भी अपने काव्य में समरसता लाने के लिए अनेक फलों का वर्णन किया है। जिसने उनके काव्य को सौष्ठव प्रदान किया है, अध्ययन के दौरान हमने पाया कि मंझन ने भी अनेक फलों के नाम का प्रयोग किया है। **आम, केदली, अनार, नारंग, जामुन** आदि फलों के नाम मंझन के काव्य (प्रेम काव्य) मधुमालती में मिलते हैं।

आम– (अंबराई) परिभाषा पूर्ववत्।

"चलहु जाइ कौतुक **अँबराई**"[79]

x x x

"कहेन्हि चलौ खेलै **अंबराई**"[80]

x x x

"पेमा तुरित चलौ **अंबराई**"[81]

x x x

"नासि चली ते सब **अंबरई**"[82]

केला– केदली

विपरीत बन **केदली**, औ गज सुंड सुभाउ"[83]

अनार परिभाषा पूर्ववत्

"देखि **अनार** हिया बिहराने"[84]

नारंग (नारंगी, संतरा) परिभाषा पूर्ववत्।

"**नारंग** रकत घूँटि भौ राती"[85]

जामुन– परिभाषा पूर्ववत्

जामुनि भई डार दुख कारी"[86]

(4) चित्रावली– चित्रावली में भी **दाड़िम** (अनार), **दाखा** (द्राक्षा) **बड़हर** आदि शब्द मिलते है।

दाड़िम (अनार)– परिभाषा पूर्ववत्

"अमिरितफर औ **दाड़िम** दाखा"[87]

दाखा– अन्य नाम **दाख, द्राक्षा, अंगूर** आदि।

"अमिरितफर और दाड़िम **दाखा**"[88]

बड़हर– एक खट्टा मीठा फूल।

कटहल **बड़हर** कोऊ न खाई"[89]

निष्कष– निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि जायसीतर काव्य (प्रेम काव्य) में (क) **वृक्ष** एवं **वीरुध** के लिए **(1) चांदायन** में– **नारियल, गुवा, ताड़, बाँस, कटहल, खजूर, पीपल, चन्दन जलकुकुरी** तथा **कोंपल** शब्दों का प्रयोग हुआ है। **(2) मृगावती** में– **कजली वन, आरन वन खंड, लाखनाउं, अमराई, केदली, कंवलगट, हरे पात, कोंपल** तथा **डार** शब्दों का प्रयोग किया गया है। **(3) मधुमालती** में– **अंबराई, चन्दन, खजूर, कटहर, कल्पवृक्ष डार** आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। **(4) चित्रावली** में **नरियर, सोपारी, पुरइन, डार–पात, वनस्पतियाँ,** आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

(ख) पुष्पों आदि के शब्दों का प्रयोग **(1) चांदायन** में– **कुंद, निवारी, मरुआ, कंवल** आदि मिलते है। **(2) मृगावती** में– कंवल, कुमुदिनी, चंपा, निवारी, चंवेली तथा **सेवती** मिलते है। **(3) मधुमालती** में– **कुसुम, टेसू, सेंवर, तिल का फूल, कुमुदिनी** तथा **कुमुद** शब्दों का प्रयोग किया गया है। **(4) चित्रावली** में भी अन्य कृतियों की भाँति **कवल, कुमुद, जूही, गुलाब, कुंदि** तथा **मौलसिरी** नामक पुष्पों का उल्लेख मिलता है।

(ग) फलादि के लिए **(1) चांदायन** में **दाड़िम (अनार), द्राक्षा (अंगूर), जामुन, कैथ, नारंगी (संतरा)** आदि फलों के नामों का उल्लेख है। **(2) मृगावती** में– **आब (आम), अंबिली (ईमली),** फलों का ही उल्लेख प्राप्य है। **(3) मधुमालती** में– **अंबराई, केदली, अनार, नारंग** तथा **जामुन** नामक फलों का उल्लेख मिलता है। **(4) चित्रावली** में **अनार, अंगूर, बड़हर** आदि नामक फलों का उल्लेख प्राप्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1—दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 16

2— वही पृ0 16

3— वही पृ0 16

4— वही पृ0 90

5— वही पृ0 16

6— वही पृ0 16

7— वही पृ0 16

8— वही पृ0 90

9— वही पृ0 16

10— वही पृ0 25

11— वही पृ0 28

12— वही पृ0 29

13— वही पृ0 20

14— वही पृ0 55

15— कुतुबन कृत मृगावती, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 129

16— वही 199

17— वही 186

18— वही 197

19— वही 167

20—वही 99

21– वही 20

22– वही 60

23– वही 20

24– वही 20

25– वही 165

26– वही 246

27– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 24

28– वही 61

29– वही 71

30– वही 67

31– वही 67

32– सूर सागर शब्दावली, डा निर्मला सक्सेना, हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1962, पृ0 331

33– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 67

34– वही 18

35– उसमान कृत चित्रावली, टीका, व्याख्याकार, डा0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, रीगल बुक डिपो, दिल्ली 6, पृ0 स0 174

36– वही, 174

37– वही 173

38– वही 174

39– वही, 108

40– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 25

41– वही, 25

42– वही, 25

43– सूर सागर शब्दावली, डा निर्मला सक्सेना, हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1962, पृ0 323

44– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 55

45– वही, 70

46– वही, 71

47– सूर सागर शब्दावली, डा निर्मला सक्सेना, हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1962, पृ0 322

48– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 19

49– वही, 132

50– वही, 18

51– वही, 176

52– वही, 169

53– वही, 168

54– वही, 168

55– सूर सागर शब्दावली, डा निर्मला सक्सेना, हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1962, पृ0 320

56– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा,

प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 168

57–मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 39

58– वही, 42

59– वही, 63

60– वही, 67

61– वही, 13

62– वही, 28

63– वही, 84

64– वही, 67

65– उसमान कृत चित्रावली, टीका, व्याख्याकार, डा0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, रीगल बुक डिपो, दिल्ली 6, पृ0 स0 163

66– वही, 173

67– वही, 166

68– वही, 166

69– वही, 166

70– वही, 166

71– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 16

72– वही, 16

73– वही, 16

74– वही, 16

75– वही, 16

76– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 163

77– वही, 123

78– वही, 123

79– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 24

80– वही, 61

81– वही, 62

82– वही, 83

83– वही 31

84– वही, 67

85– वही, 67

86– वही, 67

87– उसमान कृत चित्रावली, टीका, व्याख्याकार, डा0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, रीगल बुक डिपो, दिल्ली 6, पृ0 स0 174

88– वही, 174

89– वही, 174

अध्याय 8

कलात्मक शब्दावली

(क) साहित्यिक शब्द

(ख) संगीतात्मक शब्द

(ग) चित्र एवं शिल्प से सम्बद्ध शब्द

(घ) वास्तुकला से सम्बन्धित शब्द

अध्याय 8

कलात्मक शब्दावली– मनुष्य जीवन में विभिन्न कलाओं में से किसी एक कला से पूर्वरूपेण न सही किन्तु अंशिक रूप से प्रभावित अवश्य रहता है। वह कला के माध्यम से लोगों को आनन्दित करता है तथा उत्साहित करता है। कला के माध्यम से वह अपना जीवोपार्जन भी करता है। कला के अनेक रूप होते हैं। जैसे– साहित्य कला, शिल्प कला, चित्रकला, संगीत कला, वास्तुकला आदि। पुराणों में 64 कलाओं का वर्णन मिलता है। इस अध्याय में हम इन्हीं कलाओं का अध्ययन करते हुए उनकी शब्दावली का अनुशीलनात्मक अध्ययन करेंगे।

(क) साहित्यिक शब्द– कहा गया है कि "साहित्य समाज का दर्पण होता है।" अगर साहित्य समाज का दर्पण है तो वह साहित्यकार अपने समय की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक स्थितियों से गुजरता हुआ अपने काव्य सृजन के माध्यम से वह विसंगतियों, कुत्सित व्यवहार आदि का वर्णन शब्दों के माध्यम से करता है। आइये हम क्रमशः इस पर विचार करें।

(1) चांदायन– चांदायन के चांदा श्रृंगार वर्णन खण्ड में साहित्य के अनेक विधाओं के नाम एक स्थान पर मिलते हैं। जिसमें **गीत, नाद, रसपूर्व कवित्व, कहानी,** तथा **कथाएं** और **गान शब्द** उल्लेखनीय रूप से दृष्टव्य हैं।

"**गीत नाद रस कवित कहानी कथा** कहि **गाव** निहार"[1]

x x x

"**सबद** (शब्द) सुहाव कान पर जागत रइनि विहावइ"[2]

(2) मृगावती– सम्पूर्ण भाषाएँ तथा उनमें सृजित उनका साहित्य अपनी भाषा की कसौटी होता है। गद्य एवं पद्य में लिखा गया आलेख, लेख काव्य ही साहित्य के नाम से निगदित है। सम्पूर्ण लिखा गया, सुना गया तथा पढ़ा जाने वाला साहित्य ही होता है। किन्तु कुछ शब्द साधारण होते हैं, कुछ चमत्कारिक तथा कुछ साहित्यिक। मृगावती में भी

कुछ शब्द ऐसे प्राप्य है जो अपने आप में साहित्य का अववोध करता है। जिनमें से **बाजत चले सबद, पढ़ना, षट भाषा, संस्कृत, अर्थ पंचाशिका, सूर्य सारिणी, महाभारत, अमर कोष, अर्थ, कोक गंभीर, अक्षर** आदि 'प्रमुख रूप से विद्यमान है।

"बाजत चले **सबद (शब्द)** सब पूरा"[3]

x x x

"पूंछिसि **पढइ (पढ़ना)** तुम्हं जानां।

षटभासा (षटभाषा) जो सम्पूरन आनां।

सहंसकीरत (संस्कृत) अरथपंचासिक (अर्थ पंचाशिका)।

सूर सरिनी (सूर्य सारिणी) **माकरी** (कर्मटी) चौरासिक।

भारथ (भहाभारत) पिंगल **अमरौ** (अमरकोष) जानां।

कहइ **अरथ** (अर्थ) औ संगति बखानां।

साल होत औ **कोक** (रति रहस्य) पढ़ाई।"[4]

x x x

"ताल **गंभीर** (ध्वनि) नाउं सिउं लीन्हा"[5]

x x x

"एक एक **अक्खर** (अक्षर) कोक बखानै"[6]

(3) मधुमालती– मधुमालती में भी अनेक साहित्यिक शब्द मिलते हैं। वे हैं– **आखर (अक्षर), कोलाहल, वेद, पिंगल, कोक, व्याकरण, ज्योतिष, अर्थ, ग्रन्थ, पौढ़न, नाटक** आदि शब्द प्रयुक्त किये गये है।

"जहाँ न **आखर (अक्षर)** पुरै सँवारहु"[7]

x x x

"सब दिन कोड **कोलाहल**, सब दिन हर्ख बधाइ"[8]

x x x

"**वेद** भेद वहु भाँति बखाना,

अमर जो अमरु सतभावा, **पिंगल कोक** (रति रहस्य) कंठ औरावा।

व्याकरन (व्याकरण) जे **जोतिख** (ज्योतिष) **गीता**, गीत गोबिन्द **अर्थ** को कीता।

औ जो **ग्रन्थ** जोग, पढ़ा अनेक कुमार"[9]

x x x

"उठि नाच कांछ सब, **पौढ़न** गये राजकुमार"[10]

x x x

"बहुत कथक नट **नाटक** बहु विध करै केवार"[11]

(4) चित्रावली– चित्रावती में साहित्यिक शब्द– **माँती, मयारा, सोहिल, दाद, कढ़हारा, केवा, शिवराज, पारधी, सोनहा, तुरी, दुहेला, अमरकोष, व्याकरण** आदि शब्द पाये जाते हैं।

"मूरति **माँती** (भ्रम में पड़ी हुयी) तहाँ समाई"[12]

x x x

"बिनती से जो होइ **मयारा** (प्रेम करने वाला)।"[13]

x x x

"बेसर मुकता **सोहिल** (एक अत्यन्त प्रकाशमान तारा) तारा"[14]

x x x

"दरसन पाय **दाद** (न्याय) पुनि पावै"[15]

x x x

"भौसागर महँ है **कढ़हारा** (निकालने वाला)"[16]

x x x

रूप बास भा केतकि **केवा** (फली)"[17]

x x x

"अब सब लेहु राज तुम, लेतु अहौं **शिवराज** (योग)"[18]

X **X** **X**

"निसि दिन रहहि **पारधी** (शिकार का पता लगाने वाला) राधा"[19]

X **X** **X**

"चीता **सोनहा** (कुत्ता) दीन्हें छोरी"[20]

X **X** **X**

"हलबल जाहिं न **तुरी** (शीतलता) बिलाने"[21]

X **X** **X**

"कहेसि कुंअर यह पंथ **दुहेला** (कठिन)"[22]

X **X** **X**

"**अमरकोश व्याकरन** बखाना"[23]

(ख) संगीतात्मक शब्द– पद्य साहित्य के सृजन करते समय कवि अनेक प्रकार के शब्दों का प्रयोग करता है। मनोविनोद, त्यौहार, पर्व, उत्सव, षटऋतु वर्णन आदि में काव्य को चमत्कारिक रूप प्रदान करने के लिए कुछ संगीत से सम्बन्धित शब्दावली का प्रयोग होना वास्तविक और स्वाभाविक है।

(1) चांदायान– चांदायान में संगीतात्मक शब्द कम ही प्राप्य हैं। जिसमें **गीत गाना, नृत्य, बजते, ताल** आदि प्रमुख हैं।

"**गावहि गीत** औ कहहिं पंवारा,

नट **नाचहि** (नृत्य) अउ **बाजहिं** (बजते) **तारा** (ताल)"[24]

X **X** **X**

"**गावहि गीत नाच** (नृत्य) भल करहीं"[25]

X **X** **X**

भररा (भरडे) **डंवरु** (डमरू) **डाक** (डक्क), बजावा"[26]

(2) मृगावती– मृगावती में भी संगीतात्मक शब्द– **संगीत, राग, नाद, भैरव, मधुमाधव, भैरव, मालकौंस, अलाप, दीपक, झंकार,** ....आदि शब्द प्राप्य हैं।

"त्रिया चरित्र बैद गुन जानइ **संगीत** सरबंग जान"[27]

x **x** **x**

"एहीं **राग** आसन हरि डोला"[28]

x **x** **x**

"छवौ संपूरन **राग** अलापे

औ जो तीसौ भारजा अहीं। एक–एक **राग** पाँच–पाँच गहीं।

प्रथमहिं नाद एक उन्ह किया। **भैरों** (भैरव) **अलापइ** (अलाप) लिया।

मधुमाधी (मधुमाधव) **सिंधवी** (सैंधवी) अलापी। वंगाला वैराटिक थापी।

औ गुनकरी संपूरन गाई। यहै भारजा **भैरों** (भैरव) आई।

भैरों (भैरव) पाँच वरगन्हि गाइन्हि सबै संपूरि।

बहुरि **मालकौसीक** (मालकौंस) **अलपिन्हि** (अलाप) जेहि क नावं बड़ि दूरि।"[29]

x **x** **x**

"एक न **दीपग** (दीपक) गाइन्हि जानत जेहि गाऔ है दोष"[30]

x **x** **x**

"भा **झनकार** (झंकार) मोहि सब रहे।"[31]

(3) मधुमालती– मधुमालती में भी संगीतात्मक शब्द है किन्तु वे अल्प ही मात्रा में प्रयुक्त हुये है। जिनमें **नाचहिं, बाजै, कथक, झनकार**....... आदि शब्द प्राप्य हैं।

"**नाचहिं** (नृत्य) गौरा वरिान देसी"[32]

x **x** **x**

"**बाजै** तीनौ लोक बधावा"[33]

x **x** **x**

"**बाजन बाजा** उठा अघाता"[34]

x **x** **x**

"बहुत **कथक** नट नाटक, बहु बिध करै केवार"[35]

x **x** **x**

"भई जोर झींगुर **झनकारा**"[36]

(4) चित्रावली – चित्रावली में संगीतात्मक शब्द **संगीत, ताल, कोलाहल, गान, नाच, ठुमुकना, झंनकार, शंख, नाद, वीन,** आदि शब्द मिलते हैं।

"जिन्ह पिंगल **संगीत** बखाना"[37]

x **x** **x**

"पढ़ी **संगीत** ताल देखरावा"[38]

x **x** **x**

"केलि **कोलाहल** चहुँदिसि होई"[39]

x **x** **x**

"सेख हसन **गाएन** भल आहा"[40]

x **x** **x**

"कवि उसमान बसै तेहि **गाऊँ**"[41]

x **x** **x**

"जहँ–तहँ **नाच** कूद पुनि होई, **ठुमुकत** बाट चलैं सब कोई"[42]

x **x** **x**

"**नाँच** कूद कसबा इहाँ"[43]

x **x** **x**

"पाँचों सबद जो जगत महँ, होइ रहा **झनकार**"[44]

x **x** **x**

"जे **संगीत** पढ़ा ते जाना"[45]

x **x** **x**

"कोई **संख** लै पूरै **नादू** (नाद)"[46]

x **x** **x**

"कोई **बीन** बाजयई"[47]

(ग) चित्र एवं शिल्प से सम्बद्ध शब्द– कला व्यक्ति का जीवन है। विभिन्न कलाएँ है। किसी एक कला से व्यक्ति का जीवन प्रभावित अवश्य रहता है। फिर रचनाकार काव्य के सृजन में विभिन्न कलाओं का समिश्रण कर काव्य को सौन्दर्यपरक बनाने के लिए दृढत्रसंकल्पित रहता है। कला के माध्यम से वह काव्य में मौलिकता प्रदान करने की भरपूर कोशिश करता है। अध्ययन के दौरान हमने जयसीतर काव्य में चित्र एवं शिल्प से सम्बद्ध अनेक शब्दों पर दृष्टिपात किया है।

(1) चांदायन– चांदायन में चित्र एवं शिल्प से सम्बद्ध शब्द जो प्राप्त हैं वे निम्न है– **चौंखण्डी, उरेह, लिखी, कौसीसेहिं, पवरि, जरि, किवार** आदि।

"झारि **चौखंडी** ईंगुर बानी।

चित्र **उरेह** कीन्ह **सोनवानी** (सोने का पानी)।

लंक **उरेह** भभीखुन रेहा।

संची मानु दसगियं कइ देहा।"[48]

x **x** **x**

"कथा कावि सिरलोक नटारंभ **लिखी** (उरेह) लाए चहु पाँति"[49]

x **x** **x**

"**कौसीसेहिं** (बुर्जों) सब **ईंगुर** लागा"[50]

x **x** **x**

"बीस **पवरि** (पौरियाँ) वीसउ **जरि** (जड़ित) लोहे सोनेइं रसे **किवार** (कपाट)"[51]

(2) मृगावती– मृगावती में चित्र एवं शिल्प से सम्बन्धित शब्द **पथेरा, चुनिहारु, ढ़ारहि, चितेरा, कुंदेरा, उरेहिन्हि** आदि शब्द प्राप्य हैं।

"आए **पथेरा** (ईंट पाथने वाले) और **चुनिहारू** (चुनाई करने वाले)"

आए सुनार जो **ढ़ारहिं** (ढ़ालते) पानी।

चतुर **चितेरा** (चित्रकार) अति रे बिनानी।

करौतिया बहु आए **कुंदेरा** (कुंदीगर)"[52]

x **x** **x**

"करथा नेह सब झारि **उरेहिन्हि** (उरेह) एक–एक अनवन भाँति।

सिंध मिरिग कस्तूरी **उरेहिन्हि** साउज पांतिहि पाँति"[53]

x **x** **x**

"उहइ कुंरगिनि **चित्र उरेही**, जेइं उन किए उपगार"[54]

(3) मधुमालती– मधुमालती में चित्र एवं शिल्प से सम्बन्धित केवल **चित्रसारी** शब्द ही प्राप्य है।

"घर घर चलौ तजौ **चित्रसारी**"[55]

x **x** **x**

"बाहर **चित्रसारी** जो आई"[56]

x **x** **x**

"आइ धाइ मंदिल **चित्रसारी**"[57]

(4) चित्रावली– चित्रावली में चित्र एवं शिल्प के शब्दों का प्रयोग अत्याधिक तो नहीं हुआ है किन्तु प्रसंगानुसार देखने को मिलता है। वे शब्द निम्न -- **सहस कला, विचित्र सँवारी तथा चितसारी** आदि है।

"राजा गेह चित्रावली बारी, **सहस कला** विधि ससि औतारी"[58]

x **x** **x**

"**सहस कला** होइ हियें सगाना"[59]

x **x** **x**

लिखि लिखि **चित्र बिचित्र** सिंगारा"[60]

x **x** **x**

"चित्रावलि की है **चितसारी,**

बारी माँहि **विचित्र संवारी**"[61]

x **x** **x**

"**चित्रसार** महँ कुँअर तजि, जहाँ न दूसर कोई"[62]

x **x** **x**

"पुनि दोउ एक संग **चित्रसारी**"[63]

x **x** **x**

"**चितसारी** जहँ **चित्र** तुम्हारा"[64]

x **x** **x**

"अस **विचित्र** नहि जाइ बखाना"[65]

x **x** **x**

"देखत **चित्र** गई हम आऊ, कहूँ **चित्र** अस देख न काऊ"[66]

x **x** **x**

"सुनि **चित्रिन चितसारी** आई, देखि **चित्र** मुख रही लुभाई"[67]

x **x** **x**

"केहि क **चित्र** औ उस **लीखा** (उरेह), अस वै लिखै कहाँ दहु सीखा"[68]

(घ) वास्तुकला से सम्बन्धित शब्द– वास्तुकला के अन्तर्गत भवन, सरोवर, बाग–बागीचा, मन्दिर आदि के निर्माण का वर्णन आता है। अतः इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है।

(1) **चांदायन**– दाऊद ने वास्तु कला से सम्बन्धित **कोटु, उचावा, पाथरु, पुरुष तीस, ऊंचाई, चकराई, पोखर, कुण्ड, खुदावए, मढ़, देवालय, उठाए, एक हजार एक झरना** आदि शब्दों का प्रयोग किया है।

"तेहि चाहि जे **कोटु** (परकोटा) **उचावा** (उठाया)।

कारु सेतु गढ़ि **पाथरु** (पत्थर कटों) लावा।

पुरस (पुरुस) तीस (30x3½=105 हाथ) यक आहि उंचाई।

हाथ **बीस** (बीस हाथ) केरी **चकराई** (चौड़ाई)"[69]

x **x** **x**

"तारा **पोखर** (तडाग) **कुण्ड खनाए** (खुदवाए)।

मढ (मठ) देवर (देवालय) चहुँ पासि उठाए"[70]

x **x** **x**

"सरवरु एकु सुभर भरि रहा।

झरनां सहंस एग अउ (एक सहस्र एक) बहा"[71]

(2) **मृगावती**– मृगावती में वास्तुकला से सम्बन्धित **नींव, खण्ड, मंदिर, उठइ, उचाए, झरोखा, पौरियाँ, आटारी, चौखंडी, ढारी** आदि शब्द प्रयुक्त हैं।

"सुतियन्ह **नींव** घालि देखराएँ **मंदिर** उठइ बहु भाँति"[72]

x **x** **x**

"**खण्ड** ऊपर **खण्ड** सात **उचाए** (उठाए),

घने **झरोखा** अति रे सोहाए।

चारि **पंवरि** (पौरियाँ) चतुरंग संवारी,

जानु चहूँ दिसि सजीं **आटारी** (अट्आलिका)

तिन्ह ऊपर **चौखण्डी** संवारी।

कनक पानि औ ईंगुर **ढारी** (ढारा)।"[73]

x **x** **x**

"मांगिसि सब **नटसार** क साजू"[74]

(3) **मधुमालती**– मधुमालती में वास्तुकला से सम्बन्धित शब्द **खण्ड, गढ़, गढ़ी, खाई, छाजा,** आदि शब्द प्राप्त है।

चहु **खण्ड** भौंत–भौंत मैं आवा मैं जाना तीर मैं पावा"[75]

x **x** **x**

गढ़ अनूप बस नग्र चर्नाढ़ी, कलियुग मों लंगा जो **गढ़ी**।

पुरब दिस जगरो फिर आई, उत्तर पछिम गंगा गढत्र **खाई**।

देखत बनै जाइ नहिं कहई, **गढ़ भीतर गंगा जल रहई**।

ऊपर **छाजा** अनौन भाँति, हेठ बहै सुरसरि सरसती।"[76]

(4) **चित्रावली**– चित्रावली में वास्तुकला से सम्बन्धित शब्द **कनक खंभ, कनक कबारा, छात, कंचन ढारे, नग जरित, कुंदन मंडी, चौखंडी** शब्द प्राप्त हैं।

"**कनक खंभ** (सोने का खंभा) औ **कनक कबारा** (सोने के कपाट),

लोग रतन करहिं उँजियारा।

ऊपर **छाता** अनूप सँवारे,

करि कटाव सब **कंचन ढारे**"[77]

x **x** **x**

"ठौर–ठौर सब **नग जरित** अस होइ रहेउ अँजोर"[78]

x **x** **x**

ता ऊपर जो **कुंदन मंडी,** सो चित्रावलि की **चौखंडी**"[79]

निष्कर्ष– इस प्रकार हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि **कलात्मक शब्दावली** के अन्तर्गत **(क) साहित्यिक शब्द– (1) चांदायन में गीत, नाद, रसपूर्व कवित्व, कहानी कथाएँ,** तथा गान **(2) मृगावती** में– **बाजत चले सबद, पढ़ना, षटभाषा,**

संस्कृत अर्थ पंचाशिका, सूर्य सारिणी, माकरी, महाभारत, अमरकोश, अर्थ, कोक, गंभीर अक्षर, (3) मधुमालती में– अखार, कोलाहल, वेद, पिंगल, कोक, व्याकरण, ज्योषित, गीत, अर्थ, ग्रन्थ, पौढ़न, नाटक तथा (4) चित्रावली में– माँती, मयारा, सोहिल, दाद, कढ़हारा, केवा, शिवराज पारधी, सोनहा, तुरी, दुहेला, अमरकोश, व्याकरण आदि शब्द प्रयुक्त हुये हैं।

(ख) संगीतात्मक शब्दावली के अन्तर्गत (1) चांदायन में– गीत गाना, नृत्य, बजते, ताल, (2) मृगावती में– संगीत, राग, नाद, भैरव, मधुमाधव, भैरव, मालकौंस, अलाप, दीपक, झंकार (3) मधुमालती में– नाचहिं, बाजै, कथक, झनकार तथा (4) चित्रावली में– संगीत, ताल, कोलाहल, गान, नाच, ठुमुकना, झनकार, शंख, नाद, बीन आदि प्राप्त हैं।

(ग) चित्र एवं शिल्प से सम्बन्धित शब्दावली के अन्तर्गत– (1) चांदायन में– चौखंडी, उरेह, लिखी, कौसीसेहिं, पवरि, जरि, किवार, (2) मृगावती में– पथेरा, चुनिहारु, ढारहि, चितेरा, कुंदेरा, उरेहिन्हि (3) मधुमालती में– चित्रसारी तथा (4) चित्रावली में– सहस कला, विचित्र संवारी, चितसारी शब्द मिलते हैं।

(घ) वास्तुकला से सम्बन्धित शब्द– (1) चांदायन में– कोटु, उचावा, पाथरु, पुरुषतीस, ऊँचाई, चकराई, पोखर, कुण्ड, खुदावए, मढ़ देवालय, उठाए, झारना (2) मृगावती में– नींव, मंदिर उठई, उचाए, झरोखा, पौरियाँ, आटारी, चौखण्डी, ढारी (3) मधुमालती में– खण्ड, गढ, गढ़ी, गढ़भीतर, छाजा बहै सुरसरि तथा (4) चित्रावली में– कनक खंभ, कनक कबारा, छात, कंचन ढ़ारे, नग चरित, कुंदन मंडी, चौखंडी शब्द मिलते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 59

2 तदैव, 20

3– कुतुबन कृत मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 72

4– तदैव, 118

5– तदैव, 209

6– तदैव, 218

7– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 14

8– तदैव, 19

9– तदैव, 19

10– तदैव, 22

11–तदैव, 163

12– उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 1

13– तदैव, 2

14 तदैव, 5

15– तदैव, 5

16– तदैव, 6

17– तदैव, 8

18– तदैव, 10

19– तदैव, 15

20– तदैव, 15

21– तदैव, 17

22– तदैव, 25

23– तदैव, 14

24– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 26

25– तदैव, 26

26– तदैव 18

27– कुतुबन कृत मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 118

28– तदैव 175

29– तदैव 210

30– तदैव 211

31– तदैव 212

32– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 22

33– तदैव 24

34– तदैव 137

35– तदैव 163

36– तदैव 123

37– उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 7

38– तदैव 14

39– तदैव 7

40– तदैव 7

41– तदैव 7

42– तदैव 7

43– तदैव 56

44– तदैव 19

45– तदैव 19

46– तदैव 66

47– तदैव 66

48– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0188

49– तदैव 188

50– तदैव 22

51– तदैव 22

52– कुतुबन कृत मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स028

53– तदैव 29

54– तदैव 30

55– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 64

56– तदैव 64

57– तदैव 63

58– उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 17

59– तदैव 30

60– तदैव 26

61– तदैव 20

62– तदैव 20

63– तदैव 22

64– तदैव 30

65– तदैव 30

66– तदैव 30

67– तदैव 30

68– तदैव 30

69– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 22

70– तदैव 18

71– तदैव 19

72– कुतुबन कृत मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 28

73– तदैव 29

74– तदैव 209

75– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 59

76– तदैव 13

77– उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 21

78– तदैव 40

79– तदैव 57

अध्याय 9

सामाजिक शब्दावली

(क) पारिवारिक सम्बन्धों को व्यक्त करने वाली शब्दावली

(ख) वर्ण तथा जाति से सम्बद्ध शब्द

(ग) लौकिक रीतियों तथा अन्ध विश्वासों से सम्बन्ध शब्द

(घ) मनोविनोदों से सम्बद्ध शब्द

अध्याय 9

सामाजिक शब्दावली

(क) पारिवारिक सम्बन्धों को व्यक्त करने वाली शब्दावली

(ख) वर्ण तथा जाति से सम्बद्ध शब्द

(ग) लौकिक रीतियों तथा अन्ध विश्वासों से सम्बन्ध शब्द

(घ) मनोविनोदों से सम्बद्ध शब्द

अध्याय– 9

सामाजिक शब्दावली– व्यक्ति की सामाजिक स्थिति भी उनके नाम विधान में एक निर्णायक तत्व थी। मनु के अनुसार ब्राह्मण का नाम मंगल सूचक, क्षत्रिय का नाम बल सूचक, वैश्य का नाम धन सूचक तथा शूद्र का नाम जुगुप्सित अथवा कुत्सा सूचक रखना चाहिए। यथा–

"मंगल्यं ब्राह्मणस्य स्यात् क्षत्रियस्य बलान्वितम्।

वैष्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य तु जुगुप्सितम्।"[1]

इस अध्याय में हम पारिवाकर सम्बन्धों को व्यक्त करने वाली शब्दावली, वर्ण एवं जाति से सम्बद्ध शब्द, लौकिक रीतियों तथा अंधविश्वासों से सम्बन्ध शब्दों तथा मनोविनोद से सम्बद्ध शब्दों का अध्ययन करेगें।

(क) पारिवारिक सम्बन्धों को व्यक्त करने वाली शब्दावली– मनुष्य जब जन्म लेता है तब से अन्तिम समय तक वह अपने जीवन में अनेक प्रकार के सम्बन्धों का निर्वाह करता है। उनमें से है माता–पिता, पुत्र–पुत्री, बहिन–भाई, चाचा–चाची, ताऊ–ताई, नाना–नानी, दादा–दादी, के अतिरिक्त बहिनोई, मामा–मामी, भाभी आदि पारिवारिक सम्बन्धों का निर्वाह करता है।

(1) चांदायन– दाऊउ कृत चांदायन का अध्ययन करने पर हम पाते है कि उनके काव्य में पारिवारिक सम्बन्धों को व्यक्त करने के लिए **माता, पिता, पुत्र, बेटी, भाई, बहिन** और **पत्नी** शब्दों का उल्लेख प्राप्त है।

माता– **माता** देहु असीस मुझु मारि बांठु घरि आऊ।"[2]

x x x

माता बहुरि दीन असीसा"[3]

x x x

माता–पिता बधु नहि भाई"[4]

पिता– चांदायन में पिता के पर्यायवाची शब्द के रूप में वापहि शब्द का प्रयोग हुआ है।

"**वापहि** पूत न कोउ संभारा"[5]

X **X** **X**

पिता मोरु जउ रन जीति आइहि"[6]

X **X** **X**

मात–**पिता** बधु नहि भाई"[7]

पुत्र – **पुत्र** के लिए पूत शब्द का प्रयोग बड़ा ही समीचीन हैं।

"बापहि **पूत** न कोउ संभारा"[8]

X **X** **X**

बेटी– "सुनइ बोल जउ दीजइ **बेटी** वावन जोगु"[9]

X **X** **X**

भाई– "माता–पिता **बंधु** नहि **भाई**"[10]

बहिन– **बहिन** शब्द के लिए **वीरनि** शब्द प्रयुक्त किया गया है।

"साधि मरति हउं **वीरनि** लोरु दिखावहि मोहि"[11]

X **X** **X**

पत्नी– "**तिरयहि** कर हिय होइ मयारु"[12]

(2) **मृगावती**– पारिवारिक शब्दावली के अन्तर्गत हमने मृगावती में निम्न शब्दों **माता, पिता, कुंअर** आदि शब्दों का प्रयोग पाया है।

"**माता** पिता लोक जन छोड़ेसि चढ़ि घसि लिहेसि अंगार"[13]

X **X** **X**

"**पिता** बाझु तुम्हं जिइहइं नाहीं"[14]

X **X** **X**

"अति वुधवंत सबै गुन जानहु तुम्हं अस **पिता** न आन"[15]

x x x

"कहेसि जुहार **पिता** कहं जाऊं"[16]

x x x

"गनपति देव **पिता** कर नाउं"[17]

x x x

माता– पिता लोक जन छोड़सि चढ़ि घसि लिहेसि अंगार"[18]

x x x

कुंवर राइ तू लाइ हंकारेउ"[19]

x x x

राजइ देष **कुंअर** गा आई"[20]

(3) मधुमालती– मधुमालती में पारिवारिक शब्द कम प्राप्त है। **पिता**, और **कुंअर** शब्द ही मिलता है।

"महीं **पिता** घर सन्तति बारी"[21]

x x x

पिता कौन केहि देस भुआला"[22]

x x x

विक्रमाराउ **पिता** जग भूपा"[23]

x x x

कहु सुत तोहीं **पिता** दोहाई"[24]

x x x

पुनि पंडित **कुंअर** मन लावा"[25]

x x x

जौ लगि **कुंअर** विद्या साजी"[26]

(4) चित्रावली– अन्य कवियों की भाँति, उसमान ने भ अपने काव्य में पारिवारिक शब्दों के माध्यम से काव्य की कथा को सरसता से बढ़ाया है। उनकी काव्य कृति चित्रावली में माता, पिता, पुत्र, सुत, कुंअर आदि शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग मिलता है।

"**माता–पिता** दोऊ मरहिं, सुनि कलपै सब कोइ"[27]

x x x

"**मात** चरित सुनि हियें सँकानी, **पिता** संक पुनि अधिक लजानी"[28]

x x x

"जे अस बात **मातु (माता)** साँ चाली"[29]

x x x

"**मात–पिता** कर जिउ निसराई"[30]

x x x

"गुन सेवा **पति** निमिष नहेरा"[31]

x x x

"**सुत** को जान पाइ किन पाई, जानि बूझि कै सत्य नसाई

सत्य समान **पूत** जग नाहीं, सत सों रहै नाउँ जग माहीं

कोखि–**पूत** एक देस बखाना, सत्य **पूत** चारौ खंड जाना"[32]

x x x

"पुनि **सुत** संतति लच्छमीं राज पाट सुख भोग"[33]

x x x

"धरनीधर घर **सुत** औतारा"[34]

x x x

"सपरि **कुंअर** तब कटक लै, खेलै जाइ अहेर"[35]

x **x** **x**

"कहेसि **कुंअर** है धात अहेरा"[36]

x **x** **x**

कुँअर कटक सब जुरि चले, जहँ लघु राउत रान"[37]

x **x** **x**

कुंअर कहा यह कानन सोई"[38]

(ख) वर्ण तथा जाति से सम्बद्ध शब्द–

(1) चांदायन– दाऊद कृत चांदायन के द्वितीय गोवर वर्णन खण्ड में छन्द संख्या 25 में एक साथ ही अनेक जातियों के नाम उद्धृत है। **ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, ग्वाल, खंडेलवाल, अग्रवाल, तिवारी, पंचवान, थाकड़, जोशी, यजमान, खंघाई, वनजारे, श्रावक, पंवार, सोनी, रावत, ठाकुर, चौहान** आदि।

"**बांभन (ब्राह्मण) खतरी (क्षत्रिय), बैस (वैश्य) गोवारा (ग्वाल)।**

खांडरवार (खंडेलवाल) अउ **अग्गरवारा (अग्रवाल)।**

बसहि **तिवारी** अउ **पंचवानां (पंचवाना)।**

धाकर (थाकड़) जोशी अउ **जजमानां (यजमान)।**

बसहि **खंधाई (खंघाई) बनिजारा (बनजारे)।**

जाति **सरावग (श्रावक)** अउर **पंवारा (पंवारा)।**

सोनी बसहि **सुनार** बिनानी।

रावत लोग बसाए आनी।

ठाकुर बहुत बसहि **चोहानां**।"[39]

इनके अतिरिक्त **नाऊ, पटुवा (बुनकर) भूमिधर, वारी** तथा **छतीसउ (36)** जाति शब्दों का उल्लेख भी मिलता है।

"बाभन **नाऊ** गए सीह बारू"[40]

x **x** **x**

जाति सरागति देखउं नाहीं **पटुवा (बुनकर) भुइंहर (भूमिधर), वारि (बारी)**।''[41]

x **x** **x**

नेउता गोवर **छतीसउ (छत्तीस)** जाती''[42]

(2) मृगावती– मृगावती में भी दाऊद कृत चांदायन की भाँति ही **ब्राह्मण, बढई, लुहार, पेथरा, चुनिहारु, सुनार, क्षत्रिय उत्तम** जाति तथा **राघौ एवं सूरज** वंश का उल्लेख प्राप्य है।

''**वांभन (ब्राह्मण)** बैठि गनै सब लागे।''[43]

x **x** **x**

''लोग बहोरे **बांभन (ब्राह्मण)** आए।''[44]

x **x** **x**

थवई (बढ़ई) और **लुहारू (लुहार)**।

आए **पथेरा** (ईंट पाथने वाले) और **चुनिहारू** (चुनाई करने वाले)।

आए **सुनार** जो ढ़ारहि पानी।''[45]

x **x** **x**

''**खत्री** (क्षत्रिय) को रे कहा मन नारी।''[46]

x **x** **x**

''देखेसि **खत्री** सूर क रानां।''[47]

x **x** **x**

''एक कुलसुद्ध रुपवंत जो **खत्री**।''[48]

x **x** **x**

''सुन्दर **खत्री** वीर अपारा''[49]

x **x** **x**

उत्तिम जाति (उत्तम जाति) जग आहि सुभाऊ"[50]

X X X

राधौ वंस जो आहि अजोध्या"[51]

X X X

सूरज वंश सुद्ध हम ठाऊं"[52]

X X X

सरुज वंश पुरुस सयंसारू"[53]

X X X

सरुज वंश ऊंच इहिं चाहीं"[54]

(3) **मधुमालती**– अन्य कवियों की भाँति मंझन कृत मधुमालती में **पंडित**, **भाट**, **नाऊ** , **जोलाहा** आदि जातियों का उल्लेख प्राप्य है।

येहि कलि नेतिक **पंडित** भये"[55]

X X X

पंडित सुन बिनती येक मोरी"[56]

X X X

पंडित मोहि न दोस लगाइये"[57]

X X X

"पुनि **पंडित** कुंअर मन लावा, एक वचन बहु अर्थ पढ़ावा"[58]

X X X

भाटन्ह(भाट) घोरा दै बहुराये, **भाटिनि** सबै पटोर पेन्हाये"[59]

X X X

नाउ भोर मधुमालती, राजा ग्रिह औतारा"[60]

X X X

धन खोये, बौराइ **जोलाहा**"[61]

इन शब्दों के अतिरिक्त छयत्तीस जातियों के लिए एक शब्द ही प्रयुक्त कर कवि ने उनके नाम नहीं गिनाये। यथा–

"राजा ग्रिह सुनि सब आये, करैं, **छतीसौं** पौनि बधायें"[62]

x x x

"पैसि नग्र बरात जब आई, **छतिसों** पौनि आरती लै आई"[63]

(4) चित्रावली– उक्त काव्य कृति में जाति से सम्बन्धित चांदायन की भाँति अनेक शब्द तो नहीं मिलते किन्तु कुछ शब्द अवश्य प्राप्य है। जिनमें **मियाँ (मुसलमानों के पण्डित), पंडित, बारी और बाभन, क्षत्रीय** आदि शब्द उल्लिखित हैं। उदाहरण दृष्टव्य है'

"पांच भाइ जनु पाँच **मिऊँ** अपनी–अपनी भाँति"[64]

x x x

"विद्याधर गुरु **पंडित** महा, तेहि कुल सुमति पूत एक अहा।"[65]

x x x

चारिहुँ दिस बारी **दौराए**"[66]

x x x

"पुनि आए तहँ सहज एक, **बाभन** बेदूराइ"[67]

x x x

"कोउ कुलीन **क्षत्री** (क्षत्रीय) सहसी का।"[68]

x x x

"**पंडित** गुन गाहक अरु दानी"[69]

(ग) लौकिक रीतियों तथा अन्ध विश्वासों से सम्बन्ध शब्द–

(1) चांदायन– दाऊद ने चांदायन में देवता, देवगृह, इन्द्र, वरंभा (ब्रह्मा) आदि शब्दों

का उल्लेख प्राप्य है।

"पउदर ओंदरि धरनि मिलि गएऊं।

देवहि (देवता) जिय कर सांसउ भएऊ।

देवधर (देवगृह) रगत भएउ तेहि लोही"[70]

x x x

इन्द्र सभा की आछरि आइ"[71]

x x x

इन्द्र राय मोहिं जीउ कहं धरई"[72]

x x x

"**सुर** (देवता) आएं देखहिं सकइ न कोइ छडाइ।

मुनिवर जाप बिसरि गा **बरंभा** (ब्रह्मा) सीस डोलाइ।"[73]

(2) मृगावती– मृगावती में वन्दना, दैवी, ममता, भुजबल पूजा, अपमंगल, मंदिर आदि शब्दों का उल्लेख्य प्राप्य है।

"बिबि कर **बंदौं** (वन्दना) तो सेऊं माँगौं।

मोख देहु हौं लहरि न खांगौ।

लहरि तरिंदी उठी गंभीरा

दइय (दैवी) **मया** (ममता) करि पाइसि तीरा"[74]

x x x

"लोक **भुजा बर पूज** (भुजबल पूजा) कुंवर के अक्खत फूल तंबोल"[75]

x x x

बरजौं तौ **अपमांगर** (अमंगल) होई"[76]

x x x

"देखत **मंदिर** अचंभौ रहीं"[77]

(3) मधुमालती– मधुमालती में असीस (आशीर्वाद), तीन भुवन (त्रैलोक), राकस (राक्षस), भूत, मंत्र, सपत (शपथ), विधाता, पूर्व के भाग्य, पुन्य, दर्शन, प्रयागतीर्थ, श्राप, टोना आदि शब्दो का उल्लेख मिलता है।

"नौ खंड देहि **असीस**, प्रिथिमी राज करु जग माह"[78]

x x x

"**त्रिभुवन** सिस्टि न पटतर लावा"[79]

x x x

"नौ खण्ड **तीन भुवन** उंजियारा"[80]

x x x

"कै तैं राकस **भूत** की छाया"[81]

x x x

"कै तै **मंत्र** सकती किछु पाई"[82]

x x x

तोहि पूछौ दै **सपत** (शपथ) विधाता"[83]

x x x

"पूर्व **पुन्य** (पुण्य) किछु आहै मोरा,

जेहि मुख आनि देखावा तोरा।

कै करवत बोहि जन्म देवायेउ,

तेहि रे **पुन्य** (पुण्य) अब **दरसन** (दर्शन) पायेउ।

औ मन वांछित **तीर्थ प्रयागा** (प्रयाग तीर्थ)।

कलपा सीस **पूर्व के भागा** (पूर्व के भाग्य)

आजु पायेऊँ **तीर्थ** जो तोहीं,

धन्य–धन्य **पूर्ब जन्य** (पूर्व जन्म) जो मोहीं"[84]

x **x** **x**

"कै रे माँय तोहि दीन्हा **श्रापा** (श्राप)।

कै काहू सिर **टोना** (टोना–टोटका) थापा।"[85]

x **x** **x**

तोहि मोहि **सपत (शपथ)** बाचा कैसा, तै सुबास तै मूल"[86]

x **x** **x**

कबहीं नैन **मंत्र** पढ़ि मारै"[87]

(4) चित्रावली– उसमान ने भी अन्य कवियों की भाँति **विधाता, सिद्धदाता, देवस्थान, पूर्व पुण्य, असीस, भाग्य, जगन्नाथ, मथुरा, काशी, पुण्य, विधना, देवपर्वत, देवहि, देव इन्द्र, दाता, गिरनार** आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है।

"पुरवनहार **विधाता** सोई"[88]

x **x** **x**

"तोहिं बिन दूसर नाहिं **बिधाता**"[89]

x **x** **x**

"बााबा हाजी पीर अपारा, **सिद्ध देत** जेहि लाग न बारा"[90]

x **x** **x**

"**देवस्थान** आदि जग जाना"[91]

x **x** **x**

"**देवस्थान** हिंछ जहं पूरी"[92]

x **x** **x**

"**पूरब पुण्य** आज फल पावा"[93]

x **x** **x**

"दै **असीस** तत्खन जस जानी"[94]

x **x** **x**

"सिव **असीस** विधि भयो भयारा"[95]

x **x** **x**

"भयो **भाग्य** मम दाहिन आजू"[96]

x **x** **x**

"**जगन्नाथ** जेहि जग उजियारा"[97]

x **x** **x**

"आओ **जगन्नाथ** दरबारा"[98]

x **x** **x**

"सेयों आइ देव **जगनाथा**"[99]

x **x** **x**

"समुँद्र आउ एक दिन चलो, **जगरनाथ** कहँ सेइ"[100]

x **x** **x**

"**तीरथ** अस जस **मथुरा कासी**"[101]

x **x** **x**

"जहँवाँ कारज **पुन्य** (पुण्य) कर, कसन सँवारैं बेगि"[102]

x **x** **x**

"अब **बिधना** सो कौन दिन, मिटै हिये जेहि दुंद"[103]

x **x** **x**

"कुँअर **देवपर्वत** पहिचाना"[104]

x **x** **x**

"**देवहि** मन महँ परा विचारा"[105]

x **x** **x**

"सेयाँ आइ **देव जगनाथा**"[106]

x x x

"**इन्द्र** साथ रंभा उरबसी"[107]

x x x

"ऐ दयाल सुख दुख के **दाता**"[108]

x x x

करवट लेहि पराग महँ, बीर परहि **गिरनार**"[109]

(घ) मनोविनोदों से सम्बद्ध शब्द–

(1) चांदायन– मनोविनोद से सम्बन्धित शब्द चांदायन में अनेक प्रकार के मिलते है। जिनमें **भरडे (एक प्रकार का वाद्य यंत्र), डमरू, डक्क, जादू, तमाशा, रामायण गाना, गीत गाना, नृत्य, छद्म, ताल दिवाली खेलना** प्रमुख हैं।

भररा (भरडे) **डंवरु** (डमरू) **डाक** (डक्क), बजावा"[110]

x x x

"हाट **छरहंटा** (जादू, छल कृत्य) **पेखन** (तमाशा) होई।

देखहि निसरि मनुस अउ जोई।

वरुवा (वटु) राम **रमाइन** (रामायण) कहहीं।

गावहिं गीत नाच (नृत्य) भल करहीं।

बहुरूपीं (बहुरूपिया) बहु भेस फिरावा।

बार बूढ़ चलि देखइ आवा।

राधा कान्ह देस **छल** (छद्म) ल्यावहिं।

मटकि मूंड मसि देह चरावहिं।

गावहिं गीत और (अउ) कहहिं पंवारा।

नट **नाचहि** (नृत्य) अउ बाजहि तारा (ताल)।"[111]

x x x

गाइ **दिवारी** (दिवाली) खेलइ जहाँ"[112]

(2) मृगावती– मृगावती में मनोविनोद से सम्बन्धित शब्द **अहेर** (आखेट), **उछलकूद** (धमार) खेलना, तूरा (वाद्ययन्त्र) **तीवरि, चौपरि** (चौपड़), सोरही (कौड़िया), **चौबंधी, दो बंधी, खेल संपूरन (सम्पूर्ण खेल), नृत्य, नटसार, खेल तथा साज, नटवा, पुतरिनि, पखावज, नाद, ताल सस्वर, ब्रह्मवीणा, शरवीणा, अवधूती, रुद्रवीणा, ढुक्कारी, गहुली, वंशी, पिनाक, सारंगी** वाद्य यन्त्र आदि नाम मिलते हैं।

"करइ **अहेरा** (आखेट), साउज मार"[113]

x x x

"एक देवस जो **अहेरें** (आखेट के लिए) जाई"[114]

x x x

"रहसत चले साथ जो कुंअर **खेलइ** लाग **अहेर**"[115]

x x x

"**खेलत** सबै **अहेरा** जहाँ"[116]

x x x

"कोइ करहिं रससहिं सरवर महं **खेलहि** सबइ **धामरि** (उछलकूद)।"[117]

x x x

"मिली सेहलिन्ह **खेल धमारी**"[118]

x x x

"सबै सहेलीं **खेलति** अहीं"[119]

x x x

"ससि रे नखत लै तारइ सरवर **खेलइ** आइ"[120]

x x x

खेलहिं हंसत रहहिं एक ठाइ''[121]

X **X** **X**

''बाजन अहे जहाँ लहि **तूरा**''[122]

X **X** **X**

''**तीवरि** आनि दूसरी डारी। **तीवरि** खेलइ बहुत जुआरी।

''**चौपरि** (चौपड़) राखि **तीवरि** भल खेला। सुकठा (?) **सोरही** (कौड़िया) बूझे मेला।

बुधि सागर **खेलइ चौबंधी**। और **खेलइ** जानइ **दुइ बंधी**।

खेलिसि खेल संपूरन (सम्पूर्ण खेल) देखिसि सबइ खिलाइ।।''[123]

X **X** **X**

''कहिसि **नाच** (नृत्य) तुम्ह देखहु आजू।

माँगिसि सब **नटसार** (नाट्यशाला) क **साजू** (साज)।

नटवा (नर्तक) **पुतरिनि** (पातुरनियाँ) काछि कै आए।

आए **पखावजी** (पखावज) सबद सुहाए।

आए **उपांगी** (नाद) जो दीन्हा।

ताल गंभीर नाउं सिउं लीन्हा।

जंत्रकार करि **सुसुर** (सस्वर) जो **गावहि** (गाये)।

ब्रंभवैन **(ब्रह्मवीणा)** सरबैन **(शरवीणा)** बजावहिं।

सबद सरा सुर मण्डल **औधूती** (अवधूती) **रुद्रवैन** (रुद्रवीणा) **ढुक्कारि** (ढुक्कारी)।

गहुली **बांसी** (वंशी) **पिनांक** (पिनाक) **सरंगी** (सारंगी) और सब बाजन झारि।''[124]

(3) मधुमालती– मधुमालती में मनोविनोद से सम्बन्धित शब्द **क्रीड़ाकन्द, खेल, क्रीड़ा, झूलत, बाजा, गारी** आदि शब्द प्राप्त होते हैं।

''**क्रीड़ा कन्द बिनोद** लोभाने, बिबि जो प्रेम समान''[125]

X **X** **X**

"**खेलत** हँसत आपु मो, निस दिन बेलसै सोइ"[126]

x **x** **x**

"तहँ **खेलौं** हम जाहिं **धामारी** (क्रीड़ा)।"[127]

x **x** **x**

"कहेन्हि चलौ **खेलैं अंबराई**"[128]

x **x** **x**

"**झूलहिं** गाइ गाइ पिक बानी।

झूलहिं सब जोबन मदमाती।"[129]

x **x** **x**

"**झूलहिं** गै जो पेम अघाई"[130]

x **x** **x**

"**झूलत** चिहुर काहु के छूटहिं"[131]

x **x** **x**

"**झूलहि** धरे प्रेम की डोरी"[132]

x **x** **x**

"**झूलत** दिरिस्ट मो आवै कैसी"[133]

x **x** **x**

"**झूलहिं** बस लड़बावरी, कटि अम्बर कसि बांधि"[134]

x **x** **x**

"**बाजन बाजा** उठा अघाता"[135]

x **x** **x**

"हंसि के पेलब सासु कै **गारी**"[136]

(4) चित्रावली– उसमान ने भी अन्य कवियों की भाँति अनेक स्थानों पर मनोविनोद

से सम्बन्धित शब्दों का प्रयोग करने अपने काव्य में लालित्य प्रदान किया है। आपके काव्य में **केलि, नाचत मोंर, खूँदैं, रहसी अहेरा, चवरि, धमारी, तोरी, भरकंडी, खेली** आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है।

"**केलि (क्रीड़ा)** समै **कौतर** (कबूतर) की रीसा,

ततषिन चलो लाइ भुज सीसा।

नाचत मोर गींव सर जोवा, .

तबहीं सीस पाइ धरि रोवा।"[137]

x **x** **x**

"सो मगु जीभ चरन क्यों **खूँदै** (कूदे–फादे)।"[138]

x **x** **x**

"रानी **रहसी** (आनन्दित हुयी) देखि भुख, भई सूपूरन कोष"[139]

x **x** **x**

"कहेसि कुंआर है घात **अहेरा** (आखेट)"[140]

x **x** **x**

"**चवरि** (आखेट स्थल) जो आगे ह्वै चलै, छाड़हु सोनहा झारि"[141]

x **x** **x**

"तहँ चित्रावलि **खेल धमारी**"[142]

x **x** **x**

"**तोरि** (तौरी) कंवल केसर झहराही"[143]

x **x** **x**

भरकंडी (एक क्रीड़ा) भौरनप संग खेली (खेलना)"[144]

निष्कर्ष– इस प्रकार हम निष्कर्ष के रूप में यह कह सकते है कि सामाजिक शब्दावली के अन्तर्गत **(क) पारिवारिक सम्बन्धों को व्यक्त करने वाली शब्दावली**–

(1) चांदायन में– माता, पिता, पुत्र, बेटी, भाई, बहिन, पत्नी शब्द प्राप्त हैं। (2) मृगावती में– माता, पिता, कुंअर शब्द प्राप्त हैं। (3) मधुमालती में– पिता, कुंअर तथा (4) चित्रावली में– माता, पिता, पति, पुत्र, सुत, कुंअर आदि शब्दों का उल्लेख प्राप्त है।

(ख) वर्ण तथा जाति से सम्बन्ध शब्द– (1) चांदायन में– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, ग्वाला, खंडेलवाल, अग्रवाल, तिवारी पंचवान, थापड़, जोशी, यजमान खंघाई, बनजारे, श्रावक, पंवार, सोनी, रावत, ठाकुर चौहान शब्द प्राप्त हैं। (2) मृगावती में– ब्राह्मण, बढ़ई, लुहार, पथेरा, चुनिहारु, सुनार, क्षत्रिय राधौवंश, सूरजवंश शब्द प्राप्त हैं। (3) मधुमालती में– पंडित, भाट, नाऊ, जोलाहा तथा (4) चित्रावली में– मियाँ, पंडित, वारी, बाभन क्षत्रिय शब्दों का उल्लेख प्राप्त है।

(ग) लौकिक रीतियों तथा अन्ध विश्वासों से सम्बन्धित शब्द के अन्तर्गत (1) चांदायन में– देवता, देवगृह, वरंभा (ब्रह्मा),शब्द प्राप्त हैं। (2) मृगावती में– वन्दना, दैवी, ममता, भुज बल पूजा, अपमंगल, मन्दिर शब्द प्राप्त हैं। (3) मधुमालती में– सपता आसीस, तीन भुवन, राकस, भूत, मंत्र, विधाता, पूर्व के भाग्य, पुण्य, दर्शन, प्रयाग तीर्थ, श्राप, टोना तथा (4) चित्रावली में– विधाता, सिद्ध दाता, देव स्थान, पूर्व भाग्य, असीस, भाग्य, जगन्नाथ, मथुरा, काशी, पूण्य, विधना, देवहि, देवपर्वत, देव, इन्द्र, दाता, गिरनार आदि शब्द मिलते है।

(घ) मनोविनोद से सम्बद्ध शब्द– (1) चांदायन में भरडे, डमरू, डक्क, जादू, तमाशा, रामायण, गान, गीत गाना, नृत्य छद्म ताल दिवाली खेलना शब्द प्राप्त हैं। (2) मृगावती में– अहेर, उछलकूद, खेलना, तूरा, तीवरि, चौपरि, सोरही, चौबंधी, दो बंधी, खेल संपूरन, नृत्य, नटसार, खेल साज, नटवा, पुतरिनि, पखावज् नाद, ताल, सस्वर, ब्रह्मवीणा, शरवीणा, अवधूती, रुद्रवीणा, ढुक्कारी, गहुली, वंशी, पिनाक, सारंगी शब्द प्राप्त हैं। (3) मधुमालती में– क्रीड़ा कन्द, खेल क्रीड़ा, झूलत, बाजा, गारी तथा (4) चित्रावली में– केलि, नाचत मोर, खूँदै, रहसी, अहेरा, चवरि, धमारी, तोरी भरकंडीं खेली आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– मनु स्मृति द्वितीय अध्याय 31 श्लोक।

2– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 105

3– तदैव पृ0 107

4–तदैव पृ0 165

5– तदैव पृ0 91

6– तदैव पृ0 138

7– तदैव पृ0 165

8– तदैव पृ0 91

9– तदैव पृ0 34

10– तदैव पृ0 165

11– तदैव पृ0 133

12– तदैव पृ0 152

13– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 108

14– तदैव पृ0 22

15– तदैव पृ0 26

16– तदैव पृ0 74

17– तदैव पृ0 104

18– तदैव पृ0 108

19– तदैव पृ0 74

20– तदैव पृ0 74

21– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 35

22– तदैव, पृ0 35

23– तदैव, पृ0 35

24-- तदैव, पृ0 36

25-- तदैव, पृ0 14

26–तदैव, पृ0 19

27– उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 21

28– तदैव पृ0 33

29– तदैव पृ0 33

30– तदैव पृ0 38

31–तदैव पृ0 34

32–तदैव पृ0 11

33–तदैव पृ0 12

34–तदैव पृ0 13

35–तदैव पृ0 15

36–तदैव पृ0 15

37–तदैव पृ0 15

38--तदैव पृ0 15

39–दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 23

40–तदैव पृ0 40

41–तदैव पृ0 41

42–तदैव पृ0 31

43–मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 12

44–तदैव पृ0 120

45–तदैव पृ0 28

46–तदैव पृ0 102

47–तदैव पृ0 110

48 तदैव पृ0 119

49–तदैव पृ0 208

50–तदैव पृ0 36

51–तदैव पृ0 102

52–तदैव पृ0 107

53–तदैव पृ0 111

54–तदैव पृ0 205

55–मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 9

56–तदैव पृ0 14

57– तदैव पृ0 14

58–तदैव पृ0 19

59–तदैव पृ0 18

60–तदैव पृ0 110

61–तदैव पृ0 46

62—तदैव पृ0 18

63—तदैव पृ0 136

64-- उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 8

65— तदैव पृ0 24

66—तदैव पृ0 90

67—तदैव पृ0 98

68—तदैव पृ0 117

69—तदैव पृ0 116

70—दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 256

71—तदैव पृ0 256

72—तदैव पृ0 256

73—तदैव पृ0 256

74—मृगावती, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 95

75—तदैव पृ0 114

76-- तदैव पृ0 220

77— तदैव पृ0 35

78— मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक—डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 8

79—तदैव पृ0 8

80—तदैव पृ0 27

81–तदैव पृ0 33

82–तदैव पृ0 33

83–तदैव पृ0 33

84– तदैव पृ0 35

84–तदैव पृ0 34

85– तदैव पृ0 51

86– तदैव पृ0 40

87– तदैव पृ0 41

88– उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 11

89–तदैव पृ0 147

90–तदैव पृ0 6

91–तदैव पृ0 7

92–तदैव पृ0 12

93–तदैव पृ0 11

94–तदैव पृ0 12

95–तदैव पृ0 13

96–तदैव पृ0 21

97–तदैव पृ0 147

98–तदैव पृ0 147

99–तदैव पृ0 148

100– तदैव पृ0 148

101–तदैव पृ0 100

102–तदैव पृ0 69

103–तदैव पृ0 69

104–तदैव पृ0 17

105–तदैव पृ0 17

106– तदैव पृ0 148

107– तदैव पृ0 147

108– तदैव पृ0 147

109– तदैव पृ0 147

110– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 18

111–तदैव पृ0 26

112– तदैव पृ0 161

113– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 14

114–तदैव पृ0 14

115–तदैव पृ0 14

116–तदैव पृ0 18

117–तदैव पृ0 34

118–तदैव पृ0 60

119–तदैव पृ0 35

120–तदैव पृ0 59

121–तदैव पृ0 73

122–तदैव पृ0 72

123–तदैव पृ0 116

124–तदैव पृ0 209

125– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 41

126–तदैव पृ0 60

127–तदैव पृ0 61

128–तदैव पृ0 61

129–तदैव पृ0 140

130–तदैव पृ0 139

131–तदैव पृ0 139

132–तदैव पृ0 139

133–तदैव पृ0 139

134–तदैव पृ0 139

135–तदैव पृ0 131

136–तदैव पृ0 152

137–उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 47

138–तदैव पृ0 1

139–तदैव पृ0 13

140–तदैव पृ0 15

141–तदैव पृ0 15

142–तदैव पृ0 32

143–तदैव पृ0 38

144–तदैव पृ0 39

अध्याय 10

राजनीतिक तथा प्रशासनिक शब्दावली

(क) राज दरबार तथा प्रसादादि

(ख) शासन व्यवस्था

(ग) संग्राम शस्त्रास्त्र परिधान एवं वाहनादि

अध्याय 10

राजनीतिक तथा प्रशासनिक शब्दावली

(क) राज दरबार तथा प्रसादादि

(ख) शासन व्यवस्था

(ग) संग्राम शस्त्रास्त्र परिधान एवं वाहनादि

अध्याय 10

राजनीतिक तथा प्रशासनिक शब्दावली– सृष्टि का जब से सृजन हुआ है तब से अभी तक सामाजक परिवेश को ध्यान में रखते हुए बुद्धिजीवी व्यक्तियों ने इसे अपने कर कमलों में सभाले रक्खा है। किसी एक राज्य को चलाने के लिए राजा की आवश्यकता होती है। जब राजा राज्य करेगा तो वह अनेक प्रकार की शासन व्यवस्था भी लागू करेगा, जिससे राज्य की कार्यक्रम सुचारू रूप से बिना अवरोध एक निरर्झणी की भाँति चलता रहे। किन्तु ऐसा सम्भव नहीं है। किसी अन्य देश की शत्रुता के कारण वह राजनीति के अन्तर्गत सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप राज्य को चलाने के लिए सैनिक, महामात्य, बजीर, पटवारी, भृत्य, नौकरी आदि की व्यवस्था करेगा। तभी तो वह राज्य में समरूपता ला सकता है और दुश्मन को मुँह तोड़ जबाब दे सकता है। जब उनके पास सेना होगी तो वह आराम की नींद भी सो सकता है, पड़ोसी राज्यों से संन्धि कर सकता है, प्रजा के लिए नाना प्रकार की वस्तुओं का आयात निर्यात कर सकता है और प्रजा भी आराम से खा पी कर सो सकेगी।

(क) राज–दरबार तथा प्रसादादि– जब राजा राज्य करेगा तो उसके लिए प्रमुख रूप से राज –व्यवस्थान्तर्गत महल, मढ़ राज्य को चलाने के कार्यलय आदि की आवश्यकता पड़ना स्वभाविक है। अतः उक्त वस्तुओं की पूर्ति के लिए वह नाना प्रकार के भवन, मन्दिर, आदि का निर्माण करवाता है जिससे वह राज्य के कार्य को सुचारू रूप से चला सके।

(क) चांदायन– चांदायन में राज–दरबार तथा प्रसादादि से सम्बन्धित शब्द, **धवलगृह, धौराहर, मढ़ देवरई, घर, पटसार, रानी, चेरि, बेटी, साधु, राजा, राजपाटु, परजा, कुंवरु** आदि शब्द मिलते हैं।

"बीजु चमक परि चमकी ओहिं **धौराहर** (धवल गृह) पास"[1]

X X X

"सगरि चांद **धौराहर** (धवल गृह) दिया"[2]

X X X

"सुनि बुधि देउं जाइ **मढु** सेवहि"[3]

X X X

"बोला सखिन्ह छाहं **मढ़ि** लीजइ"[4]

X X X

"ऐहि **मढ़** महं एक आएसु अहा"[5]

X X X

"सोई लोरु **मढ़ि** मुनिवरू देषत गा विसंभार"[6]

X X X

"**मढ़ि** मुनिवरु जउ लोरिकु अहा"[7]

X X X

"हउं जउं चांद लइ आइउं कीएउं **मढ़** परगास"[8]

X X X

"**मढु** तजि खतरी **मंदिर** सिघारा"[9]

X X X

"सीसु धुनति तिंहि **देवरइं** जनहुं नावित अभुवाई"[10]

X X X

"कह तेलि सू(सु) रिजु कवन **घर** वसा"[11]

X X X

"उतरि चांद बैठि **पटसारा**"[12]

X X X

"राइ महर **रानी** चउरासी"[13]

x x x

"इक इक के तर **चेरि** इकासी"[14]

x x x

सुनइ बोल जउ दीजइ **बेटी** वावन जोगु"[15]

x x x

"सुन **साधु** (सज्जनपुरुष) तू पंडित सयाना"[16]

x x x

"**राजा** चंद्रु पाटि वइसारा"[17]

x x x

"**राजपाटु** तुम्हं गोवरां आहई मैना करे गोसाई"[18]

x x x

"पति **परजा** सब दूध अन्हाइहु"[19]

x x x

"घिरित लेइकहं **कुंवरु** बुलाएउं"[20]

(2) **मृगावती**– मृगावती में राज–दरबार तथा प्रसादादि से सम्बन्धित शब्द **मन्दिर भवन, राजइं, राजा, नेगिन्ह (भृत्य) परधान, राना, राइ, कुंअर** आदि शब्द प्राप्त हैं।

"**मन्दिर** उचाइ मान पर देहू"[21]

x x x

"कहहु भाँति अस **मंदिर** उचावइ"[22]

x x x

"**मंदिर** ढूढ़ि जौ वाहर आई"[23]

x x x

"धाय कै दिस्टि **मंदिर** पर जाइ"[24]

x **x** **x**

"देखिसि बैठी **मंदिर** पर आहा"[25]

x **x** **x**

"उठा तंबोल हाथ लइ रहंसत **मंदिर** कहं आव"[26]

x **x** **x**

"**वास तै बन** प्रीतम बिनु लागै"[27]

x **x** **x**

"फुनि जौ देखेसि फिरि कै **भवन** अपूरुब एक"[28]

x **x** **x**

"**राजइं** तुरिअ वेगि कै मांगा"[29]

x **x** **x**

"**राजा** पूछहिं कहु हम बाता"[30]

x **x** **x**

"**राजइं** कहा बात सुनि मोरी"[31]

x **x** **x**

"**राजइं नेगिन्ह** (भृत्य) कहा बुलाई"[32]

x **x** **x**

"सभा बैठि **परधान** (प्रधान) हंकारहु"[33]

x **x** **x**

"राना (राणा) राइ (राय) जो कुंअर वोलाए"[34]

x **x** **x**

"कुअर बैठ खांडै रन भारी"[35]

(3) मधुमालती– मधुमालती में राज–दरबार तथा प्रसादादि से सम्बन्धित शब्द– राज मंदिर, राय, कुंअर, महथ आदि शब्द प्राप्त हैं।

"**राज मंदिल** रोवै बर नारी"[36]

x x x

"**राज मंदिल** कुछ उठा अंदोरु"[37]

x x x

"आइ धाइ **मंदिल** चित्ररारी"[38]

x x x

"पैमा **मंदिल** उंडवत परी"[39]

x x x

"कनक जरी तै **मंदिल**"[40]

x x x

"कनक पत्र **मंदिल** लसाये"[41]

x x x

"**राय** पाग सिर भुँइ दै मारी"[42]

x x x

"परहरि **कुंअर** त्रिआ औसेरी"[43]

x x x

"**कुंअर** जीउ विस्मै किछु भैऊ"[44]

x x x

"पुनि कह **कुंअर** पिता सौ रोई"[45]

x x x

"बैठ **महथ** सुन बात हमारी"[46]

x x x

"सविता उदै **कुंवर** घर आवा"[47]

(4) **चित्रावली–** चित्रावली में राज–दरबार तथा प्रसादादि से सम्बन्धित शब्द– **मंत्रिन, राजा, राजागुरु, नृप, नरेस, सेवक, परोहित, रानी, रखवाले, पाक रसोई, राजभवन, राजमंदिर, धरमसाल** आदि शब्द प्राप्य हैं।

"**मन्त्रिन** कहा सुनहु मति **राजा**"[48]

x x x

"**राजा** सुनत अचक भै रहा"[49]

x x x

"**राजागुर** के आगे धरा"[50]

x x x

"**राजा** गेह चित्रावली बारी"[51]

x x x

"**राजा** पास काह लै जाही"[52]

x x x

"**नृप** (राजा) कर कुस पानी जब लीन्हा"[53]

x x x

"**नृप** (राजा) कह जाकर चोर है।"[54]

x x x

"धनरनीधर **नृप** (राजा) चेत चित"[55]

x x x

"छमा करहु अब सुनहू **नरेसा**"[56]

x x x

"चला ताकि नैपाल **नरेसा**"[57]

x **x** **x**

"कहिसि हमार **नरेस** सो"[58]

x **x** **x**

"**बैद** सयान गुनी लै आये"[59]

x **x** **x**

"हौ **सेवक सेवा** कहँ छाजा"[60]

x **x** **x**

"हो बाभन जो **परोहित** अहा"[61]

x **x** **x**

"गादुर भयो सूर सो **रानी**"[62]

x **x** **x**

"**रखवाले नृप** जाइ जनावा"[63]

x **x** **x**

"**पाक रसोई** ठाँव संवारा"[64]

x **x** **x**

"**राज भवन** अंधियार"[65]

x **x** **x**

"**राज मंदिर** कर सुनत अदोरा"[66]

x **x** **x**

"**धरमसाल** पुनि वार संवारा"[67]

x **x** **x**

"**धरमसाल** जहँ हुत नियर भौ (क)लीन्ह **अतीथ** बोलाइ"[68]

x x x

"**राजअबास** बहोरि बिछावा"[69]

x x x

"पैसत **राजअवास** सोहाई"[70]

x x x

"मंगल गावत **चेरिन** आई"[71]

x x x

"आरति लै आई **रनिवाँसा**"[72]

x x x

"राजै तब **रनिवास** हंकारा"[73]

x x x

"जेहि कुल अस मयंक **उपराजा**"[74]

x x x

"ततछन आये **ज्योतिषी**"[75]

x x x

"पुनि **रानी राजा** सो कहा"[76]

(ख) शासन व्यवस्था– कोई भी राजा जब अपने राज्य को चलाता है तब वह इरा बात का भी ध्यान रखता है कि उसकी प्रजा दु:खी न रहे सुख चैन के साथ रहे। इसीलिए राजा को राज्य में न्याय व्यवस्था, खाद्य पदार्थ, रखरखाव आदि नाना प्रकार की व्यवस्था भी करनी पड़ती है।

(1) चांदायन– चांदायन में शासन व्यवस्थान्तर्गत– **तारा, पोखर, कुण्ड, मढ़, देवर, तपसी, मसवासी, सरवरु झरना, पानी चोख, पानी रखवारा, बाँधे घाट** आदि शब्द मिलते है।

"तारा **पोखर कुण्ड** वनाए। **मढ़ देवर**, चहुँ पासि उठाए।

खूनां **तपसी** अछहि तहाँ। अउ भगवंतु रहइ तिन्ह महां।

मसवासी सिव मंडपु छाई। पुरुख नांउ तेहि ठौर न जाई।"[77]

x **x** **x**

"**सरवरु** एकु सुभर भरि रहा। **झरनां** सहंस एक अउ बहा।

अति अवगाहु न पाइय थाहा। **पानी चोख** सराहउं कहा।

वास कपूर यित खिन आवहू। देखत मोंती चूर सुहावइ।

कुंवरि लाख दोइ **पानी** जोही। तीरि वइठि ते लेहिं भरांही।

ठाडं ठाडं बइसे रखवारा। खोरि नहाइ न कोउ व पारा।

छाय (?) होइ तरुन्ह कइ केहुं न पाइय वाट।

चाप रूप सरवर कै रावत(ट)· **बाँधे घाट**।"[78]

(2) **मृगावती**— मृगावती में शासन व्यवस्थान्तर्गत **असवार, धरम, देस, रखवार, सभा, परधान, राना, राइ, बीरा सभा, सेवा, आग्या नहिं, दान, गजपति, नरपति, भुवपती, हैवरपति,** आदि शब्द मिलते है।

"हाथी बाहि अंबारी कुंअर कीन्ह **असवार**"[79]

x **x** **x**

"पुन्नि **धरम** सब **देस** चलावा"[80]

x **x** **x**

"तौ राजहिं रिसि मन महं लागी। वाहौ भकसी जाहि न भागी।

अस कै तेहि **रखवार** लाऊँ, जाहि न निकिसि जहाँ ओहि ठाऊं"[81]

x **x** **x**

"सभा बैठि **परधान** हंकारहु"[82]

x **x** **x**

"**राना राइ** जो कुंअर वोलास, वनि वनि सवइ जोहरइ आए।

तर माडर भुअन कर नाऊं। बैठी **सभा** अपूरब ठाऊं।

कुंअर थवइतन्ह दीन्ही सानां, आइ थवाइत आफहिं पानां।

तिस तिस पानकर आफहि **बीरा,** पानि कपूर गुवा महं नीरा।

खैर मोह कसतूरी मिराई, मोती कर चून **सभा** सब खाई

राउ रान (औ)राउत सेवा सवे कराहि।

आइस जोवहि खिन खिन बिनु **अग्या नहि जाहि।**"[83]

x x x

"पंवरि वार उन्ह वाजइ अहनिसि **दान** जूझ कर तूर"[84]

x x x

"**गजपति** बैठे भौंह निहारा"[85]

x x x

"**नरपति** गनत न आव उन्हारी"[86]

x x x

"औ **भुवपती** (भूपति) बहु बैठे ताहीं"[87]

x x x

"**हैवर पति** बैठे बहु भारी"[88]

(3) मधुमालती– मधुमालती में शासन व्यवस्थान्तर्गत **न्याय, गुरुआ राज,** **राजनीति, दान, महासुबुधि, बहु भांति विचारा, राजपाट, सभा** आदि शब्द प्राप्त है।

"**सत्य न्याय** सास्तर कर औ जो गिरि संघार"[89]

x x x

"**न्याय** खरग जे अति उतंगा"[90]

x x x

"न्याय वखान न जा मुह कही"[91]

x x x

"**गुरुआ राज** महातप भारी"[92]

x x x

"**राजनीति** जो कीन्ह संसारा"[93]

x x x

"जवरै **दान** को वार उघारै"[94]

x x x

"केहि मुख कहां **दान** की बात"[95]

x x x

"**महा सुबुधि** चतुरदास माहै"[96]

x x x

"कै देखिसि **बहु भांति विचारा**"[97]

x x x

"छाड़ेउ **राजपाट** जत, सुख सेज्या नींद भोग"[98]

x x x

"**राजपाट** सब परिहरि, दुख अंगरौ तोहि लागि"[99]

x x x

"**सभा** जो सभै विचारै लउ सहूरत बार"[100]

(4) चित्रावली– चित्रावली में शासन व्यवस्थान्तर्गत **राज पाट, दक्खिन परवत उत्तर गंगा, गढ़पति, हयपति, दुरदपति, छत्रपति, छत्र** आदि शब्द प्राप्त हैं।

"**राजपाट** तजि दुख संग्रहा"[101]

x x x

"**दक्खिन परवत उत्तर गंगा**"[102]

X X X

"**गढ़पति** हयपति **दुरदपति**, सुनि कुच कथा अकाथ"[103]

X X X

"तेहि पर बैठ **छत्रपति** गाजा"[104]

X X X

"छत्रिन्ह आइ **छत्र** सो पूजा"[105]

(ग) संग्राम शस्त्रास्त्र परिधान एवं वाहनादि -- प्राचीन काल से वर्तमान काल तक काई भी ऐसा देश नहीं हैं जिनसे अपने शासन काल में एक या एक से अधिक युद्ध न किये हो। राजा जब राज्य करता है तो उसके आस पास के पड़ोसी देश उसपर आक्रमण करके अपने राज्य में विलय करना चाहते है किन्तु ऐसी स्थिति से निपटने के लिए राजा अपने शासन व्यवस्थान्तर्गत सेना पर विशेष रूप से ध्यान देते थे उनके शास्त्रादि तथा उनक सैनिक परिधान को ध्यान में रखकर वे अपनी सेना को प्रवल बनाते थे। प्राचीन काल में केवल पैदल सेना ही होती हैं। आज कल तो थल सेना , वायु सेना, पैदल सेना तीनों प्रकार की होती है। आज कल तो आधुनिकीकरण के कारण अनेक मिशायल आदि बन गयी किन्तु प्राचीनकाल में तो केवल पैदल सेना होती थी जिसके पास ढाल, तलवार, लड्ठ, आदि ही संग्राम आदि के शस्त्र थे।

(1) चांदायन– चांदायन में संग्राम शस्त्रास्त्र के सम्बन्धित शब्द **धुनक बान, डाँग, घोर, हस्ति, सुखासन, खांड, टाटर** आदि शब्द मिलते है।

"**धनुक (धनुष) वान (वाण)** वावन सिर धरा"[106]

X X X

"**धनुक** चढ़ाइ वावन कर गहा"[107]

X X X

लीन्हे **डाँग** (लट्ठ) फिर कोटवारा''[108]

x **x** **x**

''अरथ दरब **घोर** अउ **हस्ति** (हस्ती, हाथी)''[109]

x **x** **x**

''काढ़ि चांद वइसारि **सुखासन** तुरत वेगि लइ आइ''[110]

x **x** **x**

''फांदि **सुखासन** चांद चलाई''[111]

x **x** **x**

''दौरि **खांड** (खड्ग) अजई सिर दीन्हा''[112]

x **x** **x**

''**टाटर** (सिर पर रखने वाला टोप) टूट लोर तेहि चीन्हा''[113]

(2) मृगावती– मृगावती में संग्राम शस्त्रास्त्र परिधान एवं वाहनादि से सम्बन्धित शब्द– **परोहन, तुरंगम, चक्र, टाटर, घोर, तीर, बाहित, डांडि** आदि शब्द प्राप्त हैं।

''खोलि **भंडार** देइ सब लागा''[114]

x **x** **x**

''अरथ दरब धन वूत **सुतिय**''[115]

x **x** **x**

सब कहं **परोहन** (घोड़ा) दीतिन्ह आनी''[116]

x **x** **x**

''पाएंड छूटि **तुरंगम** (घोड़ा) आये''[117]

x **x** **x**

''कुंवर फिराइ **चक्र** सेउं मारा''[118]

x **x** **x**

"**टाटर** (शिरस्त्राण) करिल कराएउ केसा"[119]

x **x** **x**

"देखि अचंभो राउरह फुनि रे चलाएसि (?) **घोर**"[120]

x **x** **x**

"छाड़ेरि **घोर** धरइ ओहि चहा"[121]

x **x** **x**

"**घोर** पटोर सोन बहुरूपा"[122]

x **x** **x**

"साएर ती अहा एक **डोगा**"[123]

x **x** **x**

"**बोहित** (जलयान) बहुरि चाह वहि जाई"[124]

x **x** **x**

"**बोहित** बहुत हमरे संग आए"[125]

x **x** **x**

"**बोहित** छाड़ि चला जौ जाई"[126]

x **x** **x**

चढ़ी जाइ हुति **डोडि** सवारी"[127]

(3) **मधुमालती–** मधुमालती में संग्राम शस्त्रास्त्र परिधान एवं वाहनादि से सम्बन्धित शब्द– **त्रिसूल, धनुष बान, महथै, हाथी, रथ, भेंडी, पपिहा, घोरा** आदि शब्द प्राप्त है।

"**इन्ह** तीनहु **त्रिसूल** गढ़ाऊ"[128]

x **x** **x**

"**धनुष वान** देखि निअर न आवै"[129]

x x x

"**महथै** जाइ राजा सौ कहा"[130]

x x x

"ले अग्या जो **महथा** धावा"[131]

x x x

"चित्रसेन जौ **महथ** बोलाई"[132]

x x x

"सिंघ सेंदूर चिकौर **हाथी**"[133]

x x x

"**हाथी** वन तजि आंकुस सहे"[134]

x x x

"**हाथी** घोरा वहु कटक अपारा"[135]

x x x

"सरिन की प्रीति म्रिगा **रथ** चाला"[136]

x x x

"**भेंडी** सघन रोंव तन भारे"[137]

x x x

"**पपिहा** जुग एक साथ रह"[138]

x x x

"**हाथी घोरा** वहु कटक अपारा"[139]

(4) **चित्रावली**– संग्राम शस्त्रास्त्र परिधान एवं वाहनादि से सम्बन्धित शब्द– **धनुष, वान, कटक, कटाछ, खरग, गुटका, ओड, गोला, तुपक, माँदी, फरी, पारधी, हस्ति, घोरा,** आदि शब्द प्राप्त है।

"**धनुष** **वान** गह दूसर न कोई"[140]

X **X** **X**

"भोंह **धनुष** बरूनी सर साँधा"[141]

X **X** **X**

"जौ करता दे **वान** बुझाई"[142]

X **X** **X**

" भरे निखंग **वान** अजिआरे"[143]

X **X** **X**

"छूटी **तुपकें** छूटे वाना"[144]

X **X** **X**

"चला **कटक** लै साथ"[145]

X **X** **X**

"करै **कटाछ** कलोल"[146]

X **X** **X**

"जेहि सि परी **खरग** की धारा"[147]

X **X** **X**

"राखौ **कटका** करि अघाता"[148]

X **X** **X**

"**खरग** सँभारे सरभा"[149]

X **X** **X**

"जौ जै **खरग** देइ करतारा"[150]

X **X** **X**

"वंद छोरि कर **खरग** गहि"[151]

x x x

"वहुत **खड्ग** पटतीत के साधा"[152]

x x x

"**गुटका** (गोली) लीलि लेइँ पुनि सांसा"[153]

x x x

"विनती **ओड** (ढ़ाल) खरग निसतरा"[154]

x x x

"हथ हथनालन्ह **गोला** दागे"[155]

x x x

"वनी **तुपक** (वन्दूक) जस विरहिनि सती"[156]

x x x

"छूटी **तुपकै** (तोप) छूटे वाना"[157]

x x x

"जब लगि **माँदी** महँ रहिगोई"[158]

x x x

"वारह हाथ वनी पुनि **फरी**(गोली)[159]

x x x

"जग महँ ऐसन **पारधी**(तीर चलाने वाला)"[160]

x x x

"गनत न अरव **हस्ति** औ घोरा"[161]

x x x

"**हाथिन** पीठि अंवारी कसी"[162]

x x x

"खैचहि **हाथिन्ह** पाँति"[163]

X **X** **X**

"गनत न आव **हस्ति** औ घोरा"[164]

X **X** **X**

"तमकि **तुरै** (घोड़ा) जब होइ **असवारा**"[165]

X **X** **X**

"मिल जब चलहि **तुरंगम** वली"[166]

निष्कर्ष– अतः हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि राजनीतिक तथा प्रशासनिक शब्दावली के अन्तर्गत **(क) राज–दरबार तथा प्रसादादि** से सम्बन्धित शब्द (1) **चांदायन** में **धवलगृह, धौराहर, मढ, देवरई, घर पटसार, रानी चेरि, साधु, राजा, परजा, कुंवरू** शब्द प्राप्त हैं। **(2) मृगावती** में– **मंदिर, वास तै वन, भवन, राजइं, राजा, नेगिन्ह, परधान, राना, राय, कुंअर** शब्द प्राप्त हैं। (3) **मधुमालती** में **राज मंदिर, राय, कुंअर, महथ,** शब्द प्राप्त हैं। (4) **चित्रावली** में– **मंत्रिन, राजा, राजगुरु, नृप, नरेस, बैद, सेवक, परोहित, रानी, रखवाले, पाक रसोई, राज भवन, धरमसाल, राजअबास, चेरिन, रनिवाँसा, उपराजा, ज्योतिषी, रानी** आदि शब्द मिलते है।

(ख) शासन व्यवस्था– के अन्तर्गत **(1) चांदायन–में– तारा, पोखर, कुण्ड, मढ़, देवर, तपसी, मसवासी, सरवरु झरना, पानी चोख, पानी रखवारा, बाँधे घाट** शब्द प्राप्त हैं। (2) मृगावती में **असवार, धरम, देस, रखवार, सभा, परधान, राना, राइ, बीरा सभा, सेवा, आग्या नहिं, दान, गजपति, नरपति, भुवपती, हैवरपति,**शब्द प्राप्त हैं। (3) मधुमालती में– **न्याय, गुरुआ राज, राजनीति, दान, महासुबुधि, बहु भांति विचारा, राजपाट, सभा**शब्द प्राप्त हैं। (4) चित्रावली में – **राज पाट, दक्खिन परवत उत्तर गंगा, गढ़पति, हयपति, दुरदपति, छत्रपति,** [illegible]

आदि शब्द प्राप्त हैं।

(ग) संग्राम–शस्त्रास्त परिधान एवं वाहनादि ने सम्बन्धित शब्द (1) चांदायन– में– **धुनक बान, डाँग, घोर, हस्ति, सुखासन, खांड, टाटर** शब्द प्राप्त हैं। (2) मृगावती में– **परोहन, तुरंगम, चक्र, टाटर, घोर, तीर, बाहित, डांडि** शब्द प्राप्त हैं। (3) मधुमालती में– **त्रिसूल, धनुष बान, महथै, हाथी, रथ, भेंडी, पपिहा, घोरा** शब्द प्राप्त हैं। **(4)**चित्रावली में– **धनुष, वान, कटक, कटाछ, खरग, गुटका, ओड, गोला, तुपक, माँदी, फरी, पारधी, हस्ति, घोरा,** आदि शब्द प्राप्त है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1– दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 154

2– तदैव, 155

3– तदैव, 157

4– तदैव, 162

5– तदैव, 163

6– तदैव, 170

7– तदैव, 171

8– तदैव, 172

9– तदैव, 174

10– तदैव, 174

11– तदैव, 177

12– तदैव 179

13– तदैव 28

14– तदैव 28

15– तदैव, 34

16– तदैव, 34

17– तदैव, 365

18– तदैव, 365

19– तदैव, 365

20– तदैव, 368

21– मृगावती, सम्पादक–माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा,

प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 27

22– तदैव, 27

23– तदैव, 76

24– तदैव, 76

25– तदैव, 76

26–तदैव, 195

27–तदैव, 91

28–तदैव, 99

29– तदैव 24

30– तदैव, 25

31– तदैव, 26

32– तदैव, 27

33– तदैव, 206

34– तदैव, 207

35– तदैव 208

36– मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक–डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 51

37– तदैव, 47

38– तदैव, 63

39– तदैव, 79

40– तदैव, 164

41– तदैव, 162

42– तदैव, 51

43— तदैव, 50

44— तदैव, 50

45— तदैव, 51

46— तदैव, 50

47— तदैव, 164

48— उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 10

49— तदैव, 11

50— तदैव, 14

51— तदैव, 17

52-- तदैव, 23

53— तदैव, 11

54— तदैव, 83

55— तदैव, 55

56— तदैव, 55

57— तदैव, 36

58— तदैव, 148

59— तदैव, 24

60— तदैव, 11

61— तदैव, 148

62— तदैव, 71

63— तदैव, 93

64— तदैव, 80

65— तदैव, 10

66— तदैव, 24

67— तदैव 10

68— तदैव, 36

69— तदैव, 18

70— तदैव, 96

71— तदैव, 96

72— तदैव, 96

73— तदैव, 92

74— तदैव, 103

75— तदैव, 97

76— तदैव, 97

77— दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 18

78— तदैव, 19

79— मृगावती, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 113

80— तदैव, 164

81— तदैव, 112

82— तदैव, 206

83— तदैव, 207

84— तदैव, 208

85— तदैव, 208

86— तदैव, 208

87— तदैव, 208

88— तदैव, 208

89— मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक—डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 6

90— तदैव, 7

91— तदैव, 7

92— तदैव, 7

93— तदैव, 7

94— तदैव, 7

95— तदैव, 7

96— तदैव, 18

97— तदैव, 48

98— तदैव, 106

99— तदैव, 111

100— तदैव, 129

101— उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 53

102— तदैव, 102

103— तदैव, 47

104— तदैव, 5

105— तदैव, 5

106— दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल

लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1967, पृ0 284

107— तदैव, 285

108— तदैव, 292

109— तदैव, 29

110— तदैव, 46

111— तदैव, 325

112— तदैव, 388

113— तदैव 388

114— मृगावती, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणित प्रकाश, सिविल लाइन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, मई 1968 पृ0 स0 10

115— तदैव, 10

116— तदैव, 14

117— तदैव, 70

118— तदैव, 103

119— तदैव, 203

120— तदैव, 15

121— तदैव, 15

122— तदैव, 114

123— तदैव, 93

124— तदैव, 94

125— तदैव, 96

126— तदैव, 99

127— तदैव, 221

128— मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक—डा शिव गोपाल मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण नवम्बर, 1957, पृ0 स0 55

129— तदैव, 80

130— तदैव, 163

131— तदैव, 163

132— तदैव, 149

133— तदैव, 56

134— तदैव, 68

135— तदैव 69

136— तदैव 57

137— तदैव 68

138— तदैव, 68

139— तदैव, 69

140— उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन.वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संकरण, सं0 2038, पृ0 15

141— तदैव, 69

142— तदैव, 89

143— तदैव, 89

144— तदैव, 91

145— तदैव, 87

146— तदैव, 90

147— तदैव, 91

148— तदैव, 93

149— तदैव, 95

150— तदैव, 95

151— तदैव 94

152— तदैव, 96

153— तदैव, 89

154— तदैव, 99

155— तदैव, 91

156— तदैव, 89

157— तदैव, 91

158— तदैव, 90

159— तदैव, 90

160— तदैव, 45

161— तदैव, 10

162— तदैव, 89

163— तदैव, 89

164— तदैव, 10

165— तदैव, 11

166— तदैव, 89

अध्यायं 11

उपसंहार

विशिष्ट विद्वानों की सम्मतियाँ

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

उपसंहार

"साहित्य धरती का कल्पतरु है। साहित्य के द्वारा ही अज्ञानी, ज्ञानी तथा कायर साहसी बनकर अपना कर्तव्य करने के लिये समुत्सुक हो उठते हैं। साहित्य ही वस्तुतः जीवन का वह अमूल्य अमृत है कि जिसका पान करके मृत व्यक्तियों में भी नवोन्मेष एवं स्फूर्तिमयी आशा का अभिनव संचार हो उठता है। साहित्य जीवन को अगति से मुक्त कराकर गतिकी ओर ले जाने का सत्प्रयास करता है। यही साहित्य हम सबको असत के अन्धकार से छुटकारा दिलाकर सत् के सुप्रकाश की ओर गतिमान करता है। निःसन्देह साहित्य किसी भी सभ्यता अथवा संस्कृति का मेरूदण्ड है। साहित्य के सृजन कर्ता साहित्यकार होते है। उनके ऊपर तत्कालीन समाज का प्रभाव पड़ना अत्यन्त स्वाभाविक है और समाज पर किसी कवि अथवा साहित्यकार के व्यक्तित्व का अमिट प्रभाव पड़ता है। साहित्य और समाज एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित है। उनका चोली दामन का साथ है वे एक दूसरे के पूरक है।" भाषा अमूर्त होती है। वह किसी कवि, विचारक अथवा साहित्यकार के चिन्तन की मुखर अभिव्यक्ति है। यदि भाषा का प्रादुर्भाव नहीं हुआ होता तो हमारा समूचा साहित्य निर्जीव पड़ा रहता। वाणी अथवा भाषा साहित्य के प्राण है। कवि अथवा साहित्यकार इसी के माध्यम से अपने मनोगत भावो की अभिव्यंजना करता है। इसके व्यक्तीकरण के मात्र दो ही साधन है। प्रथम है गद्य तथा द्वितीय पद्य। समूचे विश्व के साहित्य में ये दो विधायें ही प्रमुख हैं।

पैगम्बरी एकेश्वर वाद के विरोध में भारतीय अद्वैतवाद की भाँति परमात्मा और आत्मा की एकता का प्रतिपादन करने के फलस्वरूप मंसूर इत्यादि को मृत्युदण्ड भोगना पड़ा था। अतः सूफी साधकों को यह स्पष्ट हो गया था कि इसलाम से पृथक होकर वे

अपनी पद्धति को स्थिर नहीं रख सकते । डॉ0 सरला शुक्ला का यह कथन संर्वथा उपयुक्त ही प्रतीत होता कि "इतना सभी मानते हैं कि सूफी मतवाद इस्लामी क्रोड में ही फूला फला एवं उसके मूल रूप में सदैव कुरान को ही ग्रहण करने का प्रयास किया।" मुसलमानों के भारत में आगमन के बाद सूफियों द्वारा मसनवी पद्धति के अनुसार नयी रचनाये प्रस्तुत होने लगीं। इस तहर भारतीय प्रेमाख्यानों की रचना शैली में रुपकात्मक वर्णन की अधिकता होने लगी। सूफियों के विचारानुसार लौकिक प्रेम (इश्क मिजाजी) एवं आलौकिक प्रेम (इश्क हक्कीकी) में मूल रूप से कोई अन्तर नहीं है। यदि लौकिक प्रेम शुद्ध एवं वास्तविक है तो उसका अलौकिक प्रेम में परिणत हो जाना कोई विस्मय की बात नहीं हैं। उन्होंने न केवल अभारतीय बल्कि भारतीय प्रेमाख्यानों को भी अपनाया। अतः उनके काव्य में चित्रित प्रेम वर्णनों में विभिन्न प्रकार की बातों का सम्मिश्रण होने लगा। सूफियों ने अपनी रचनाओं की प्रेम कहानियों को कभी–कभी आध्यात्मिक ढंग से व्याख्या करने का भी प्रयास किया जिसकी झलक हमें प्रेम काव्य में देखने को मिलती है। हिन्दी में सर्वप्रथम प्रेम गाथा मौलना दाऊद विरचित 'चांदायन' है। सूफी कवियों ने भारतीय जीवन की परम्परा द्वारा अपनी रचनाओं को प्रभावित रखा है। उन्होंने समयानुसार हिन्दुओ के शास्त्रीय विचारों का परिचय दिया है। अभारतीय कथानकों पर भी भारतीय जीवन एवं परम्परा की अमिट छाप छोड़ी है।

'तसुव्वुफ अथवा सूफीमत' (1945) में श्री चन्द्राबली पाण्डेय की कुछ स्थापनाओं पर यहाँ विचार कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है पाण्डेय जी लिखते है:– "जो जन्म से मुसलमान और कर्म से सूफी हो, उसे ही सूफी माना जाय..............इस प्रकार से हिन्दी के सूफियों में दो वर्ग निकल आये और उनके नाम भी सूफी परम्परा के अनुकूल ही रख दिये गये, 'सालिक', 'आजाद'। 'सालिक– से तात्पर्य उन सूफियों से है तो स्वतंत्र विचार के थे

जो अपने अनुभव के सामने कुरान आदि विधि विधान को नहीं मानते थे। 'आजाद' से तात्पर्य उन सूफियों से है जो इस्लाम के पक्के भक्त थे।

सूफियों में चाहे मौलिक रूप से अथवा कृत्रिम रूप से, कहीं से भी त्याग की एवं उपासना की भावनाये आयी हो, इतना तो निश्चित है कि ये दोनों भावनायें सूफीमत की आधार शिलायें हैं। सूफियों की साधना में प्रेम को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। वे चार प्रकार के प्रेमों की व्याख्या करते हुए प्रायः चतुर्थ प्रकार से ही सम्पूर्ण सूफी काव्यों में प्रेम का आयोजन बताते हैं। चित्रावली में चित्र दर्शन, मधुमालती में दर्शन प्रेम, मृगावती में मृगी के रूप में दर्शन प्रेम तथा चांदायन में भी दर्शन प्रेम का उद्भव दिखाते हैं।

प्रेम प्रस्फुटन मनुष्य या स्त्री जाति के जीवन में समान रूप से एक नवोन्मेष का युग होता है। उसकी उत्पति वय के अनुसार हृदयस्थल में स्वतः होती है, किन्तु उसमें प्रखरता लाने वाले अनेक कारण बन जाते हैं। परन्तु प्रेम की धारा किसी भी व्यवधानों को मार्ग में न तो देखना चाहती है और न उन्हें तोड़कर सीमा का उल्लंघन करना चाहती है। उसमें प्रखरता के साथ संयम रहता है। यही त्याग है। त्याग की भावना प्रेम को नैसर्गिक बना देती है। एक बार प्रेम की उमंग बढ़ी कि उसका उतरना कठिन हो जाता है। चाहे यह प्रेम या प्रेमी जन शुद्ध लौकिक हो चाहे अलौकिक। समान दशाओं से होकर उन्हें गुजरना पड़ता है।

काव्य को अलंकृत करने का भारी भार कवियों के कंधों पर रहता है। उसका उन्हें निर्वाह करना होता है। इसके लिए परम्परागत प्रतीकों, रूपकों, उपमानों एवं छन्दों के प्रयोग करने पड़ते हैं। जिसके फलस्वरूप परम्परा विश्रृंखलित नहीं हो पाती। किन्तु कोई कोई कवि स्वतंत्र प्रकृति का भी अनुसरण कर सकते हैं। परन्तु सूफियों में ऐसे सीमोल्लंघन कम मिलेंगे। कारण स्पष्ट है सूफियों ने काव्यगुणों या उसके अलंकरण की ओर उतना

ध्यान नहीं दिया जितना विचारों की उत्कृष्टता एवं प्रेम की अनुभूतियों को ठूँस-ठूँस कर उसमें भरने की ओर। यही कारण है कि सूफी साहित्य मर्मज्ञ सदैव सूफी काव्य के भावों पर ही ध्यान देते हैं, भाषा या अलंकार पर नहीं। किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि भाषा की सजीवता एवं अलंकरण के आकर्षण इन काव्यों में नहीं हैं। कुतुबन एवं मंझन ने भावों की उच्चता एवं भाषा की प्रांजलता में विशिष्ट योगदान दिया है।

अध्याय 1– विषय प्रवेश के अन्तर्गत (क) काव्य और संस्कृति का सम्बन्ध के अन्तर्गत काव्य की परिभाषा, काव्य का संस्कृति से सम्बन्ध वर्णित है। (ख) काव्य का माध्यम के अन्तर्गत काव्य के शिल्प कौशल भाषा, रस छन्द आदि का उल्लेख किया है तथा (ग) आलोच्य काव्य का संक्षिप्त परिचय के अन्तर्गत अध्येयता ने चांदायन, मृगावती, मधुमालती तथा चित्रावली की कथा वस्तु पर प्रकाश डाला है।

अध्याय 2– वस्त्रालंकारिक शब्दावली (क) नारी–परिधान के अन्तर्गत चीर, पल्लो, सारी, कापर, पटोर, खीरू, तथा लहर पटोर आदि (ख) पुरुष–परिधान के अन्तर्गत क्षीरोदक, कंथा, फांड, बागा आदि (ग) बाल–परिधान झंगा आदि (घ) नारियों के अलंकार के अन्तर्गत काजर, नूपुर, मेहदी, कंठमाला आदि (ड.) पुरुषों के आभूषण के अन्तर्गत कुंडल मुकुट,आदि (च) बालकों के आभूषण तथा (श) शय्यादि से सम्बन्धित वस्त्र के अन्तर्गत विछावन, आछादन, सेज, आदि शब्दों का अध्ययन किया है।

अध्याय 3– खाद्य तथा पेय पदार्थों से सम्बद्ध शब्दावली (क) अनाज और तेलादि के अन्तर्गत अक्षत, अन्न, पूरी, भात आदि (ख) फल, मेवा तथा तरकारी के अन्तर्गत आम, बदाम, छुआरा चिरौंजी आदि (ग) मिष्ठान एवं पकवान के अन्तर्गत गुड़ खांड, फरा भिगोरा आदि (घ) चर्व्य पदार्थ के अन्तर्गत पापड़ पान, आदि (ड.) पेय पदार्थ के अन्तर्गत नीर, पानी, महारस आदि तथा (च) मसाले आदि के अन्तर्गत मिर्च, कपूर, नमक, ईमली आदि

शब्दों का अध्ययन किया है।

अध्याय 4– पात्रादि–वाचक शब्द (क) भोजन बनाने और करने के पात्र (ख) अन्य क्रियाओं से सम्बद्ध पात्र (ग) पात्रों के विविधोपादान।

अध्याय 5– व्यावसायिक शब्दावली (क) कृषि– सम्बन्धी शब्द के अन्तर्गत रहट चलहि आदि (ख) वाणिज्य से सम्बन्धित शब्द के अन्तर्गत महाजन, बनिजारे आदि (ग) औद्योगिक शब्दावली (घ) मुद्रा तथा नगादि के अन्तर्गत रतन मोती, सोना, चाँदी दाम तथा (च) अन्य व्यवसाय– शिक्षण एवं पौरोहित्यादि के अन्तर्गत पत्रा देखना, शिक्षा देना आदि शब्दों का अध्ययन किया है।

अध्याय 6– धार्मिक तथा दार्शनिक शब्द (क) विविध समुदायों तथा साधनाओं से सम्बद्ध शब्दावली के अन्तर्गत तत्वमसी, सत्तारी सम्प्रदाय आदि (ख) विविध संस्कारों एवं कृत्यों आदि से सम्बद्ध शब्दावली के अन्तर्गत जन्म, विवाह, निछावरि, पिण्ड दान आदि (ग) विविध दर्शनों से सम्बन्धित शब्दावली के अन्तर्गत सूफी दर्शन आदि तथा (घ) विविध पर्वों तथा त्योहारों से सम्बद्ध शब्दों के अन्तर्गत मांगरचारा, एकादशी, नवरोज आदि शब्दों का अध्ययन किया है।

अध्याय 7– आरण्यक तथा औपवनिक शब्द के अन्तर्गत अमराई, वन, वनखण्ड आदि (क) वृक्ष एवं वीरुध के अन्तर्गत केदली, लखराउं, तरवर, बिरिख आदि (ख) पुष्प के अन्तर्गत कुमुदिनि, कंवल, कुई आदि तथा (ग) फलादि के अन्तर्गत अंब, अंगूर, कैथा, जामुन आदि शब्दों का अध्येयता ने अध्ययन किया है।

अध्याय 8– कलात्मक शब्दावली के अन्तर्गत निम्न शीर्षक (क) साहित्यिक शब्द– षटभाषा, कोककोक, अक्षर आदि (ख) संगीतात्मक शब्द के अन्तर्गत राग, झूमर, पटताल, तिबारा आदि (ग) चित्र एवं शिल्प से सम्बद्ध शब्द के अन्तर्गत स्वर्णकार, चितेरा,

चित्रकारी, उरेह आदि तथा (घ) वास्तुकला से सम्बन्धित शब्दों के अन्तर्गत नटसार, कुदीगर, थवई आदि शब्दों का अध्ययन किया है।

अध्याय 9– सामाजिक शब्दावली (क) पारिवारिक सम्बन्धों को व्यक्त करने वाली शब्दावली के अन्तर्गत माता–पिता, कुंवर स्त्री प़ति आदि (ख) वर्ण तथा जाति से सम्बद्ध शब्द के अन्तर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य ग्वाल, खंडेलवाल, सोनी, रावत चौहान, बढ़ई आदि (ग) लौकिक रीतियों तथा अन्ध विश्वासों से सम्बद्ध शब्द के अन्तर्गत कंवल वदन, ईश्वर स्तुति आदि तथा (घ) मनोविनोदों से सम्बद्ध शब्दों के अन्तर्गत पखावजी, ब्रंहवैन, सरवैन, तीवरि, खेलहिं, धमार, बजान आदि शब्दों का अध्ययन किया है।

अध्याय 10 राजनीतिक तथा प्रशासनिक शब्दावली (क) राज–दरबार तथा प्रसादादि से सम्बन्धित शब्दो के अन्तर्गत मंदिर, गढ़, भवन आदि (ख) शासन–व्यवस्था के अन्तर्गत गजपति, नरपति, भूपति, हैवरपति, भूखे को भोजन कराना, राजाज्ञा न मानने पर व्यक्ति को बंदी बनाना आदि तथा (ग) संग्राम–शस्त्रास्त्र, परिधान एवं वाहनादि के अन्तर्गत घोड़ा, हाथी, टाटर, चक्र, आदि शब्दों का अध्ययन किया है।

मेरे शोध कार्य की विशिष्ट साहित्यकारों कवियों तथा विद्वानों ने सराहना की है जिसका उल्लेख मैं इस शोध के अन्त में कर रही हूँ।

कुछ विशिष्ट कवि एवं साहित्कारों की शोध ग्रन्थ के सम्बन्ध में सम्मतियाँ–

भारतीय प्रेमाख्यान साहित्य अति प्राचीन है। प्रेम की वज्रधारा मानव हृदय में चिरकाल से प्रभावित होती आ रही हैं जीवन के विविध सोपानों को आप्यायित करने वाली यह स्रोतस्विनी सम्पूर्ण भारतीय वाग्ङ्मय को सरसता से सरावोर किये हुए है। मानव जीवन में उत्थान पतन, उन्नति–अवनति, पाप–पुण्य की विविध दशाओं में प्रेम की सहजता निरंतर बनी रही है। भारतीय ऋषियों, दृष्टाओं के जीवन की कहानियों में भी यत्र–तत्र प्रेम की

मधुर ध्वनि निनादित है। यही कारण है कि चांदायन, मृगावती, मधुमालती और चित्रावली प्रेम काव्यान्तर्गत यह कृतियाँ अपना पृथक स्थान रखती है, उक्त कृतियों को लेकर 'जायसीतर काव्य में सांस्कृतिक शब्दावली का वर्णनात्मक अनुशीलन, का जो शोध कार्य किया है वह वास्तव में प्रशंसनीय एवं सराहनीय है। आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ........।

प्रवीण कुमार सक्सेना 'उजाला'

एम० ए० हिन्दी, एम फिल्

कवि, साहित्यकार एवं आलोचक

सुश्री अन्जुलता

सादर नमस्ते

प्राचीन कवियों—मु० दाऊद, कुतुबन, मंझन एवं उसमान के काव्य में सांस्कृतिक शब्दावली को लेकर आपने जो शोधकार्य किया है वास्तव में वह प्रशंसनीय है। साहित्य के धरातल पर सूफी काव्य परम्परा के अन्तर्गत प्रेम काव्य विशेष स्थान रखते है। इस शोध के लिए आपको हमारी कोटि—कोटि बधाइयाँ स्वीकार हो। कहा गया है साहित्य समाज का दर्पण होता है और हमे इसके माध्यम से उस समय की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा साहित्यिक स्थिति से अवगत करता है जिस समय का साहित्य सृजित है।

अर्चना कुशवाहा

कवयित्री

सेवा में

अन्जुलता जी

सूफी काव्य के अन्तर्गत चांदायन, मृगावती, मधुमालती एवं चित्रावली पर आपने

सांस्कृतिक शब्दावली को लेकर जो शोधकार्य किया है वह हिन्दी साहित्यान्तर्गत एक 'मील का पत्थर' सिद्ध होगा। इस शोध कार्य के लिए आपको हार्दिक बधाई।

ज्ञान बहादुर

एम० ए० हिन्दी, नेट

प्रवक्ता हिन्दी

प० गोविन्द प्रसाद रानी देवी पटेल महाविद्यालय

अरौल कानपुर नगर

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1—दाऊद कृत चांदायन, सम्पादक—माता प्रसाद गुप्त,

2- मृगावती, सम्पादक— माता प्रसाद गुप्त,

3—मंझनकृत मधुमालती, सम्पादक—डा शिव गोपाल मिश्र,

4— उसमान कृत चित्रावली, सं0 जगन्मोहन वर्मा,

5— उसमान कृत चित्रावली, टीका, व्याख्याकार, डा0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी,

6— भारतीय प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा और दाऊद कृत चांदायन, डॉ0 बैकुण्ड राय,

6— सूरसागर शब्दावली, डा0 निर्मला सक्सेना,

7- हिन्दी साहित्य का आलोनात्मक इतिहास डॉ0 राम कुमार वर्मा,

8— रस अलंकार और छन्द, डा0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा,

9— काव्य के रूप, आत्मा राम एंड संस

10— सूफीमत साधना और साहित्य राम पूजन तिवारी

11— सूफीमत कहैन्या लाल

12 सूफी काव्य संग्रह परशुराम चतुर्वेदी

13— चित्रावली गीतारानी शर्मा

14— चांदायन बैकुण्ठराय

15— मृगावती परमेश्वरी लाल गुप्ता

16— चित्रावली डॉ0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी

17— काव्य प्रदीप राम बहोरी शुक्ल

18— दि स्फिरिट आफ इस्लाम अमीर अली

19— अन्फ्लुएंस आफ इस्लाम आन इण्डिन कल्चर तारा चन्द्र

20– नाथ सम्प्रदाय — हजारी प्रसाद द्विवेदी

21– हिन्दी साहित्य का इतिहास — डा0 नगेन्द्र

22– हिन्दी साहित्य का इतिहास — आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

23– आधुनिक आलोचना और साहित्य — सीता राम जायसवाल

24– हिन्दी काव्य शास्त्र — शान्ति लाल बालेन्दु

25– हिन्दू संस्कार — डॉ0 राजवली पाण्डेय

26– भारतीय संस्कृति — सत्यकेतु विद्यालंकार

28– साहित्य सिद्धान्त — डा0 राज अवध द्विवेदी

29– संस्कृत शब्द कोश — शिवराम आप्टे

30– भार्गव हिन्दी शब्द कोश — प0 रामचन्द्र पाठक

31– हिन्दी शब्द कल्पद्रुम — राम नरेश त्रिपाठी

32– हिन्दी शब्द कोश — आचार्य रामचन्द्र वर्मा

33– हिन्दी व्याकरण — सैमुएल हेनरी कैलाग

34– पर्यायवाची शब्द कोश — भोला नाथ तिवारी